आग और शोले

परशुराम शर्मा

आग सीरीज की आख़िरी किश्त

आग और शोले

जिस समय राजेश को रोका गया, उसे अनुभव हुआ जैसे उसके नथुनों में कोई तीव्र गंध घुसी जा रही है। पहली ही साँस में उसे आभास मिल गया था कि वह कोई ज़हरीली गैस है। कुछ देर तक वह उसी प्रकार खड़ा रहा। सहारा देकर ले जाने वाले छोड़ चुके थे। उसने दोनों हाथों से पट्टी खोल डाली।

उस समय वह जैसे अँधेरे गार में खड़ा था।

अँधेरा इतना अधिक था कि हाथ को हाथ भी सुझाई नहीं दे रहा था।

"जनपद!" उसने धीमे स्वर में पुकारा। जनपद की ओर से कोई भी जवाब नहीं मिला।

उसका दिमाग उस समय तेजी के साथ कार्य कर रहा था। कुछ मिनट बाद जब उस स्थान पर प्रकाश हुआ तो राजेश बेहोश स्थिति में फर्श पर औंधे मुँह पड़ा था। प्रकाश में उसका शरीर पूरी तरह से नहा गया था।

वह एक गोलाकार कमरा था और कमरे के फर्श तथा दीवारों पर धूल की परतें चढ़ी थीं। दीवारों पर जगह-जगह जंगली घास उग आईं थी तथा दरारों में कुछ घोंसले बने हुए थे, जो शायद चमगादड़ और अबाबीलों के थे। फर्श पर उनकी बीट फैली हुई थी।

प्रकाश छत में उत्पन्न होने वाले रिक्त स्थान से फूट रहा था। कुछ क्षण तक वह प्रकाश उसी प्रकार गोलाकार कमरे में चकराता रहा। रौशनी के कारण दो एक अबाबील और चमगादड़ों के पंख फड़फड़ाये। उसके ठीक एक मिनट बाद घरघराहट की आवाज़ के साथ सामने की गोल दीवार में दरार उत्पन्न हुई। दरार धीरे-धीरे फैल कर चौड़ी हो गयी। अब उसमें इतना बड़ा स्थान बन गया था कि एक आदमी सरलता से उसको पार कर सके।

दरार से लगातार तीन नकाबपोश बाहर निकले और तीनों के हाथों में टॉमीगन थी, जिनकी नाल राजेश की तरफ तनी हुई थी। उन तीनों ने एक दायरा सा बनाया और राजेश को घेर कर खड़े हो गये।

कमरे में रहस्यमय स्वर गूँजा।

"इसे उठाकर अंदर वाले कमरे में पहुँचा दो। अब यह पूरे छत्तीस घंटे के लिये मुर्दा बन गया है।"

उनमें से दो ने झुक कर राजेश को उठाया और तीसरा टॉमीगन ताने खड़ा रहा। वे राजेश को किसी मुर्दा शरीर के समान उठाते हुए दरार में प्रविष्ट हो गये और पीछे तीसरा नकाबपोश भी उसी में प्रविष्ट हो गया।

कमरे में पुनः गोपनीय अँधेरा छा गया।

□□□

उल्लू की कर्कश ध्वनि देने वाला कैप्टन हमीद था। दूसरी तरफ से राजेश ने अपने आगमन की सूचना दे दी थी। ठीक दस बजकर दो मिनट पर हमीद ने अपना स्थान छोड़ दिया और झाड़ियों के बीच से सरकता हुआ खुले आकाश के नीचे आ गया।

वह उसी खंडहर की तरफ बढ़ने लगा, जहाँ प्रकाश तीन बार जल कर बुझ गया था।

खंडहर के करीब पहुँचते ही उसे पेट के बल लेट जाना पड़ा। इस वक्त वह पथरीली चट्टान पर किसी छिपकली के समान चिपका हुआ नीचे की तरफ झाँक रहा था। टॉर्च की मद्धिम रौशनी में उसने दो सायों को खंडहर की एक बड़ी शिला के पास खड़ा पाया।

टॉर्च का प्रकाश दाँयें बाँयें घूम कर बुझ गया।

हमीद उसी प्रकार साँस रोककर लेटा रहा। उसकी आँखें अंधकार में देखने का अभ्यास कर रही थीं। कुछ देर तक हल्की आहट नीचे उत्पन्न होती रही और उसके बाद वही सन्नाटा छा गया। हमीद तेजी के साथ उसी तरफ रेंग गया जहाँ खंडहर तक पहुँचने का मार्ग था। अपनी तरफ से वह कोई आहट उत्पन्न नहीं होने देना चाह रहा था और उसे अपने इस प्रयास में काफी सावधानी से काम लेना पड़ रहा था।

चाँदनी रात होने के कारण पत्थर की दो सीढ़ियाँ तो साफ नज़र आ रही थीं किन्तु नीचे वाली सीढ़ियाँ अँधेरे में खो गयीं थीं। हमीद ने सीढ़ियों के निकट रुककर आस-पास का निरीक्षण किया। एक बार उसने छोटा सा पत्थर उठाकर खंडहर में फेंक दिया।

पत्थर फेंकने से जब किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं हुई तब वह खुद भी नीचे उतरने लगा।

खंडहर तक पहुँचने में उसे किसी प्रकार के खतरे का सामना नहीं करना पड़ा और वह हाथों से टटोलता हुआ उसी दिशा में अग्रसर हुआ, जहाँ दोनों साये गायब हो गये थे। अपने अनुमान के अनुसार वह ठीक उस स्थान पर रुकगया।

उसने शिला को टटोला।

शिला अपने स्थान पर जमी थी।

हमीद ने सोचा- 'निश्चित रूप से वहाँ कोई गुप्त द्वार है। हो सकता है कि शिला को हटाने से रास्ता मिल जाये। उसने शिला के किनारे को टटोलना शुरू किया। शिला के चारो ओर केवल उँगली भर की रेखा थी।'

अभी वह उसे हटाने की योजना सोच ही रहा था कि उसके कान शिकारी कुत्तों के समान सजग हो गये।

उसने शिला से कान सटा दिया। उसका संदेह गलत नहीं था। दूसरी तरफ हल्की सी सरसराहट उत्पन्न हो रही थी, जो निरंतर शिला के निकट आती जा रही थी।

हमीद तुरंत उसे छोड़कर हट गया।

शिला के बराबर में ही वह दम साधकर खड़ा हो गया।

उसके हाथ में उस समय टॉमीगन आ चुका था।

कुछ क्षण उसी पोज़ीशन में बीते।

हमीद ने प्रकाश में कुछ सायों को दरार से दाँईं तरफ घूमते देखा। राजेश की स्थिति भी

उससे छिपी न थी।

कदाचित आँखों पर पट्टी बाँधकर उसे कहीं ले जाया जा रहा था। दाँईं तरफ घूमने के बाद एक साये ने रुककर बेढंगी दीवार टटोली। शायद वहाँ भी कोई गुप्त मार्ग था। वह इस वक्त दीवार में बने आदमकद दरवाज़े में दाख़िल हो रहे थे।

हमीद सिर्फ इतना ही देख पाया। उसके बाद एकदम अँधेरा छा गया।

वह उसी तरफ बढ़ने लगा। दरार से अनुमान का सहारा लिया। लेकिन अब आदमकद दरवाज़ा कहीं नज़र नहीं आ रहा था। कुछ दूर चलने के उपरान्त ही मार्ग बंद मिला। अब दीवार को टटोलता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसने दीवार को ठोक बजाकर परखा। उसके हाथ पूरी तरह से निराशा ही आयी।

कुछ देर सुस्ताने के बाद उसने अपनी जेब से पेन्सिल टॉर्च निकाली।

टॉर्च को दोनों हथेलियों से ढांप कर उसने प्रकाश रेखा बेढंगी दीवार पर डाली। टॉर्च का प्रकाश घूमता हुआ एक छोटे से स्याह गड्ढे में रुक गया। हमीद ने तुरन्त टॉर्च बुझाकर अपना हाथ उसमें डाला। उसका हाथ किसी गिलगिली वस्तु पर फिसलने लगा।

कुछ सोचकर हमीद ने उसे उँगलियों से दबा दिया।

दीवार के मध्य दरार बनी, जो कुछ क्षण में चौड़ी होकर आदमकद द्वार में बदल गयी। हमीद तुरंत उसमें समा गया। दूसरी तरफ पहुँचते ही वह कुछ क्षण के लिये रुका।

वह दबे कदमों से, हाथों से दीवार टटोलता हुआ आगे बढ़ा। शायद वह कोई सुरंग थी।

अंधकारपूर्ण घुटन के बीच उसका दिल तेजी के साथ धड़क उठा।

कुछ देर उसी प्रकार चलने के बाद उसे एहसास हुआ जैसे वह सीलन युक्त भाग से गुजर रहा है।

लगभग पाँच कदम चलने के बाद वह चौंक पड़ा। सुरंग की छत से पानी की बूँदें टपकनी शुरू हो गयी थी। उसने रूककर जेब से टॉर्च निकाली। जैसे ही टॉर्च जली उसके कानों में किसी का रोबीला स्वर गूँज उठा।

“हाल्ट! हू आर यू?”

इस आवाज़ के साथ तीव्र प्रकाश उसकी आँखों पर पड़ा, जिससे वह पूरी तरह चौंधिया गया। हालाँकि उसके हाथों में टॉमीगन थी। फिर भी उसने फायर करना अनुचित समझा।

अचानक उसके दिमाग ने एक युक्ति सुझाई और वह लापरवाही के साथ खड़ा होकर प्रकाश की तरफ घूरने लगा।

“क्या बात है?”, उसने भर्राये स्वर में पूछा, “यह टॉर्च बुझाओ। मेरी आँखें चौंधिया रही हैं।”

कुछ पल तक सामने से फेंका जाने वाला प्रकाश उस पर स्थिर रहा और फिर प्रकाश हिलता हुआ उसके समीप से हटने लगा। पदचापों की आवाज़ एक से अधिक व्यक्तियों की थी। हमीद अब भी लापरवाह खड़ा था।

“नम्बर फाइव। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”

हमीद ने अपने सामने दो उसी प्रकार के इंसानों को खड़ा पाया। उनके सीने पर भी

सुनहरे उल्लू की तस्वीर थी और नीचे नम्बर भी अंकित था। दोनों के हाथों में टॉमीगनें थीं।

"यहाँ कोई व्यक्ति दाख़िल नहीं हुआ।", हमीद ने घबराये हुए लहजे में कहा, "मैंने सुराख में एक आदमी को प्रविष्ट होते देखा था। लेकिन वह बाहर कहीं नहीं है। जरूर इसी में दाख़िल हुआ है।"

"तुम्हें भ्रम है। हमारी निगाहों से बचकर यहाँ कोई नहीं आ सकता। तुम्हें इस प्रकार अपनी ड्यूटी छोड़कर नहीं आना चाहिये था। यदि यहाँ कोई आ भी जाता है तो वह जीवन भर इन सुरंगों से नहीं निकल सकता था।"

"मुझे भ्रम नहीं हो सकता। हमे यहाँ उसे खोजना चाहिये।" हमीद ने दृढ़ स्वर में कहा।

अचानक वह व्यक्ति शांत हो गया। उसने अपने साथी की ओर देखा और उसके बाद उसके मुँह से जो भाषा निकली वह हमीद के पल्ले नहीं पड़ी। भाषा क्या थी शेर चीतों की सी गुर्राहट थी।

न जाने क्यों हमीद का हाथ टॉमीगन पर सख्ती के साथ कस गया वह उन दोनों के हाव-भाव समझने का प्रयास कर रहा था।

"हमारे साथ आओ। हो सकता है वह आदमी इसी तरफ निकल गया हो।" उसने उस दिशा में संकेत किया जिस ओर से दोनों आये थे। न जाने क्यों हमीद को खटका हो गया। कुछ देर पहले वह दोनों यह मानने के लिये तैयार ही नहीं थे और अब उनका बदला रुख संदेह का कारण बन रहा था।

उसने हमीद को बढ़ने का संकेत किया।

शक्तिशाली टॉर्च के प्रकाश में अब सुरंग साफ़ नज़र आने लगी थी। आगे चलकर उसमें अनेक छोटी बड़ी सुरंगे बनी नज़र आ रही थीं, जिनका मुँह दरवाज़े की तरफ बड़ी सुरंग में दिखाई दे रहा था। कुछ दूरी पर पाँवों तक को डुबाने वाला जल सुरंग में एकत्रित हो गया था।

"चलो!" उस व्यक्ति ने कहा।

लेकिन दूसरे ही क्षण उस व्यक्ति के मुँह से कराहट निकल गयी। वह चीखकर उलट गया। हमीद का करारा घूँसा उसकी कनपटी पर पड़ा था। दूसरे ने सँभलकर उस पर छलाँग लगा दी। हमीद फुर्ती के साथ उसे भी झुक कर चकमा दे गया। उसके बाद उसने टॉमीगन का दस्ता पहले वाले के सिर पर दे मारा।

वह एक ही चोट में निर्जीव हो चला।

हमिद ने उसे छोड़कर दूसरे पर छलाँग लगा दी, जो उस समय उठने का प्रयास कर रहा था। हमीद ने उसे उठने नहीं दिया। उसके पैरों से मजबूती के साथ कमर को बाँध दिया था। बांया हाथ उसके मुँह पर रखा और दाँयें से टॉमीगन का दस्ता उसके सिर से टकराया।

उसने तड़प कर निकल भागना चाहा। किंतु हमीद के बंधन से निकल भागना कोई सरल काम नहीं था।

इस समय हमीद को हर तरफ से खतरा घूमता नज़र आ रहा था। राजेश की भी स्थिति खतरे में थी। उसने वहाँ अपना समय नहीं गँवाया। जेब से पतली डोरी निकाल कर उन दोनों के हाथ एक साथ पीछे की तरफ आपस में सटा कर बाँध दिये।

अब वह पंजों के बल दौड़ता हुआ उस तरफ बड़ा जहाँ जल सीढ़ियों को भिगोने लगा।

जहाँ दीवार उसका मार्ग रोकती वहीं वह दूसरी दिशा में मुड़ जाता।

कुछ देर में ही उसका शरीर बुरी तरह थक गया। उसे लगा जैसे वह किसी भूल-भुलैया में फँस गया था।

क्या वह सचमुच महल के भूल-भुलैया भाग में फँस गया है? उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहाँ जाये? अब उसे यह भी याद नहीं रहा था कि वह कौन से मार्ग से सुरंग में प्रविष्ट हुआ था।

अँधेरे ने उसे भटकने के लिये छोड़ दिया था।

हमीद के लिये वह परिस्थिति विकट थी। वह दीवार से लगा हाँफता रहा। अभी उसे इस प्रकार खड़े कुछ ही मिनट हुए थे कि यह आश्चर्य से उछल पड़ा। उसे अपने पैरों पर सरसराहट का अनुभव हुआ था। तत्काल ही आभास हुआ जैसे सरसराहट में बर्फ के समान ठंडक है। हमीद ने तुरंत टॉर्च जलाई। सामने ही पानी का स्रोत दीवार से फूट पड़ा था।

जिस स्थान से पानी की धार फूटी थी, उसके ठीक ऊपर एक उल्लू बैठा नज़र आया, जो आग्नेय नेत्रों से उसे घूर रहा था। हमीद के पूरे शरीर में सिहरन व्याप्त गयी।

सबसे भयानक उसके नेत्र थे, जो अंगार के समान दहक रहे थे।

हमीद के पूरे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गयी।

कुछ देर तक हमीद उसी प्रकार कर्त्तव्यविमूढ़-सा खड़ा रहा। अचानक उसने अपने मन को स्थिर किया और टॉमीगन उठाई। वह उल्लू का लक्ष्य लेकर फायर करने ही जा रहा था।

तभी उल्लू अपना स्थान छोड़कर खूँखार आदमखोर की तरह उसकी तरफ झपटा।

हमीद के हाथ से टॉमीगन और टॉर्च एक साथ छूट गयी। उल्लू के पंजे ने उसकी कलाई छील दी थी। ऐसी स्थिति में उसके मुँह से चीख निकल गयी। कहीं उल्लू दोबारा आक्रमण न कर दे। इसलिये वह तुरंत जमीन सूँघने लगा।

घबराहट में वह यह भी भूल गया था कि पानी निरंतर बढ़ता जा रहा था।

उसके नाक मुँह में पानी धँसता चला गया। पूरे वस्त्र एकदम गीले हो गये। हमीद के घुटनों में चोट भी आ गयी। उसने दोनों हाथों से फिसलती सी जमीन को टटोला और उठने का प्रयास किया।

तभी सुरंग में भयानक सर्द अट्टहास गुंजायमान हुआ।

हमीद का कलेजा उस आवाज के साथ बैठने लगा था। जैसे वह मौत के निर्जीव अट्टहास थे। कहकहे लगातार तेज होते जा रहे थे। अब हमीद ने हथेलियों से सख्ती के साथ अपने कानों को बंद कर लिया।

पानी घुटनों तक भर आया था।

अँधेरा! पानी का वेग!! भयानक अट्टहास!!!

लगता जैसे नर्क द्वार है वह। उससे जिंदगी बहुत दूर हो चुकी है और मौत गले लिपट जाना चाहती हैं। वह अपने होश-ओ-हवास खोता जा रहा था।

यह ठीक है कि वह जासूस है, जिसका जीवन हर समय तलवार की धार पर होता है,

किन्तु आखिर था तो वह भी इंसान ही, इंसान जो कितना भी मजबूत कलेजा क्यों न रखता हो, मौत की कल्पना मात्र से ही काँप उठता है।

वह सामने खड़ी मौत से हर क्षण बचने की कोशिश करता है।

उसे विनोद की याद सता रही थी।

विनोद, जो एक लम्बे अरसे से उससे जुदा हो गया था। अब तक हमीद उसकी सूरत देखने के लिये तरस गया था। ज़मीन आसमान एक करने के बाद वह विनोद को नहीं पा सका।

उसे याद आई वह रात।

जब इस केस की शुरुआत हुई थी।

जब विनोद पर पागलपन सवार हो गया था। उसने अपने पागलपन का हवाला देकर कहा था-

“मैं इस समय सचमुच गंभीर हूँ हमीद! एक लम्बे अरसे बाद आज मैं सोच रहा हूँ... मैंने अपना यह जीवन नीरसता के साथ क्यों बिताया? न जाने कितनी सुंदर लड़कियाँ मेरी एक साँस के लिये तरसती हैं। यह क्या ज़िन्दगी है हमीद? लगता है अब कर्नल विनोद का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। वह अपनी अराधना में सफल हो गई...जीवन के इस छोर पर मैं बाज़ी हार गया हूँ.... अब यह नीरसता की दीवारें टूट जाएंगी, आज मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुम्हें विनोद से हटकर कहीं और अपना संसार बसाना होगा।”

और...और...और।

तूफानी रात का शिकार क्या वह रहस्यमय महल यही था। जिसमें उस रात विचित्र ढंग से उन्हें पहुँचाया गया था। विनोद के कथानुसार यह रात आखिरी थी जिसमें उन दोनों को एक साथ शिकार खेलते बिताना था।

तब क्या वह कठोर सत्य था? क्या विनोद दूसरी दुनिया में उसका इंतजार कर रहा है? मीनाक्षी कौन थी जिसे विनोद प्यार कर बैठा था? खातून की आत्मा कौन थी? उसे नियाग्रा नाईट की रात सभी ने उल्लू के रूप में देखा था।

उल्लू..हाँ , वह भयानक उल्लू यही हो सकता है जो कुछ देर पहले उस पर हमला कर चुका है। तब क्या यह कहकहे खातून की आत्मा के हैं? क्या वह भी खातून की आत्मा का शिकार बनता जा रहा है।

पानी कमर तक आ गया था।

अंधकार में कनपटियाँ दबाये हमीद सोचता जा रहा था। हमेशा की तरह आज विनोद उसे ऐसी परस्थिति से बचाने न आया। हमीद उसे फरिश्ता समझता था इसलिये वह बिना सोचे समझे मौत के मुँह में कूद जाता था।

लेकिन इस बार विनोद शायद उससे दूर पहुँच चुका था।

बहुत दूर.. जहाँ हजारों आत्मायें चैन से सो रही हैं।

“नहीं...नहीं.. नहीं...?” हमीद कंठ फाड़कर चीखा... “ऐसा नहीं हो सकता हरगिज नहीं हो सकता... वह ताकतें आजतक पैदा नहीं हुई जो विनोद को समाप्त कर सकें।”

उसकी स्थिति पागलों जैसी हो चली थी।

आँखें बाहर को उबली पड़ रही थीं। उसके दोनों हाथ बालों को पकड़कर झिंझोड़ने लगे... कल्पना घूम रही थी। मौत के नंगे रूप ने उसके दिमाग को भी उलट दिया था..।

टॉर्च छूट चुकी थी।

टॉमीगन का कुछ पता नहीं।

पानी शरीर को समेटता जा रहा है... धीरे..धीरे।

क्या करे वह... कहाँ जाये?.. क्या जेब से चाकू निकाल कर अपना सीना चाक कर डाले..। उसका गला सूखता जा रहा था जैसे शरीर से कोई प्यास आकर उसके होंठों को सुखा रही है।

सामने जल भरा है फिर भी प्यास से उसका दम उखड़ रहा है।

दुनिया में शायद कोई भी कहावत गलत नहीं बनी है। कभी-कभी घर में गंगा बहने पर भी इंसान प्यासा दम तोड़ देता है। ठीक वैसे ही स्थिति उसके सामने थी।

और सहसा उसके होंठ गीले हो गये। जैसे पानी से उसकी प्यास देखी न गयीं और वह स्वयं ही उसके होठों का चुम्बन लेने के लिये आतुर हो उठा।

हमीद सचमुच गटागट पानी पीता चला गया। लेकिन तुरन्त ही उसकी कल्पनाओं का डर झनझनाता हुआ मस्तिष्क से दूर निकल भागा। उसे भयंकर स्थिति का आभास हुआ और जैसे किसी ने सोते से झिंझोड़ कर जगा दिया।

कहकहे अब भी गूँज रहे थे।

मैं संघर्ष करूँगा, तुम मुझे मौत का उपहार दो और मरने से पूर्व आखिरी हिचकी तक मैं संघर्ष करूँगा खातून की आत्मा! पानी की सतह पर हमीद का चीखता स्वर गूँजा।

उसने पानी में तैरना शुरू किया।

तैरते वक्त उसने सिर्फ एक दिशा को पकड़ा। वह दिशा विपरीत थी। वह इस समय पानी के बहाव की तरफ तैर रहा था। कुछ दूर तैरने पर ही उसे ठोस दीवार से टकराना पड़ा। अब हमीद उसी दीवार को टटोलता हुआ पानी में तैरता जा रहा था।

उसे अजीब सी घुटन अनुभव हुई।

किन्तु अब उसने अंतिम हिचकी तक संघर्ष करने की ठान ली थी।

दीवार का सहारा पाकर वह तैरता रहा। अपने अनुभव के अनुसार वह पानी के बहाव पर तैर रहा था लेकिन कुछ ही देर में उसे महसूस हुआ जैसे पानी का बहाव हर तरफ है। दीवारों से टकरा कर उसका बहाव बदल रहा है।

न जाने वह कहाँ बढ़ रहा था।

धीरे-धीरे पानी सुरंग में भरता रहा।

उसका जिस्म ऊपर उठता जा रहा था और जब उसका बदन ऊपरी भाग से टकराया तो उसकी आशायें और भी डूब गईं। क्षण प्रतिक्षण स्थिति भयानक होती जा रही थी। उसकी नाक में पानी भरने लगा। साँसों में रुकावट उत्पन्न होने लगी

हाथ पाँव सुन्न पड़ते जा रहे थे।

दिमाग दर्द से फटने को था।

उसने एक बार खुदा को याद किया और पानी में डुबकी लगा गया। इस बार उसने दम साध लिया था। इतनी प्रैक्टिस तो उसे थी ही कि वह कुछ समय तक पानी के भीतर दम साधे रह सकता था। एकदम सुरंग की तह को छूते ही वह पुनः एक दिशा में बढ़ने लगा।

वास्तव में उसने तब तक संघर्ष किया जब तक उसके शरीर में शक्ति रही।

और धीरे-धीरे उसके मस्तिष्क में भी अँधेरा छा गया।

वह चेतना शून्य होने से पूर्व एक बार कराहा था।

पानी उसे बुरी तरह अपने गर्भ में इधर-उधर ढकेलता रहा। और उसका शरीर कभी ऊपर और कभी नीचे डूबता रहा लेकिन अब वह इस खेल का विरोध नहीं कर पा रहा था क्योंकि वह बेहोश हो चुका था।

□□□

न जाने कैसे रंजीत को नींद ने धर दबोचा। वह कार की अगली सीट पर बैठे-बैठे ऊँघ कर लुढ़क गया था। और जब उसकी आँखें खुली तो वह नर्म बिस्तर पर लेटा था। कमरे में मद्धिम नीला प्रकाश जल रहा था।

सामने खुला दरवाज़ा था। जिसमें नीले रंग का पर्दा झूल रहा था।

उसके अलावा कमरे में कोई अन्य प्राणी मौजूद नहीं था।

रंजीत को पिछली सभी बातें धीरे-धीरे याद आती जा रही थी। किस प्रकार वह कार का पीछा करता हुआ मकान तक पहुँचा। मकान में एक विचित्र घटना घटी और फिर एक युवती की रक्षा के लिये उसके हाथों एक कत्ल हो गया। कत्ल करने के बादअनजाने में ही रीना के करीब आ गया था। जिसके बाद वह रीना के साथ मकान से बाहर निकला था।

कार में अचानक उसे नींद आ गयी।

“नींद” वह बुदबुदाया और फिर चौंक कर बिस्तर पर बैठ गया। अब वह कहाँ आ गया है? क्या वह किसी प्रकार की बेहोशी थी? उसे रीना इस समय रहस्यमयी जान पड़ी। दिमाग पूरी तरह चैतन्य हो गया था। न जाने क्यों उसे एहसास हुआ जैसे वह पुनः किसी खतरे में फँस गया है।

तुरन्त ही उसने अपनी जेबें टटोल डालीं। यह जानकर उसे संतोष हुआ कि उसकी तलाशी नहीं ली गयी। रिवॉल्वर जेब में मौजूद था। जेब में हाथ डालता हुआ वह बिस्तर से उतर गया। अब उसने दबे कदम दरवाज़े की तरफ बढ़ना शुरू किया।

तभी दरवाजे का पर्दा काँप कर हिला।

रंजीत एकदम ठिठक कर रुक गया। उसने फुर्ती के साथ जेब से रिवॉल्वर निकाला और दरवाज़े की आड़ ले गया। आने वाले को देखते ही उसने रिवॉल्वर जेब में रख लिया। रीना कमरे में प्रविष्ट हुई थी। उसने एक बार चौंक कर खाली बिस्तर को देखा।

“घबराओ नहीं... मैं यही हूँ।” इतना कहकर रंजीत उसके सामने आ खड़ा हुआ।

“ओह तुम्हें होश आ गया है।”

“इसका मतलब मेरा संदेह ठीक निकला।”

"कैसा संदेह?"
"यही कि मुझ पर नींद नहीं बल्कि बेहोशी छा गयी थी।"
"मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगी रंजीत... इस वक्त मैं तुम्हें लेने आई हूँ। मादाम तक पहुँचने के लिये आवश्यक था कि तुम्हें बेहोश किया जाये अन्यथा वह नाराज़ हो जातीं।"
"यह मादाम कौन है?"
"एक ऐसी स्त्री, जो हम जैसे विवश प्राणियों के लिये देवी है। आज तक न जाने कितने इंसानों को उसने जीने का तरीका सिखाया। कुछ ही दिन पहले उसका संदेश मेरे पास आया था कि मैं उससे मिलूँ लेकिन उस वक्त मैं उस राक्षस के चंगुल में फँसी थी। अगर मैं मादाम कि बात मान लेती तो वह मुझे जान से मार देता। अब मैं यही हूँ... तुमने मुझ पर बहुत बड़ा अहसान किया है।"
"मुझे उलझन अनुभव हो रही है। तुम्हारी बातें कुछ समझ में नहीं आ रही हैं।"
"धीरे धीरे सब समझ जाओगे। इस वक्त मेरे पास इतना समय नहीं है कि तुम्हें अपने जीवन की लम्बी कहानी सुनाऊँ। देखो मादाम बहुत अच्छी औरत है। वह काफी शक्तिवान भी है। वह तुम्हें जो काम बतायें उसे सहर्ष स्वीकार कर लेना। हमारी जिंदगी में फिर से बहारें खिल जाएंगी। मुझे मालूम है तुम भी इस बेरहम जमाने के सताये हुए हो। जमाने से टक्कर लेना बहुत कठिन है रंजीत? लेकिन मादाम का साथ हमारे लिये नया मार्ग बनाएगा।"
"रीना" रंजीत गंभीर स्वर में बोला "सच तो यह है कि मुझे तुम पर भी संदेह हो गया है।"
"ऐसी स्थिति में इंसान अपने मित्र को भी पहचानने की भूल कर जाता है। ठीक है रंजीत.. अगर तुम्हें मुझ पर संदेह हो तो मैं अभी तुम्हें इस जगह से बाहर सड़क पर पहुँचा दूँगी। लेकिन उस समय मुझे दुःख होगा जब तुम्हें पुलिस कातिल करार करके क़ानून के मजबूत शिकंजों में जकड़ देगी। अब तक तुम्हारी तलाश सिर्फ वीरानगढ़ में ही नहीं, बल्कि जलालाबाद, मानगढ़ और राजधानी में भी की जा रही है। वीरानगढ़ के चप्पे-चप्पे में पुलिस के कुत्ते फैले हुए हैं।"
रंजीत चौंक पड़ा।
वह तो भूल ही गया था उसने क़त्ल भी किया है। मगर पुलिस को कैसे मालूम हुआ कि कातिल कौन है? बिजली की तरह वह विचार उसके दिमाग में कौंध गया।
"पुलिस को यह कैसे मालूम हुआ कि कत्ल मैंने किया है?" उसने पूछा। तुम शायद किसी कार द्वारा उस मकान तक आये थे। तुमने उसकी कार का पीछा किया था।
"किसकी कार का... वह तो तुम्हारी कार थी।"
"तुम्हें ग़लतफ़हमी हुई। यह कार उसी व्यक्ति की थी?"
"लेकिन वह तुम्हारे मकान में।"
"मेरे मकान में तो वह अक्सर आता रहता है... हो सकता है उस समय भी आकर वापिस चला गया होगा? मैं सो रही थी इसलिये मुझे इसका ज्ञान नहीं है। मगर तुम उसका पीछा

क्यों कर रहे थे?

"मेरा संदेह था कि वह प्रिंस मनोहर है।"

"प्रिंस मनोहर... क्या वही मनोहर तो नहीं जो रहस्यमय ढंग से राजा साहब के पास आ गया था।"

"ठीक पहचाना... मगर छोड़ो यह तो मैं भी नहीं जानता हूँ कि उससे मेरी क्या शत्रुता थी। गलती से मैं दूसरी कार का पीछा कर बैठा।"

"और यही पीछा तुम्हारे लिये हानिकारक साबित हुआ। तुम जिस कार से वहाँ तक पहुँचे थे उसके चालक को रिवॉल्वर से विवश किया गया था।"

"हाँ, मगर तुम्हें यह सब कैसे मालूम।"

"बच्चे-बच्चे को मालूम हो चुका है रंजीत? उस कार चालक ने पार्टी में पहुँचते ही सारी बात कह डाली और तुम्हारा हूलिया भी बताया। यहाँ पहले ही तुम्हारी तलाश जारी थी और तब पुलिस उस मकान तक भी पहुँच गई, तब वहाँ कत्ल हो चुका था। तुम्हारी तस्वीर भी उन लोगों को माया नाम की लड़की से बरामद हो गयी। आज समाचार पत्रों में तुम्हारा फोटो छपा है। यकीन न हो तो यह देखो।"

इतना कहकर रीना ने उसी कमरे में रखी मेज की दराज से डेली न्यूज़ पेपर निकाला। शायद रंजीत काफी समय तक बेहोश रहा क्योंकि पेपर की तारीख बदल चुकी थी और इस समय रात्रि का समय था। मुख्य पृष्ठ पर नज़र पड़ते ही रंजीत बौखला गया... उसकी तस्वीर छपी थी और साथ ही पूरा समाचार भी मौजूद था। पुलिस बड़ी सरगमी से रंजीत नामक व्यक्ति को तलाश कर रही है। प्रिंस मनोहर भी लापता है। और पुलिस को संदेह है कि मनोहर के लापता होने में भी रंजीत का हाथ है।

"लेकिन उनके पास इस बात का क्या प्रमाण है कि क़त्ल मैंने किया?"

"प्रमाण जुटाना उनके लिये बड़ी बात नहीं रंजीत। वह पिस्तौल भी तो वहीं छूट गया है और फिर फिंगर प्रिंट का युग है। तुम्हारी उँगलियों के चिन्ह पिस्तौल पर भी हैं।"

रंजीत के माथे पर बल पड़ गये।

इस समय उसे कुछ भी सुझाई नहीं दे रहा था।

"अब भी तुम चाहो तो मैं तुम्हें सड़क तक छोड़ आऊँगी?" रीना ने रुंधे स्वर में कहा- "मैं तुम्हें पाकर खोना नहीं चाहती थी। हम कदम से कदम मिलाकर चलेंगे। अपने प्रतिद्वंदियों से प्रतिशोध लेंगे। मुझे भी बहुत से लोगों को सबक देना है। यदि तुम क़ानून के चंगुल में फँस गये तो कुछ भी न कर पाओगे...ज़िन्दगी से बहुत दूर चले जाओगे। रंजीत जिन लोगों ने तुम्हें यह सब कुछ करने के लिये विवश किया वह तुम्हारी हालत पर कहकहे लगायेंगे। जीवन भर तुम जेल की दीवारों से नहीं निकल सकोगे।"

रंजीत के जिस्म में रीना का एक-एक शब्द बैठता जा रहा था। उसे लगा जैसे सचमुच फाँसी का फंदा उसके गले में झूल रहा है। वह अपराधी है, मुजरिम है, कातिल है।

लेकिन अब तो वैसे भी उसका जीवन बेकार हो चुका था।

नहीं वह अपने को क़ानून के हवाले नहीं करेगा... अपराध की पहली सीढ़ी वह पकड़

चुका है.. और इसके छिपाने के लिये उसे और भी अपराध करने पड़ेंगे.... वह अपने जीवन को दूसरे साँचे में ढाल देगा। पुलिस ज़िन्दगी भर एड़ियाँ रगड़ती रहेगी लेकिन उसके साये को भी तभी छू पायेगी, जब प्राण शरीर से निकल जायेंगे। समाज और समाज के सफेदपोशों को वह देख चुका था। कानून कितना अंधा होता है.. यह भी उससे छिपा न था।

"ठीक है मुझे मादाम के पास ले चलो। मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हूँ।"

"ओह रंजीत... तुम कितने अच्छे हो।" रीना एकदम उसके सीने से लिपट गयी। रंजीत को उसका स्पर्श उस समय बहुत सुखद लगा। कई पल तो वह दोनों उसी प्रकार खड़े रहे।

उसके बाद रीना जब उसके वक्ष से हटी तो वह होंठों पर मादक मुस्कान लिये थी।

"आओ! मादाम हमारा इन्तजार कर रही होगी। वह तुमसे एकान्त में बातें करेंगी। मगर ध्यान रखना कहीं मादाम के रूप से पिघल न जाना।"

"तुम चिंता न करो- तुम्हारे रहते हुए मुझे किसी दूसरे का रूप नहीं पिघला सकता।"

रीना उसकी बाँह में बाँहें फँसाये दरवाजे से बाहर निकल गयी। अब वह चौड़ी राहदरी में चल रहे थे। रंजीत को वहाँ हर तरफ सन्नाटा नज़र आया। कुछ देर तक वह राहदरी में ही दायें-बायें चकराते रहे और उसके बाद रीना ने उसे आदमकद शीशे के सामने खड़ा कर दिया। शीशा दीवार के सहारे खड़ा था। उसके सामने ही दो वर्ग फीट का चौकोर भाग बना था।

"उस चौकोर भाग में खड़े हो जाओ।" रीना ने कहा।

चकित सा रंजीत शीशे के सामने खड़े होकर अपनी शक्ल घूरने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि रीना क्या करती जा रही है। वह रीना से कुछ पूछने वाला था कि शीशे में हल्की सी हरकत पैदा हुई और फिर वह बिना आवाज़ के अपने स्थान पर घूमने लगा।

रंजीत उसके साथ ही घूमता चला गया।

यूँ तो वह शीशे में अपनी शक्ल देख रहा था किंतु वह इससे भी अनभिज्ञ नहीं था कि इस समय राहदरी के बजाय किसी और स्थान पर पहुँच गया है। जैसे ही शीशा स्थिर हुआ वह अपने स्थान पर पलट गया।

एक व्यक्ति उसके समक्ष खड़ा था।

उस व्यक्ति का पूरा जिस्म लाल चुस्त लबादे में छिपा था। इस समय उसके चेहरे का केवल आधा भाग खुला था। रंजीत ने उसे अर्थपूर्ण निगाह से देखा।

"तुम्हारा नाम रंजीत है।" उसने भर्राये स्वर में पूछा।

"हाँ-।" रंजीत ने छोटा सा जवाब दिया।

"अंदर मादाम तुम्हारा इंजतार कर रही है... आओ मेरे साथ"- वह व्यक्ति उसे एक दूसरे द्वार की तरफ संकेत करता हुआ बोला- "मगर ठहरो, पहले तुम्हारी तलाशी लेना आवश्यक है।"

"तलाशी।" रंजीत ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ, यह यहाँ का नियम है।"

रंजीत ने कोई विरोध नहीं किया केवल गर्दन को हल्का सा झटका दिया। तलाशी में

उसका रिवॉल्वर निकालने के बाद वह एक द्वार तक आया। दरवाज़े के पास लगी घंटी को उसने तीन बार पुश किया।

"कम इन।" मीठी सी झंकार पूरे वातावरण में फ़ैल गई, रंजीत उसकी आवाज़ से प्रभावित हो गया। जान पड़ता जैसे प्रत्येक दीवार और फर्श से झंकार निकली हो।

"तुम अंदर जा सकते हो।" उस व्यक्ति ने कहा।

धड़कते दिल से रंजीत ने दरवाज़े में प्रवेश किया। वह कमरा बड़ा विचित्र था। ऐसा जान पड़ता था जैसे हजारों की संख्या में रंग-बिरंगे शीशे उसमें जड़ दिये गये हैं। वह जिस शीशे पर भी नजर डालता उसे स्वर्ण लिबास में सुंदर युवती लिपटी नज़र आती। कमरे में उसके हजारों रंग-बिरंगे प्रतिबिम्ब बन रहे थे। दीवारों के अलावा फर्श और छत पर भी वह युवती मुस्कुराती नजर आई। उसके लिये यह पहचान पाना कठिन था कि उन हजारों नारियो में मादाम कौन-सी है।

यह दूसरी बात थी कि वह सूरतें एक जैसी थी।

रंजीत कर्तव्य विमूढ़ सा कमरे के मध्य खड़ा था उसकी निगाह बार-बार इधर-उधर घूम रही थी और तब वह और भी चकित हो गया जब उसे वह मार्ग बन्द नजर आया जिससे वह अंदर प्रविष्ट हुआ था। वहाँ भी एक बड़ा सा मिरर आकर जम गया था।

"मादाम...।" बड़ी कठिनाई से वह लड़खड़ाते स्वर में बोला।

"मैं तुम्हारे प्रत्येक अंग परख रही हूँ। तुम्हारी सूरत वास्तव में काम की है।" मादाम की आवाज हर शीशे से खनकती हुई वातावरण में गूँज रहीथी-"जन्म से तुमने अपनी सूरत देखी होगी रंजीत लेकिन आज तक तुम नहीं जान पाये कि तुम्हारे अन्दर कौन-सी विशेषता है। हीरे को केवल जौहरी ही पहचान सकता है। अगर तुम मेरे लिये अपनी जान देने का वायदा करते हो तो मैं तुम्हें इतना बड़ा आदमी बना दूँगी कि एक बार दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति भी तुम्हारे क़दमों में झुक जायेगी।"

रंजीत की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

आखिर ऐसी कौन-सी विशेषता है उसके अंदर जो आज तक नहीं जान पाया।

"सामने छोटी सी मेज पर एक बारीक़ धार का ब्लेड है... उसे उठाओ।"

रंजीत जैसे सोते से जागा। उसने निगाह घुमाकर सामने रखी मेज को देखा और हल्की चाल से उसके निकट पहुँच गया।

"काफी वफादार जान पड़ते हो... वहाँ तक पहुँचने से पहले तुमने यह भी नहीं सोचा कि मैं क्या कराने जा रही हूँ?"

"इसकी मुझे परवाह नहीं है मादाम?" वह कुछ प्रभावित सा होकर बोला-"अब मैंने फैसला कर लिया है कि आप जैसी महान शक्ति की पूजा करूँगा। आपके लिये मेरे खून का हर कतरा मौजूद है मादाम।"

"काफी जिन्दादिल इंसान हो। मेज पर पड़ा ब्लेड उठाओ।"

रंजीत ने उस चमकदार ब्लेड को उठा लिया जो मेज पर पड़ा था।

"इससे अपनी उँगली के बीच छोटी धार बना दो... सिर्फ इतनी कि रक्त बाहर आ सके।"

रंजीत ने निर्भय होकर ब्लेड उँगली पर फिरा दिया। उसने यह भी परवाह नहीं की कि उँगली का कितना भाग कट गया है। रक्त तेजी के साथ उँगली से टपकने लगा।

"अपने माथे पर तिलक लगाओ और आज की तारीख में सौगंध खाओ कि इस धरती की बड़ी से बड़ी शक्ति से भी टकराने का साहस रखोगे। मेरे संकेत पर तुम समय आने पर प्राण तक दे दोगे।"

रंजीत ने रक्त का बड़ा धब्बा अपने मस्तक के बीच लगा लिया। उस समय उसका चेहरा सचमुच भयानक होने लगा था। रक्त का तिलक लगाने के बाद उसने सौगंध को दोहराया और जब उसका हाथ माथे से हटा तो आँखें सुर्ख हो चली थीं।

ऐसे जान पड़ता जैसे वह खूँखार दानव हो।

"बहुत खूब अब तुम मेरे दाँयें बाजू हो। तुम जैसे इंसान को अपने साथ देखकर मुझे गर्व महसूस हो रहा है। आज से तुम्हारा नाम रंजीत नहीं बल्कि नेवरान होगा। एक दिन मादाम फ्रेंटाशिया के दाहिने बाजू नेवरान का पूरा विश्व में आंतक होगा। अब तुम गौर से उन सभी बातों को समझोगे...मैं टेलीविजन पर तुम्हें वह जगह दिखा रही हूँ जहाँ तुम्हे कुछ दिन रहना होगा। वहाँ तुम्हे हर काम का मास्टर बनाया जायेगा। रिकॉर्डर सिस्टम से आवाज परिवर्तन की कला सिखाई जायेगी। संग आर्ट से तुम गोलियों से बचना सीखोगे। मेकअप का चमत्कार तुम्हारी समझ में आयेगा। और भी नये अविष्कारों का ज्ञान तुम्हें कराया जायेगा। यह सब शिक्षा तुम्हें इस ढंग से दी जायेगी कि उसमें अधिक समय नहीं लगेगा। उसके बाद तुम अपने को रंजीत नहीं बल्कि नेवरान दी ग्रेट कहोगे।"

"ओ के मादाम।"

"मैं टेलीविज़न स्क्रीन स्टार्ट कर रही हूँ। तुम्हें सभी बातों को समझना होगा।"

कुछ देर के लिये कमरे में अँधेरा छा गया। उसी अँधेरे में उसे सामने ही चमकती स्क्रीन नजर आई, जिस पर दृश्य साफ होता जा रहा था। किसी फिल्म की तरह उस पर दृश्य चल रहे थे।

"सागर के बीच यह जो टापू है... उसका नाम भूतिया लैंड है। इस टापू पर मात्र मेरा अधिकार है। टापू आज़ाद है और यहाँ तक इंसान आसानी से नही पहुँच सकता। टापू की विशेषतायें जान लो। इसके चारो तरफ सागर की लहरों के साथ चुम्बकीय लहरें बहती हैं। यदि कोई जहाज इत्यादि इन लहरों तक पहुँच जाये तो वह स्वतः ही चुम्बकीय प्रभाव से खिंचता हुआ चट्टानों से टकराकर ध्वस्त हो जायेगा। टापू में चारो तरफ राकेट पॉवर और इसी प्रकार के भयानक शस्त्र हैं। कोई हवाई मार्ग से भी वहाँ नहीं पहुँच सकता। इसे मादाम फ्रेंटाशिया का देश भी कह सकते हो। तुम्हें कुछ समय इसी टापू में गुजारना पड़ेगा। वहाँ के लोगों के संपर्क में रहकर नये तजुर्बे सीखने होंगे। वैसे वहाँ नब्बे प्रतिशत लड़कियाँ हैं और दस प्रतिशत खूँखार इंसान। लड़कियाँ प्रत्येक कार्य में दक्ष हैं।"

मैं जानती हूँ - पुरुष यदि कहीं चोट खा सकता है, तो किसी नारी से... अर्थात विवेकशील व्यक्ति भी कभी-कभी नारी के आगे झुक जाता है। मगर तुम्हें यहाँ इस प्रकार ट्रेन्ड कर दिया जायेगा कि कभी किसी सुन्दर स्त्री से चोट नहीं खा सकोगे। ट्रेन्ड होने के बाद मैं तुम्हें एक शानदार अभियान पर भेजूँगी। मुझे पूर्ण आशा है कि तुम उस अभियान पर

कामयाबी अवश्य पाओगे। तुम सब कुछ समझ सको, इसके लिये तुम्हें एक और फिल्म दिखाई जायेगी।"

कुछ देर तक स्क्रीन पर सफेदी छाई रही। रंजीत चौंक पड़ा।

टेलीविज़न स्क्रीन पर वीरानगढ़ प्रेत महल का चित्र स्पष्ट नजर आ रहा था।

"इस जगह को तुम अच्छी प्राकर पहचानते हो। यह वीरानगढ़ स्टेट का प्रेत महल है। प्रेत महल में दो-तीन शक्तिशाली दल दिलचस्पी ले रहे हैं- वह दल बराबर इसके अंदर षड़यंत्र का जाल फैलाते जा रहे हैं। इसी महल में मेरा एक प्रमुख अंगरक्षक फँस गया है, जिसे खातून की आत्मा ने कैद कर लिया है। वह खातून की आत्मा का जानी दुश्मन है, इसलिये अपनी जिंदगी को दाँव पर लगाये हुए है। मैं तुम्हें दिखाती हूँ- उस पर कैसे जुल्म किये जा रहे हैं। मेरे सामने सिर्फ कठिनाई यह है, कि मैं उस स्थान तक पहुँच नहीं सकती। थोड़ा बहुत मार्ग का ज्ञान उसने करवाया था, लेकिन उस रात मैं सफल नहीं हो सकी। न जाने इस महल में कितने ख़ुफ़िया द्वार हैं।

महल का दृश्य गायब हुआ और उसके बाद एक पिंजरानुमा भाग नजर आया। पिंजरे के अंदर एक व्यक्ति नग्न हालत में लेटा था। उसके जिस्म पर स्याह निशान थे। होंठ फटे थे... आँखें खूनी थीं। बाल बिखरे हुए थे।

इस वक्त वह अपनी खूनी आँखों से पिंजरे के सींखचों को घूर रहा था।

"यह जिस स्थान पर भी रहेगा- इसके चारों तरफ दस फीट का दायरा मेरे टेलीविज़न यंत्र पर नजर आयेगा। इसे अच्छी तरह पहचान लो। इसका नाम थांगसी है - बहुत काम का आदमी है। तुम नहीं जानते इसने क्या क्या करतब दिखायें हैं। मेरा ख़ास आदमी होने के साथ ही यह विभिन्न दलों से मिलकर कार्य करता रहा। खातून की आत्मा का विश्वासपात्र बनने के बाद इसने बहुत गहरी चोट खाई और इसकी गलती पकड़ में आ गयी। उस रात मैंने इसी के संकेत पर प्रेत महल में तबाही का जाल फैलाया था। किन्तु मैं अपने अभियान में असफल रही। अपने साथी को बचा भी नहीं सकी और मजबूरन मुझे भागना पड़ा।"

पिंजरा कुछ दूर हटा।

अब वह दस फुट का दायरा साफ नज़र आ रहा था। इस वक्त थांगसी के अतिरिक्त दो और पिंजरे भी नज़र आ रहे थे।

उन दोनों में भी उसी प्रकार दो व्यक्ति औंधे मुँह पड़े थे। अचानक उनमें से एक ने कराह कर करवट बदली और दूसरे ही पल वह हड़बड़ा कर बैठ गया।

रंजीत आश्चर्य में उछल पड़ा- वह कैप्टेन हमीद था।

"अरे- यह तो हमीद है।" अचानक फ्रेंटाशिया का चौंका देने वाला स्वर सुनाई दिया... "इस समय पिंजरे में कैसे पहुँच गया। अभी दो घंटे पूर्व तो पिंजरा खाली था... ओह कैप्टेन हमीद भी मौत की घड़ियाँ गिन रहा है...।"

हमीद के चेहरे पर मुर्दानी सफेदी थी और वस्त्र तार-तार हो चुके थे।

"आप इसको जानती हैं मादाम।" अचानक रंजीत ने पूछा।

"हाँ, एक लम्बे अरसे से इसे जानती हूँ।"

"यह बहुत बुरा आदमी है। अगर मेरे हाथ लग जाये तो जिंदा चबा जाऊँ।"

मादाम हँस पड़ी।

"तुमने इसे पहचानने में भूल की रंजीत। यह आदमीं मुझे दुनिया में सबसे अधिक प्यारा लगता है। इसकी दिलचस्प बातें मैं चाहकर भी नहीं भुला पाती। इस बार यह बहुत भयानक खतरे के बीच है। मैं इसे मुर्दा नहीं देख सकती.. यह तब तक नहीं मर सकता जब तक मेरी एक भी साँस बाकी है।"

रंजीत और भी घबरा गया। उसे मादाम के फैसले के सामने मौन रहना पड़ा।

हमीद उस समय घुटनों के बल बैठा हुआ थांगसी से बात कर रहा था। दोनों के होंठ हल्के हल्के हिल रहे थे। थांगसी अब भी उसी प्रकार लेटा हुआ बात कर रहा था।

उसी समय तीसरे व्यक्ति ने करवट ली। वह लम्बे डील-डौल का गठीले शरीर का व्यक्ति जान पड़ता था। उसकी शक्ल अफ्रीकनों जैसे थी। इस समय वह आँखें फाड़-फाड़ कर हर तरफ घूर रहा था।

"यह तीसरा कौन है मादाम?"

"मेकफ ...?"

"मैंने इसका नाम पहली बार सुना है।"

"तुम नहीं जानते, यह एक खतरनाक इंसान का अंगरक्षक है। न जाने दो घंटे में ही यहाँ क्या हो गया, सारी बाजी ही पलटी जान पड़ती है।"

रंजीत को लगा, जैसे वह किसी तिलस्मी संसार की सैर कर रहा है।

"यह सब क्या चक्कर है मादाम?"

"रंजीत अब मुझे अपनी योजना बदलना पड़ेगी। मुझे लगता है मेरे अलावा सभी शक्तियाँ उसके चंगुल में हैं।"

सहसा स्क्रीन पर एक व्यक्ति की पीठ नजर आई। वह व्यक्ति पिंजरों की तरफ बढ़ रहा था। और जब वह दो कदम चला तो सुन्दरता की जीती जागती तस्वीर उसके बराबर में चलती नज़र आई।

उन दोनों की पौशाकें सेकड़ों वर्ष पहले के इतिहास की याद दिला रही थी, ऐसा जान पड़ता जैसे कोई सम्राट महारानी के साथ बड़े गर्व से चल रहा हो। दोनों की पीठ पर नीले रंग का लम्बा स्कार्फ झूलता हुआ फर्श तक फ़ैल गया था।

सम्राट लगने वाले व्यक्ति के केश पीछे की तरफ कुछ घूम गये थे और इकहरे शरीर की वह महारानी बड़े अंदाज में अपनी नाज़ुक हथेली उस व्यक्ति के हाथ में थमाये थी।

रंजीत ने अनेक बार आँखें मली। मगर वह स्वप्न नहीं था।

वह जो कुछ देख रहा था। उस सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता था। सम्राट नजर आने वाले व्यक्ति की कमर में काला-सा हंटर झूलता नज़र जा रहा था।

मादाम भी उस दृश्य को दिलचस्पी से देख रही थी और रंजीत को लग रहा था जैसे कुछ देर तक इसी प्रकार के अजीबों गरीब दृश्य देखता रहा तो उसका मस्तिष्क फट जायेगा।

वह दोनों प्रत्येक पिंजरे के निकट खड़े होकर बंदियों से बात कर रहे थे।

और उनके ठीक पीछे एक देवकाय शरीर खड़ा मस्त हाथी के समान झूम रहा था।

उसके शरीर पर प्राचीन सेनानियों जैसे वस्त्र थे। जिसमें वह किसी जंगल से आया देव जान पड़ रहा था। कभी-कभी उसका मुँह गोल दायरे में खुल कर बंद हो जाता।

और तब वह ऐसी हरकत करता जैसे जम्हाई लेने के बाद जुगाली कर रहा हो। उसके अलावा एक दूसरा सैनिक भी वहाँ नज़र आया।

जैसे ही माया घर में दाख़िल हुई, उसने अपने पिता को विचित्र परिस्थिति में पाया। उसके पिता एक कुर्सी पर बंधे थे और उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया गया था। माया घबराहट में दौड़ती हुई अपने पिता के पास पहुँची उसी समय कमरे में दो व्यक्ति दाख़िल हुए, उनके साथ एक युवती भी थी।

"खबरदार लड़की।" उस युवती ने रिवॉल्वर की नाल सीधी करते हुए कहा - "अपनी आवाज गले में ही रखना।"

माया सहम गयी। वह कभी अपने पिता को देखती थी तो कभी उन अजनबियों को। अभी एक घंटा पहले तो वह सामान खरीदने बाज़ार गयीं थी, इस बीच में यह क्या हो गया और ये लोग कौन हैं, इन्होने उसके पिता को क्यों बाँधा है?

"लड़की हम वापिस जा रहे थे।" युवती बोली -"फिर हमने सोचा कि तुम्हें भी शुभ सन्देश दे दिया जाये, क्योंकि यह बात तुम्हारे मतलब की है। कुमार की शादी तो तुमसे ही होनी है न...?"

माया चौंक पड़ी - "क्या कहना चाहते हो....तुमने मेरे पिता की यह दुर्दशा क्यों बनाई?"

"वही बताने जा रही हूँ... तुम लोगों ने असली कुमार को पहचान लिया है और यह अच्छा ही हुआ कि यह भेद अभी तक राजा साहब को नहीं बताया। हमारा मकसद भी यही है... हम जरूरत पड़ने पर जान भी ले सकते हैं। परन्तु पहले हम राज कुमार की जान लेंगे.. समझ गयी।"

"क्या मतलब..क्या राज कुमार....।"

"वह हमारी कैद में है.. यदि उसकी हिफाज़त चाहती हो तो किसी दूसरे युवक से विवाह करके कहीं चले जाओ-- इसी में तुम सबकी भलाई है।"

"नहीं... तुम झूठ बोल रही हो..."

"अच्छा लड़की... हम इस बूढ़े को ले जा रहे हैं... शायद इसे भी विश्वास नहीं होगा.. यह बूढ़ा पुजारी कल तक लौट आयेगा। जाते समय मैं तुम्हें एक भेंट अवश्य दूँगी...लेकिन तुम उसे मेरे जाने के बाद ही देखना और अच्छी प्रकार सोच लेना...मेरे ख्याल से बाद में तुम भी वही निर्णय लोगी, जो मैंने कहा है...।"

"ईश्वर के लिये ऐसा न करो.. मेरे पिता ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है..?"

"तो फिर तुम्हें विश्वास हो गया कि रंजीत हमारी कैद में है?"

"हाँ, मुझे विश्वास है...।"

"और तुम उसे भूलने का प्रयास करोगी।"

“यह मुझसे नहीं हो सकेगा...मैं उसे भूल भी जाऊँ... तो.. तो राजकुमार मुझे नहीं भूलेगा। हम दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं..।”

“तुम दोनों नहीं...सिर्फ तुम उसे प्यार करती हो। उसने तुम्हें कभी नहीं चाहा..तुम जानती भी नहीं कि वह विवाहित है... तुम लोग राज खानदान के वफादार हो इसलिए ऐसा कोई कार्य नहीं करोगे जिससे उस घराने की अंतिम आशा का दीप बुझ जाये।”

माया ने अपने पिता की तरफ देखा।

उसके पिता ने गर्दन हिलाकर हामी भरी।

तुम्हारे पास इस बात का प्रमाण है कि वह शादीशुदा हैं।

युवती ने उसकी तरफ एक लिफाफा उछाला- “देख लो प्रमाण में यही वस्तु तुम्हें देना चाहती थी।”

माया ने काँपते हाथों से लिफाफा खोला। लिफ़ाफ़े में कुछ तस्वीरें थीं। उन चित्रों को देखते-देखते माया की आँखों में अश्रु बिंदु चमक उठे। यह रंजीत की तस्वीरें थीं, जो एक युवती के साथ आलिंगन और चुम्बन की विभिन्न मुद्राओं में था।

“मेरे ख्याल से तुम लोगों को अधिक समझाने की जरूरत नहीं है। यदि तुमने हमारे कथनानुसार कार्य न किया तो उसका अंजाम भयानक होगा। तुम लोगों पर राजकुमार की मौत का कलंक लग जायेगा।”

युवती ने अपने साथियों को इशारा किया। फिर उन्होंने माया को भी बाँध दिया और उसके बाद अंतिम चेतावनी देकर बाहर निकल गयी।

माया बुझे हुए नेत्रों से उन्हें जाते हुए देखती रही। अँधेरा फैलने लगा था। उसने अपने सारे बंधन खोल डालें, फिर अपने पिता के बंधन खोले।

“बेटी..।” पुजारी ने उसे गले लगा लिया।

माया रोने लगी।

“रो मत बेटी ...क्या हुआ अगर तुझे कुमार नहीं मिला। बेटी हमने राजा साहब के साथ वफादारी की थी। हमने उनका नमक खाया है बेटी... उन्होंने इस नाचीज को दोस्ती का दर्जा देकर कितना बड़ा वचन दिया था.. अब मैं समझता हूँ हम इस योग्य थे ही कहाँ.. इसे सपना समझकर भूल जा बेटी अब हमारा एक ही फर्ज है कुमार की प्राण रक्षा... मेरे सामने एक बार फिर परीक्षा की घड़ी है।”

पुजारी ने ठंडी साँस खींचकर कहा, “हे भगवान मेरी रक्षा करना।”

□□□

चेतना लौट रही है। आँखें खुल रही हैं।

एक बारगी विश्वास नहीं होता कि वह जीवित है। उसके विस्फरित नेत्र चारों तरफ नजर आने वाले साथियों को घूरते हैं। सोचता है- क्या वह नर्क के किसी कुंड में कैद है। लेकिन यह नर्क नहीं- बल्कि यथार्थ की धरती है।

दो एक बार आँखें मलने के बाद पुनः दृश्य को देखता है और तब उसे पूर्ण विश्वास हो जाता है कि वह जीवित है। कुदरत की लीला का ख्याल आते ही उसके होठों पर क्षीण सी

मुस्कुराहट आ जाती है।

शरीर में बेहद पीड़ा है- मस्तिष्क फटा जा रहा है। अपने आपको किसी पिंजरे में कैद देखकर उसके मानस पटल पर पिछली घटनाएं तेजी के साथ घूमने लगती हैं।

वह सुरंग में दाख़िल हुआ था- जहाँ कदम-कदम पर अँधेरे डस रहे थे। सुरंगों के जाल में उलझता हुआ जीवन अब बहुत दूर होता जा रहा था। खातून की आत्मा कितनी भयानक थी।

वह राजेश को हर कीमत पर बचाना चाहता था।

किन्तु उन क्षणों ने सचमुच उसे ही मौत का उपहार दिया। वह पानी कितना भयानक था, जिसमें वह डूबता जा रहा था।

उसने अपने आपको बचाने के लिये संघर्ष किया था। लेकिन बंद अँधेरी सुरंगों में वह कब तक संघर्ष करता रहता और तब उसका दम घुटता चला गया। शक्ति ने साथ छोड़ दिया...उसके बाद गहरी अवचेतना...।

न जाने फिर क्या हुआ। और अब वह कहाँ है?

निश्चित रूप से वह खातून की आत्मा द्वारा बंदी बना लिया गया है।

दिमाग धीरे-धीरे कार्यशील होना चाहता था, तभी उसके कानों में लगातार चमक पैदा हुई और फिर लगा जैसे मक्खियाँ भिनभिना रही हैं।

उसने चौंककर आँखें खोलीं।

वह मक्खियों की भिनभिनाहट नहीं बल्कि किसी की आवाज थी। बेजान से पिंजरों में कैद पड़े थे।

“कैप्टन हमीद.. होश में आओ हमीद... क्या तुम सो रहे हो?” यह आवाज बार-बार उसके कानों में टकरा रही थीं। बोलने वाला हमीद को नज़र आ रहा था। किन्तु उसने यह शक्ल जीवन में पहली बार देखी थी। वह नाटे कद का चीनी शक्ल का व्यक्ति था।

“कौन हो तुम... मुझे कैसे जानते हो?” क्षीण स्वर में हमीद में पूछा।

“मेरा नाम थांगसी है।”

“थांगसी!” हमीद ने मस्तिष्क पर जोर दिया। यह नाम उसने सुना अवश्य था किन्तु इस वक्त कुछ भी याद नहीं आ रहा था कि यह नाम कहाँ सुन चुका है।

“मस्तिष्क पर अधिक जोर मत दो।”

हमीद के फैले नेत्र अब भी थांगसी को घूर रहे थे। जो लेटा-लेटा हँस रहा था।

“सुनो।” अचानक हमीद ने टोका।

हमीद की आवाज सुनते ही उसकी हँसी रुक गयी।

“हम लोग कहाँ हैं?”

“नर्क में...।”

“नहीं यह नर्क नहीं हो सकता- मरने के बाद इंसान नर्क में पहुँचता है।”

“तो तुम जीवित कब हो?”

“बड़े विचित्र आदमी हो।” हमीद झुँझलाकर बोला।

“मैं ठीक कह रहा हूँ। हम लोग जिंदगी में बहुत दूर पहुँच कर सड़ रहे हैं। तब इसे नर्क न कहा जाय तो क्या कहा जाय- धरती पर भी बड़े-बड़े नर्क हैं हमीद! यह तो इंसान के ख्यालात हैं कि मरने के बाद ही वह नर्क या स्वर्ग में पहुँचता है।”

“समझता हूँ मगर यह स्थान है कहाँ?”

“प्रेत महल।”

“ओह तो इसका मतलब मेरा अनुमान सत्य निकला। इस वक्त हम खातून की आत्मा के कैद में हैं।”

“कैद में तो हैं ही लेकिन....।”

“लेकिन क्या...?”

“खातून की आत्मा एक उल्लू का नाम है, जिसे आदमियों के स्वर में बात करने की ट्रेनिंग दी गई है। उल्लू बेचारा इंसानों को क्या कैद करेगा?”

“फिर हम किसकी कैद में हैं...कौन है वह..?” हमीद ने बैचैन होकर पूछा।

“तुम्हारा बाप है।”

हमीद उछल कर सीखचों तक पहुँच गया। उसे एकदम क्रोध आ गया था। अगर सीखंचों के बीच फासला न होता तो वह निश्चित रूप से थांगसी की गर्दन दबोच लेता।

कुछ देर तक वह मौन थांगसी को घूरता रहा।

“सच कहा है?” अचानक थांगसी ने ठंडी साँस खींचकर कहा - “वक्त इंसान को अपने साँचे में ढाल देता है।”

“मेरी बात का बुरा मान गये। शायद खैर, वक्त आते ही तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मैंने झूठ कहा या सत्य...।”

हमीद कुछ कहने ही जा रहा था कि उसी समय किसी की कराह सुनाई दी। हमीद का ध्यान उसी तरफ घूम गया। तत्काल ही वह चौंक भी पड़ा। तीसरे पिंजरे से मेकफ की सूरत उभर रही थी।

“मेकफ...।” हमीद ने उसकी विचारधारा तोड़ी।

“कौन...?” मेकफ ने काँपते स्वर के साथ गर्दन घुमाई।

“ओह कैप्टन साहब?” वह बड़बड़ाया।

“तुम यहाँ कैसे फँस गये?”

“समझ में नहीं आता कैसे फँस गया।” मेकफ ने गर्दन खुजाई। जैसे वह कुछ सोचने का प्रयास कर रहा हो और फिर वह एकदम उछल कर बैठ गया। उसके नेत्र भय से फ़ैल गये।

“हम कैद में हैं कैप्टन साहब- ओह..वह उल्लू कितना भयानक था। मेरा टॉमीगन से भी नहीं मरा।”

“कदाचित तुम भी उल्लू के पट्ठे हो।” इस बार थांगसी ने कहा।

“क्या मतलब..तुम कौन हो?” मेकफ गुर्राया।

“इसे छोड़ो यह पिंजरे में पड़ा पड़ा पागल हो गया है।”

हमीद ने कहा- “क्या तुम भी उस सुरंग में प्रविष्ट हुए थे।”

करता भी क्या...काफी देर तक जब बॉस की तरफ से कोई संकेत नहीं मिला तो मुझे भी उन खंडहरों में पहुँचना पड़ा। वहाँ से मैं सुरंगों तक पहुँचा और सहसा ही उस भयानक उल्लू ने मुझ पर हमला बोल दिया। मुझे यह भी याद नहीं कि मैं कैसे बेहोश हो गया था। मगर अब हम कहाँ हैं?"

"अपने बाप की कैद में?" हमीद ने थांगसी को घूरते हुए कहा।

कुछ क्षण वातावरण में मौन छाया रहा। हमीद ने अपने चारों तरफ खड़ी विभिन्न दीवारों को घूरा... उन पर अजीबों गरीब खतरनाक जानवरों के चित्र नक्काशी द्वारा बनाये गये थे। बीच में एक लोहे का स्तम्भ था, जो छत तक चला गया था।

सहसा तेज प्रकार का संगीत वातावरण में गूँज उठा। वह संगीत हमीद को बड़ा विचित्र जान पड़ा। लगता जैसे कोई तुरही सम्राट के स्वागत में बज उठी हो। उस संगीत के साथ ही गोल स्तम्भ अपने स्थान पर घूमने लगा।

"सावधान...होशियार।" अचानक संगीत के मध्य एक आवाज उभरी-"जंगी सैनिक और सिपहसालारो को सूचना दी जाती है कि वीरानगढ़ के महाराजा मानिक राजरानी के साथ कैद खाने के निरीक्षण के लिये पधार रहे हैं...।"

आवाज की समाप्ति के साथ ही संगीत रुक गया।

हमीद के माथे पर पसीना भरभरा आया उसका दिल तेजी के साथ धड़कने लगा।

मेकफ का मुँह खुला था। उसके लिये वह तिलस्मी गोरखधंधा था।

अब भी थांगसी उसी प्रकार लेटा था- कदाचित उसके लिये वह आश्चर्य की बात नहीं थी।

"महाराजा मानिक... सम्राट मानिक...।" हमीद बड़बड़ाया। उसकी निगाह सामने दीवार पर स्थिर हो गई.. जहाँ दीवार का एक भाग सरक कर अलग होता जा रहा था।

देखते ही देखते वहाँ एक द्वार बन गया- द्वार से उस पार चौड़ी राहदरी थी, जिसमें बहुमूल्य कालीन बिछा था और राहदरी के दोनों तरफ लम्बे फल का भाला लिये सैनिक खड़े थे।

उनके वक्ष पर सुनहरे उल्लू का निशान चमक रहा था।

आगमन का संगीत राहदरी में बजा।

सैनिकों की एड़ियाँ जुड़ गईं।

भाले सलामी के रूप में झुक गये, उनके साथ ही सैनिकों की गर्दन झुकती चली गयी।

"सम्भलो हमीद।" थांगसी ने मौन तोड़ा- "अपराधी आ रहा है।"

हमीद मौन था, जैसे उसने थांगसी के शब्द सुने ही नहीं थे।

"बेचारा?" थांगसी ने लम्बी साँस ली थी।

सहसा राहदरी के मोड़ पर लाल प्रकाश का दायरा नजर आया। वह दायरा इस प्रकार आगे बढ़ रहा था। जैसे रौशनी न होकर इंसान हो। दायरा मोड़ पर पूरी तरह घूम गया और उसके साथ सुनहरी राजसी पोशाक में लिपटे दो इंसान प्रकट हुए। दोनों गर्वीली चाल से चलते हुए निकट आते जा रहे थे।

□□□

नोट - ज़रा ठहरिये, ठहर कर अपने दिल पर काबू पा लीजिये- जी हाँ जनाब, मैं अब अपराधी को आपके समक्ष ला रहा हूँ- एक क्रूर इंसान को ला रहा हूँ- जिसके सामने आते ही आप आश्चर्य से उछल पड़ेंगे - पेशे खिदमत हैं।

निकट... और करीब...।

संगीत बजता रहा। सैनिकों ने सम्मिलित आवाज़ में सम्राट मानिक की जय जयकार का नारा लगाया। सम्राट मानिक और राजरानी दायरे के मध्य बढ़ते रहे।

उन दोनों के चेहरे पर नाक के नीचे झीना सा पारदर्शक कपड़ा था, जो सीने के वस्त्र से जुड़ा था। राजरानी की तो केवल आँखें ही नज़र आ रही थीं।

नीली रौशनी के मध्य वह दायरा हॉल में द्वार तक आ गया। हमीद ने पलके झपकाई।

एकाएक भय से उसके नेत्र फ़ैल गये। उसके कंठ से घुटी घुटी चीख निकली। दूसरे ही पल वह अपना सिर थाम कर बैठ गया- जैसे उसका मस्तिष्क फट जायेगा।

“हा... हा... हा....।” हल्का-सा अट्टहास वातावरण में गुंजायमान हुआ। वह सम्राट मानिक का कहकहा था। उसकी आँखों में हिंसा की भयानक चमक थी। वह एक हाथ से राजरानी की हथेली थाम कर हॉल के मध्य आ गया।

दूसरी चीख मेकफ की थी।

हमीद के मस्तिष्क में जैसे धमाका हुआ। उसने सिर उठाकर पुनः देखा। सचमुच वह कर्नल विनोद था। लाल पारदर्शक कपड़े में छिपा उसका चेहरा बहुत भयानक नजर आ रहा था। पहले पिंजरे के सामने पहुँच कर वह रुक गया।

“सम्राट मानिक के नाम से इस जमीन का ज़र्रा-जर्रा काँपता है। गुस्ताख जासूसों, तुम्हारा यह साहस कैसे हुआ? तुम्हारी मेरे महल में दाख़िल होने की हिम्मत कैसे हुई?”

उसका खूँखार स्वर मेकफ के कानों से टकराया।

“मैं तुमसे पूछ रहा हूँ काले आदमी...।”

“मैं...मैं..।” मेकफ ने अटकते स्वर में कहा।

“सिंघराज के सिंहासन पर लगता है पंख लग गये। उन्होंने तुम लोगों को जासूस बनाकर हमारी सरज़मीन पर भेजा और अब मैं बताऊँ कि मेरे अंदर कितनी शक्ति है... मैं सिंघराज की धूल तक को खून की नदियों से रंग दूँगा।”

हॉल में दो व्यक्तियों ने एक साथ प्रवेश किया। उनमें से एक वो भारी भरकम शरीर वाला देव सरीखा व्यक्ति था। मानिक के पीछे पहुँचकर दोनों खड़े हो गये।

हमीद ने उस शक्ल को देखा, जो उसे मानिक उर्फ़ विनोद के पीछे खड़ी नज़र आ रही थी।

वह आयरन मैन मूर्खों का सम्राट ग्रांडील कासिम था। कासिम इस समय जुगाली करता हुआ मेकफ को घूर रहा था।

“इतनी क्रूरता ठीक नहीं शहजादे।” अचानक राजरानी ने मानिक के वक्ष को सहलाते हुए कहा- “यह लोग भी हमारी तरह प्राणी हैं। सब अपने देश के लिये जीते हैं... अपने वतन

की मिट्टी के लिये हर इंसान को कुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं..इन पर रहम करो..।"

"रहम...हा..हा..हा..।" मानिक ने ठहाका लगाया "राजरानी, हमने तुमसे प्यार किया है। हमे तुम्हारा रूप पसंद था अन्यथा मानिक की दासियाँ बनी हैं...पत्नी कोई नहीं...यह तुम्हारे मुल्क के वासी हैं....इसलिए रहम कर दूँ?..सिंघ के प्राणियों को क्षमा कर दूँ...?"

"सम्राट।"

"हमारे काम में विघ्न मत डालो राजरानी...।"

राजरानी सहम कर पीछे हट गयी।

"दूसरा पिंजरा खोलो।" मानिक गरजा- "बीच वाला बहुत कष्ट सह चुका है। इसे आराम करने दो।"

"गौर से देख लो हमीद-।" इस बार थांगसी धीमे स्वर में बोला।

"मैंने कहा था न तुम अपने बाप की कैद में हो-।"

हमीद का पिंजरा भी उसी समय खुल गया। मानिक ने अपना हाथ उठाया और उसके संकेत के साथ ही हॉल के सभी इंसान सरकते हुये द्वार पर पहुँच गये। राजरानी भी द्वार तक सहमी सी पहुँच गयी। द्वार के मध्य कासिम खड़ा हो गया।

"आपको क्या हो गया कर्नल साहब?" हमीद ने काफी देर बाद अपना मौन तोड़ा- "यह सब क्या गोरखधंधा है?"

विनोद की आँखों में उसे खूनी चमक नज़र आ रही थी।

"सटाक!" पहला वार हुआ।

हंटर के वार से हमीद उछलकर बच गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसे समय में वह क्या करे? क्या वह विनोद का सामना करने के लिये अपने को तैयार कर ले?

"सटाक-।" दूसरा वार उसके बायें कंधे पर हो गया। हंटर की उस चोट से वस्त्र के साथ खाल भी खिंच गयी।

"कर्नल विनोद..यह सब...।"

उसके शब्द गले में ही घुट के रह गये। इस बार हंटर उसके सीने से लिपट गया था, जिसके साथ वह झटका खाकर औंधे मुँह गिर पड़ा।

और फिर लगातार चीखें उसके मुँह से गूँजी।

हंटरों ने उसे बुरी तरह छील दिया था।

कदाचित मेकफ से यह सब न देखा गया। उसने एक दम विनोद पर छलाँग लगा दी। किन्तु इसका परिणाम बड़ा भयंकर निकला। विनोद को पाने के बजाय वह हमीद के शरीर पर गिरा।

उस समय विनोद बिजली की फुर्ती से हट गया था।

अगला हंटर मेकफ की पीठ से लिपट गया।

"अभी तुम दोनों मेरे पाँव पकड़कर गिड़गिड़ाओगे।"

सभी हंटर मेकफ को छील रहे थे। हमीद उसके नीचे दब जाने के कारण हंटरों से बचा था। किन्तु उसके जिस्म में इतनी शक्ति नहीं थी जो विनोद से टकरा सकता।

मेकफ का चेहरा रक्त से भीग जाने के कारण काफी भयानक हो चुका था। वह अफ्रीकन-जीव पूरी तरह हिंसक नज़र आने लगा।

और जब उसका क्रोध भयानक सीमा पर पहुँच गया तो हंटरों की परवाह किये बिना वह सिर झुका कर विनोद पर झपटा। वह विनोद को तो न पकड़ सका, किन्तु हंटर का कोना उसके हाथ में आ गया।

उसने हंटर को दोनों हाथों से पकड़कर पूरी शक्ति से झटका।

राजेश का बॉडीगार्ड मेकफ यूँ तो शक्ति में कासिम से किसी प्रकार कम नही था। वह सचमुच विनोद को हंटर सहित खींच लेता। किन्तु तुरंत ही विनोद के हाथ से हंटर छूट गया और मेकफ अपनी शक्ति की झोंक में लड़खड़ाकर चित्त आ गिरा। उसने फुर्ती से हंटर का हत्था थाम लिया। उसी फुर्ती के साथ वह उठना चाहता था, तभी विनोद ने उस पर छलाँग लगा दी। मेकफ के चेहरे पर दो जबरदस्त घूसे पड़े और वह बुरी तरह बिलबिला गया।

हमीद ने भी वह दृश्य देखा।

विनोद लगातार घूँसों से मेकफ का चेहरा लाल कर रहा था।

"इसे छोड़ दो कर्नल विनोद।" अचानक हमीद चीखा, "मैं फिर कहता हूँ इस खूनी ड्रामे को बंद कर दो- खुदा ना खास्ता अगर मेरा हाथ उठ गया तो कहर हो जायेगा। मैं कहता हूँ इसे छोड़ दो।"

विनोद पर उसकी आवाज़ का जरा भी प्रभाव नहीं पड़ा।

मेकफ चेतना शून्य हो गया था। विनोद ने दो तीन हंटर उसके शरीर पर और जमाये और बुत की तरह खड़े हमीद की तरफ घूम गया।

"अब तुम्हारी बारी है अपने दांव दिखाओ" विनोद ने भयानक मुस्कान के साथ कहा।

"तुम मुझे मारना चाहते हो।" हमीद का स्वर एकदम बदल गया। "क्या तुम सचमुच अपराधी हो?"

"खामोश जासूस की औलाद।"

विनोद हंटर सँभाले आगे बढ़ा। हमीद लगातार पीछे हटता जा रहा था लेकिन पीछे कब तक हटता। उसकी पीठ दीवार से टकरा गई थी।

"आज मैं जिस रूप में तुम्हें देख रहा हूँ उसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था विनोद। तुम इतने भयानक इंसान बन जाओगे, मैं सोच भी नहीं सकता था। लेकिन याद रखो क़ानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं।"

"कानून - कानून- कानून।" विनोद चीखा "किसका कानून? कैसा कानून? - यहाँ सिर्फ हमारा कानून चलता है और विनोद यह किस चिड़िया का नाम है? तुम सिंघराज के जासूस हो और हम शत्रुओं पर कभी रहम नहीं करते।"

सहसा हमीद चौंका।

उसके नेत्र एकदम बदलते चले गये। उसने झुककर इस प्रकार पोजीशन बनाई जैसे विनोद पर हमला करने के लिये जा रहा हो, विनोद का हाथ हवा में लहराया और हमीद उछल कर अलग हट गया, हंटर अनेक बार उसके दायें बायें से गुजरता रहा।

अब हमीद दूसरे कोण से द्वार की तरफ हट रहा था। इस वक्त उसके दिमाग में दूसरी ही योजना घूम रही थी। वह एक भयानक रिस्क लेने जा रहा था।

द्वार पर डटा कासिम लापरवाह खड़ा था।

सहसा हमीद ने बिजली की फुर्ती से घूमकर कासिम की तोंद में जबरदस्त टक्कर मारी। उसी क्षण हमीद ने उसकी टांगों को पकड़कर झटका दे दिया।

विनोद के नेत्र भयानक हो गये।

हमीद उछलकर राहदरी में ही खड़ी राजरानी के ऊपर छलाँग लगाने जा ही रहा था कि एकाएक वातावरण में अंधकार छा गया। उसी अँधेरे में हमीद फर्श से बुरी तरह टकरा गया। इसके पहले कि वह उठ पाता उसके मस्तिष्क पर भारी आघात हो चुका था।

वह चेतना शून्य हो चुका था।

वातावरण में भयानक कहकहों की ध्वनि गूँज उठी।

जैसे प्रेत महल काँप उठा हो, बुर्ज थरथरा उठे हों।

□□□

रंजीत अपनी शक्ल के उस इंसान को देखते ही चीख मार कर बेहोश हो चुका था किन्तु फ्रेंटाशिया बराबर टेलीविज़न स्क्रीन को देख रही थी। उसी समय बाहर के कमरे में घंटी बज उठी और लाल नकाब में छिपा व्यक्ति चौंककर उठ खड़ा हुआ।

“यह व्यक्ति बेहोश हो गया है- इसे उठाकर बाहर ले जाओ।” बाहरी कमरे में फ्रेंटाशिया का स्वर सुनाई दिया। लाल नकाबपोश गर्दन को हल्का सा झटका देकर उस तरफ बढ़ गया। जहाँ अब दीवार में सुराख था वहीं द्वार बन गया था। कमरे में अँधेरा था और सामने नजर आ रही थी टेलीविज़न स्क्रीन-।

इस समय विनोद हमीद की तरफ हंटर लेकर बढ़ता जा रहा था। नकाबपोश ने चकित निगाहों से स्क्रीन के दृश्य को देखा और फिर आश्चर्य से उछल पड़ा। बेहोश पड़े रंजीत को उठाकर बाहर ले जाना है- इसे वह पूरी तरफ भूल चुका था।

“यह सब क्या है मादाम?” उसने भर्राये स्वर में कहा।

“यह पागल आदमी की हैवानियत - सम्राट मानिक - लेकिन तुम चौंके क्यों-?”

“मैं - मैं।” वह दृश्य को घूरता हुआ बोला-”नहीं या नहीं हो सकता- मेरे लिये यह स्वप्न है।”

“क्या मतलब?” टेलीविज़न स्क्रीन के चित्र गायब हो गये और कमरे में तेज़ प्रकाश फ़ैल गया। प्रत्येक शीशे में मादाम फ्रेंटाशिया की शक्ल नज़र आ रही थी। मगर इस समय उसके हाथ में छोटा सा पिस्तौल दबा था।

“अपना नकाब उतारो...।” उसने कड़े स्वर में आदेश दिया।

“अब परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको प्रकट करने में कोई बुराई नहीं है मादाम फ्रेंटाशिया।” इतना कहकर नकाबपोश ने नकाब हटा दिया।

“ओह!” मादाम मुस्काई- “तो यह तुम हो मिस्टर रमेश। मेरा आदमी कहाँ है?”

“आपका आदमी बाहर झाड़ियों में बेहोश बंधा है - लेकिन इस वक्त मैं कोई झगड़ा नहीं

करना चाहता। इस वक्त मुझे सहायता चाहिये मादाम। आपकी शक्ति की जरूरत है। न जाने प्रेत महल में क्या होने वाला है।”

“ठहरो - पहले मैं तुमसे यह जानना चाहूँगी कि तुम यहाँ तक कैसे पहुँचे?”

“मेरे लिये कोई मुश्किल काम नहीं था। शांता के रूप में आप मुझे पहले मिल चुकी थी। उसी दिन से मैं आपकी तलाश में था। प्रेतमहल में पीछा करता हुआ मैं राजधानी पहुँचा और जब मैं पुनः वीरानगढ़ आया तो प्रिंस मनोहर बन चुका था। वीरानगढ़ के राजवंश खानदान की असलियत मुझसे छिपी नहीं थी। मैं जनता था मेरे वहाँ पहुँचने से खलबली मचेगी और प्रेतमहल में दिलचस्पी लेने वाले लोग कोई न कोई पहल अवश्य करेंगे। उस रात आप एक युवक के साथ वहाँ पहुँची थी। जाहिर था कि आप मुझे पहचान गईं थी और मैं भी आपको पहचान चुका था। रंजीत के आगमन से मैं बुरी तरह चौंक गया क्योंकि इसकी शक्ल कर्नल विनोद से मिलती है और विनोद स्टेट वीरानगढ़ का खोया हुआ प्रिंस है। वैसे इस हकीकत को सिर्फ मैं जानता हूँ। विनोद को तो सिर्फ इतना मालूम था कि वह किसी स्टेट का प्रिंस है। वह स्टेट कौन सी है? उसके माँ-बाप कौन हैं? इसे वह नहीं जानता था। संयोग अजीब बना और उसी संयोग के वशीभूत मैं राजा साहब के और करीब आ गया था। मैं प्रेतमहल के षड्यंत्रों का पर्दाफाश करने के लिये वहाँ आया था। पहली रुकावट आपने डाली शायद आप नहीं चाहती थी कि कोई भी जासूस उसे महल में दिलचस्पी ले। हाँ, तो उस रात पार्टी की रोज रंजीत ना जाने क्यों सारे ड्रामे का रुख पलटना चाहता था। कदाचित वह जान गया था कि मैं नकली प्रिंस हूँ। ईश्वर जाने उसे यह रहस्य कैसे मालूम हो गया। मैं उसी समय पहचान गया कि वह विनोद नहीं बल्कि रंजीत है जो विनोद की ब्लैक फोर्स की कैद से भाग निकला था।

बंगले के पीछे आप कार सहित मौजूद थीं। कार स्टार्ट होने से पूर्व ही मैं उसकी डिग्गी में बैठ चुका था। आपने रंजीत के लिये दूसरा चारा फेंक दिया और कुछ ही देर में आपका आदमी रंजीत की विवशता में फँसा पीछा कर रहा था। उस मकान में कार रुकी। रंजीत रौशनदान से प्रविष्ट हुआ और तब आपकी योजना ने उसे कातिल बना दिया। जबकि वास्तविकता यह थी कि वह व्यक्ति मरा नहीं था। वह पिस्तौल ही नकली था। आप शायद रंजीत को विनोद बनाकर इस षड्यंत्र का रुख बदलना चाहती थी। मैं बराबर उस मकान में भी आपके साथ चिपका रहा। कार की डिग्गी में पुनः विराजमान हुआ और उसके बाद आप रंजीत को बेहोश करके अपने अड्डे तक ले आई।

वहीं से मैंने एक नकाबपोश को बेहोश करके उसका स्थान ग्रहण कर लिया। उसने अपने ड्यूटी भी बता डाली थी।”

“अब तुम्हारा विचार बदल चुका है।” मादाम ने हल्की हँसी के साथ कहा। ठीक है हम तुम्हारा साथ देंगे। सिर्फ इसलिए कि हम हमीद को मरते हुए नहीं देख सकते। आज ही हमें सारी योजना का रुख बदल कर नया रूप देना होगा। कल की रात प्रेत महल में तूफ़ान आएगा। यह याद रहे कि मेरा नाम फ्रेंटाशिया है और मेरा एक ही इशारा तुम्हें चींटी की तरह मसल सकता है।”

“जानता हूँ मादाम, मुझ पर विश्वास रखिये।”

“अब काम की बात सुनो, कल की रात हम प्रेत महल में प्रविष्ट होंगे। थोड़ा बहुत मार्ग मैं जानती हूँ। उसी के जरिये हमारा अभियान शुरू होगा। रंजीत के अंदर एक विशेष खूबी है। इसकी शक्ल विनोद से मिलती है और विनोद इस वक्त सम्राट मानिक बन चुका है।”

“मगर यह सब हुआ कैसे?”

“वैज्ञानिक युग में कुछ भी असंभव नहीं है रमेश, विनोद के रूप में सम्राट मानिक का दूसरा जन्म हुआ। विभिन्न परिस्थितियों से गुजारने के बाद उसे यह भुलवा दिया गया कि वह कर्नल विनोद है। एक भयंकर परिवर्तन उसके दिमाग में ला दिया गया है... अब वह अपने को विनोद नहीं बल्कि सम्राट मानिक समझता हुआ वही जुल्म कर रहा है, जो उसने पिछले जन्म में किये थे।”

“विचित्र बात है...मगर यह सब क्यों हो रहा है..और..।”

“बहुत से प्रश्न है... जिनमें से कुछ का जवाब अभी अँधेरे में है। अब विनोद वही करेगा जो खातून की आत्मा चाहेगी।”

“खातून की आत्मा है कौन?”

बताया न कि बहुत से प्रश्न अँधेरे में है। मैं सिर्फ इतना जानती हूँ कि वह कोई वैज्ञानिक शक्ति है जो प्रेत महल में छिपे किसी रहस्य को पाना चाहती है। ऐसा रहस्य जिसे सम्राट मानिक अपनी मौत के साथ दफन कर गया था। उसने एक वसीयतनामा लिख छोड़ा था, जो सिंघराज के जंग के समय भाग कर उसने दिग्राज के दर्रे में छिपा दिया था। वीरानगढ़ के इतिहास में उसका जिक्र है। डॉक्टर सागर को तुम भूले न होगे... वह राजा साहब का ख़ास आदमी था, जो वसीयत के रहस्य को जान चुका था। राजा साहब ने अपने धन के बल पर उसे दिग्राज भेजा। चूँकि सागर वैज्ञानिक भी था, अतः उसने दिग्राज में आत्माओं का जाल फैला दिया। ताकि वहाँ जाने का साहस कोई न करे। कुछ अफवाहें ऐसी उड़ी कि दिग्राज की मिट्टी में सोना छिपा है। दरअसल सागर ने भारत सरकार को यही हवाला दिया था - ताकि सरकार एक होनहार वैज्ञानिक के दिग्राज में प्रयोगशाला बनाने में संदेह न कर सके। मगर असलियत यह थी कि सागर वसीयतनामे को खोज रहा था।

“मगर आपको यह सब कुछ कैसे ज्ञात हुआ?”

“मेरा एक आदमी थांगसी सागर के बहुत निकट रह चुका था| मैं.. मैं इस ओर से बहुत पहले सतर्क हो चुकी थी, तभी मैंने थांगसी को दिग्राज का रहस्य जानने के लिये सागर के निकट पहुँचने का आदेश दिया था। थांगसी द्वारा मुझे यह रहस्य ज्ञात हुए। मगर छोड़ो यह बातें तो फिर भी हो सकती हैं...इस वक्त गौर से मेरी योजना सुनो। हम लोग एक भयानक रिस्क लेने जा रहे है।”

इतना कहकर मादाम फ्रेंटाशिया कुछ पल के लिये खामोश हो गयी।

रमेश बेचैनी से कमरे में टहलता रहा।

रंजीत को जब होश आया तो वह किसी कार की पिछली सीट पर लेटा था। उसने लेटे-लेटे गर्दन दोनों तरफ घुमाई। सचमुच वह कार में मौजूद था। कार के शीशों पर इस प्रकार का पर्दा पड़ा था कि बाहर का दृश्य दिखाई देना असंभव था।

अगली सीट पर नजर पड़ते ही वह चौंक पड़ा। रीना कार की ड्राइविंग सीट पर मौजूद

थी। विंडस्क्रीन के उस पार नज़र आने वाला भाग शहरी आबादी का नहीं था।

"लेटे रहो रंजीत - अभी कुछ घंटे और आराम करो।" रीना ने मिरर का कोण बदलते हुए कहा। वह अधरों पर मुस्कान लिये रंजीत को देख रही थी।

"मुझे आराम की जरूरत नहीं है।" रंजीत अगली सीट पर आ गया- "अब कौन से तिलिस्म में ले जा रही हो और मादाम...।"

"मादाम की आज्ञा से"

"कैसी आज्ञा...?"

"उन्होंने अपनी योजना बदल डाली हैं।"

"समझ में नहीं आता... हम दोनों की शक्ल एक कैसे हो गई?"

"संसार में इससे भी विचित्र संयोग आ जाते हैं। तुमने उसका अभिनय तो देखा ही होगा.. वह कितना खतरनाक लगता है। उसकी आँखें कितनी सुर्ख जान पड़ती हैं... जैसे अंगारा हों।"

रीना उर्फ़ फ्रेंटाशिया ने मिरर का कोण दोबारा बदला। इस बार मिरर ठीक रंजीत के चेहरे के सामने था।

"अब तुम अपना चेहरा शीशे में देखो।"

रंजीत ने चौंक कर शीशा देखा और दूसरे ही पल वह बुरी तरह चौंक पड़ा। अब तक उसे इसका ख्याल ही नहीं था कि चेहरे के अलावा पोशाक भी बदली हैं।

"नहीं...नहीं.. मेरी आँखें इतनी भयानक नहीं हो सकती।" रंजीत ने घबराकर अपना चेहरा टटोला।

"यह सब क्या है रीना..?"

"मेकअप... तुम इस चक्कर में न पड़ो। चूँकि तुम्हारी शक्ल विनोद से मिलती हैं, इसलिए मानिक बनने में कोई तकलीफ नहीं होगी। चोगे के नीचे तुम्हारे बदन पर ऐसी पोशाक है, जैसी टेलीविज़न पर मानिक की थी। जिस्म के ऊपर बारीक लोहे का आवरण है - उससे तुम्हारे ऊपर न तो किसी बुलेट का प्रभाव पड़ेगा और न घारदार वस्तु का। तुम अपने जिस्म की जिस जेब में भी हाथ डालोगे - उसी में चमत्कारिक वस्तु मिलेगी। पूर्ण ज्ञान मैं तुम्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के बाद कराऊंगी। अब अपने दिमाग में यह बात बिठा लो कि तुम रंजीत नहीं बल्कि सम्राट मानिक हो।"

"तुम मादाम के लिये प्राण तक देने का वादा कर चुके हो।"

"मुझे याद है- मैं उस सौगंध को भूला नहीं हूँ।" रंजीत का चेहरा एकाएक गंभीर हो गया- मादाम ने मुझे एक नई ज़िन्दगी दी है।"

"आज रात इसका फैसला होना है कि तुम मादाम के लिये क्या कर सकते हो..।"

"दुनिया में सबसे अधिक इंसान किसी वस्तु को प्यार करता है तो वह उसके प्राण और मादाम के एक संकेत पर उस प्रिय वस्तु को भी बलिदान कर सकता हूँ।"

"शायद मादाम की सुन्दरता का जाल तुम पर भी पड़ गया है।"

"ऐसा अभी तक तो सोचा नहीं...।"

“सोचने का इरादा है।” इतना कह कर रीना खिलखिला कर हँस पड़ी।

घुमावदार ऊँची-नीची सड़क पर कार तब तक दौड़ती रही जब तक रात की स्याही ने अपना दामन नहीं फैला लिया।

और कुछ पेड़ों के घने साये में रुक गयी।

रीना रंजीत के साथ मैदान में प्रविष्ट हो गयी।

□□□

राजेश ने झनाक के साथ दोनों आँखें खोल दी और पास पड़ा व्यक्ति उछल कर दो कदम पीछे हट गया। इस हड़बड़ाहट में उसके हाथ से एक बारीक तार का हैंडल छूट गया।

मेज से बिजली की फुर्ती से उछलकर राजेश ने उस हैंडल को सँभाल लिया और अपने चारों तरफ खड़े चार व्यक्तियों को देखकर बार-बार पलके झपकाईं। वह चारों अब तक फुर्ती के साथ रिवॉल्वर निकाल चुके थे।

“क्या फायदा जब डॉ लियो का ऑपरेशन नाकामयाब रह सकता है तो क्या इन रिवॉल्वरों की गोली कामयाब हो पायेगी? प्यारे भाईयों आप सभी तो मेरे साथ दोस्ती का दावा कर चुके थे। अचानक अमानत में खयानत कैसे? माई गॉड माइंड ऑपरेशन...ऐ....ऐ संग्राम की औलाद गोली मत चलाना।”

पर संग्राम ने गोली चला दी.

राजेश चीख मारकर औंधे मुँह गिरा। उसका शरीर फर्श पर स्थिर होते ही डॉ लियो ने कर्णभेदी अट्टहास लगाया। उसके कहकहे का साथ जनपद और संग्राम ने भी दिया।

डॉ लियो ने अपने हाथ की सिरिंज फर्श पर पलट दी और शरीर से श्वेत डॉक्टरी गाउन हटा दिया, चौथा व्यक्ति अभी तक खामोश था।

अचानक उसने मौन तोड़ा।

“लेकिन ऊपर से इसे मारने का आदेश नहीं दिया गया था। इसकी मौत के बारे में क्या जवाब दिया जायेगा?”

“इसकी लाश भरे दरबार में पेश की जायेगी। मैं स्वयं इसका जवाब दे दूँगा। मेरे ख्याल से सम्राट मानिक का दरबार लग चुका होगा। हमें जल्दी लिबास बदल कर वहाँ हाजिर होना है।”

इतना कहकर लियो ने एक बॉक्स पर दो तीन स्विच दबाये। बॉक्स में हल्की सनसनाहट उत्पन्न हुई और साथ ही एक हरी सी स्क्रीन उभर कर स्थिर हो गयी।

उस पर उल्लू की शक्ल उभरती नज़र आ रही थी।

“क्या बात है?” हल्का सा खनकता स्वर कमरे में गूँजा, “क्या ऑपरेशन कामयाब हो गया?”

“न- नहीं!” लियो ने काँपते हुए कहा।

“क्यों?”

“वह मर चुका है।”

“यह बहुत बुरा हुआ। हम संसार के प्रसिद्द लड़ाकों की तलाश थी, राजेश भी उन्हीं में से

एक था। रात्रि के ठीक बारह बजे हमारा दरबार लगेगा, उसकी लाश ताबूत में बंद करके विशाल भवनमें पहुँचाओ। इसके बाद इस रात हमीद, थांगसी और मेकफ का भी ऑपरेशन होगा। फिर हमारा अभियान कल की रात से जारी हो जायेगा। आज दरबार में सभी आदमियों को हाजिर होना आवश्यक हैं। सभी कैदियों को भी लाया जायेगा।”

“ओ के मोसियो।”

स्क्रीन से उल्लू की तस्वीर गायब हो गयी। डॉक्टर लियो ने स्विचों को दबाया और अपने साथियों की तरफ मुड़ गया।

सहसा एक विशेष प्रकार की ध्वनि वातावरण में गूँजी।

“महल के सभी इंसानों को सूचना दी जाती है कि वह अपने सब कार्यों को छोड़कर दरबार में हाजिर हों। सब गुप्त मार्गों को खोला जा रहा है। अपना कार्य छोड़ दो।”

लगभग बीस मिनट बाद एक बड़े विशाल भवन में।

इस समय हाल के चारों द्वार खुले थे। उन विशाल फाटकों पर दो-दो पहरेदार खड़े थे। समस्त दरबारी अंदर आ गये थे। हाल के मध्य में काफी चौड़ा स्थान छोड़ लिया गया था। जिस पर मखमली कालीन बिछा था।

इस समय हॉल में अनेक फानूस रंग-बिरंगे प्रकाश बिखेर रहे थे। अधिक रौशनी के लिये दीवारों से भी प्रकाश फूट रहा था।

मानिक ने बोलना शुरू किया, “हम जंग में बेहोश हो गये थे। उस वक्त कुछ याद नहीं रहा। हाँ कैदियों को बुलाया जाये।”

“एक कैदी मर चुका है।” लियो ने कहा- “उसने विरोध करने की कोशिश की थी महाराज। हम उससे कुछ पूछताछ कर रहे थे। उसके विरोध ने उसका अंत कर दिया।”

“ओह! तुम उस मूर्ख जासूस के बारे में कह रहे हो।”

“जी हाँ सम्राट -।”

“उसकी लाश हमारे सामने लाई जाये। साथ ही अन्य कैदियों को भी दरबार में बुलाया जाये।”

सभा में तब तक खामोशी छाई रही, जब तक एक के बाद एक सभी कैदियों को जंजीरों से जकड़कर वहाँ पर लाया गया। कैदियों में थांगसी, हमीद और मेकफ थे। उनके दोनों तरफ भालों की नोकों का घेरा था। इन तीनों को सिंहासन के लगभग बीस फीट के फासले पर लाकर खड़ा कर दिया गया।

उनके पीछे ही चार आदमी ताबूत उठाकर ले आये। ताबूत को भी जीवित बंदियों के साथ बांध दिया गया।

हमीद के माथे पर सूजन थी।

तीनों मौन रूप से ही सम्राट मानिक के फैसले का इंतजार कर रहे थे।

हॉल में पुनः मौत का सा सन्नाटा छा गया।

हॉल में सभी प्रकार की सूरत विराजमान थी। देशी भी और विदेशी भी। किन्तु सैनिकों की एक-सी वर्दी ने उन्हें एक संगठन का रूप दे दिया था।

“हम सबसे पहले उस मूर्ख जासूस की लाश देखेंगे।”

इतना कहकर मानिक उठना ही चाहता था कि भवन में विचित्र सी तुरही की आवाज गुंजायमान हुई। सम्राट मानिक के साथ राजरानी व हॉल के अन्य व्यक्ति भी चौंक पड़े। वैसा संगीत हमेशा सम्राट के आगमन पर बजाया जाता है।

कदाचित तुरही बजाने वाला पागल हो गया था या भूल में बजा बैठा था। क्योंकि सम्राट मानिक तो इस समय सिंहासन पर विराजमान थे।

“यह कौन बदतमीज है? इस समय तुरही बजाने का क्या मतलब?” सम्राट मानिक ने गरजकर कहा।

“मैं अभी उसकी गर्दन पकड़कर यहाँ ले आता हूँ महाराज।” लियो अचानक उठ खड़ा हुआ-”शायद भूल में ऐसा कर बैठा हो।”

तभी!

हॉल में बैठे लोग चौंककर अपनी सीटों से उछल पड़े। वह उन सबके लिये चमत्कार था। पहरेदार सतर्क हुए। हाल की राहदरी में खट-खट की आवाज उत्पन्न हो रही थी। साथ ही एक लाल प्रकाश का गोल दायरा आगे बढ़ रहा था।

सम्राट मानिक के साथ दरबारी भी कौतुहल से उसी तरफ देखने लगे। भवन में हल्की-फुल्की आवाजें उठने लगीं।

“सब लोग मौन रहें? इसे आने दो।” मानिक ने ऊँचे स्वर में आदेश दिया।

प्रकाश का दायरा और स्पष्ट हुआ।

और तब तो कुछ कंठों से दबी सी चीख निकल पड़ी, जब उन्होंने ठीक उसी राजवंशी पोशाक में लिपटे दूसरे “मानिक” को हॉल के द्वार पर देखा। आश्चर्य की बात, वह अकेला नहीं था। उसके साथ झीनी नकाब में छिपी राजरानी भी थी।

सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि दो अंगरक्षक भी थे।

द्वार पर आकर वह ठिठका और चौंकती निगाह से सिंहासन के निकट खड़े सम्राट मानिक को घूरने लगा।

“यह गुस्ताखी है।” वह हॉल में लाल पीली नजरें फेंकता हुआ दहाड़ा - “हमारी शान में इस प्रकार बदतमीजी करने की कोशिश किस पाजी ने की। हमारा शयनागार बाहर से किसने बंद किया था?”

हॉल में सन्नाटा फ़ैल गया था।

“ओह! तुम कौन हो?” आने वाले मानिक ने सिंहासन के पास खड़े हमशक्ल को क्रोधित निगाहों से देखते हुए कहा-”मैं पूछता हूँ यह सब क्या मज़ाक है ? क्या सभी को अपना जीवन प्यारा नहीं है?”

“कौन हो तुम?” सिंहासन के पास खड़े मानिक ने आने वाले को घूरते हुए कहा ।

“और अगर यही प्रश्न मैं तुमसे पूछता तो?” आने वाला सिंहासन की तरफ बढ़ता हुआ बोला - “ ईश्वर ने खूब शक्ल मिला दी है। कदाचित तुम भी सिंघराज के जासूस हो। हमारे राज्य का तख्ता पलटने आये हो पाजी।”

“खामोश - ।” मानिक चीखा। उसका हाथ म्यान में फँसी तलवार पर पहुँच गया। “मैं पूछता हूँ, तुम कौन हो और यहाँ तक कैसे आये हो। अगर मेरे सवाल का सही जवाब नहीं दोगे तो गर्दन धड़ से अलग हो जायेगी।”

“मौत की धमकी गीदड़ देते हैं। मेरी रगों में राजसी खून है, जासूस की औलाद! म्यान में रखी तलवार पर हाथ मत रखो अन्यथा मेरी यह जंग खाई हुई तलवार भी म्यान से बाहर निकल आयेगी और जब यह तलवार म्यान से बाहर निकल आती है तो खून पिये बिना वापिस नहीं जाती। सिपाहियों गिरफ्तार कर लो इस पाजी को।”

“क्या कहा- ?” पहले वाले ने दाँत पीसे ।

“मैं कहता हूँ गिरफ्तार करो इसको?”

“ठहरो।” सिंहासन पर खड़ा मानिक बोला “ईश्वर ने हम लोगों के सामने विचित्र समस्या खड़ी कर दी है। क्या तुम सब बहरे हो गये हो, इसकी आवाज़ बदली हुई सुनाई नहीं देती, जरूर इसमें दुश्मन की चाल है, यह राजरानी- ओह! मेरा माथा?”

“यह सब क्या मज़ाक है?” अचानक रानी भी उठ खड़ी हुई।

“ओह इस चींटी के भी पर पर निकल आये?” इसके बाद राजरानी के कंठ से बिल्कुल वैसे ही आवाज निकली,”गुस्ताख लड़के- कौन हो तुम? सिंहासन खाली कर दो।”

“नहीं-।” सम्राट मानिक सिंहासन से चीखा,”हम लोगों के बीच एक विचित्र समस्या खड़ी हो गई है और इसका फैसला हम दोनों की तलवारें करेंगी।”

मानिक ने अपनी तलवार खींच ली।

“सम्राटों की तलवारें बज उठने का मतलब है प्रलय का हो जाना।” इस बार लियो ने साहस का परिचय दिया,”इस बात का फैसला हो सकता है कि आप दोनों में से सम्राट मानिक कौन है?”

तब तक आने वाले मानिक भी म्यान से तलवार खींच चुका था। उसके खूँखार नेत्र सिंहासन से उतरने वाले मानिक पर जमे थे, जो ठिठक कर लियो को घूरने लगा था।

“क्या कहना चाहते हो?” उसने लियो से पूछा।

“राजवंश की रीति के अनुसार हर सम्राट की बाईं जाँघपर खानदानी निशान होता है। उस निशान से फैसला हो सकता है कि कौन असली है और कौन नकली।”

“यह ठीक है।” आने वाले ने कहा, “हम दोनों अपनी बाईं जाँघ का कपड़ा तलवार की नोक से फाड़ेंगे चलो जासूस के बच्चे अपनी जाँघ फाड़ कर वह निशान दिखाओ।”

दोनों की तलवारें ठीक उसी स्थान पर पड़ी, जहाँ राजवंशी निशान था। फर्ट की आवाज के साथ लिबास फट गया। दोनों की जाँघों पर एक हरा निशान नज़र आया।

“मैं दोनों निशानों को परखना चाहता हूँ।” इतना कहकर लियो आगे बढ़ा।

दोनों निशानों की जाँच हुई। असली खानदानी निशान देखकर लियो बुरी तरह चकरा गया।

दोनों मानिक एक दूसरे को खूँखार दृष्टि से देखने लगे।

“हाल के बन्दियों को पीछे हटाओ।” सहसा आने वाले मानिक ने कहा- “हमारी तलवार

म्यान से बाहर निकलने के बाद बिना खून पिये वापिस नहीं जाती। हट जाओ राजरानी तुम भी अलग हो जाओ।”

बन्दियों को एक तरफ हटा दिया गया। ऊपर खड़ा अंगरक्षक कासिम रह रहकर अपने भाले को घूरने लगता।

“नहीं...नहीं...।” अचानक सिंहासन पर खड़ी राजरानी ने कहा- “पीछे हट जाओ।” मानिक ने पलटकर उसे डाँटा, “दुनिया में एक ही भयानक आदमी रहेगा या तो यह या फिर मैं... संभलो मेरे हमशक्ल।”

हाल के मध्य का भाग खाली था। दोनों प्रतिद्वन्दी बायें हाथ में हंटर और दाहिने में तलवार लिये एक दूसरे की तरफ बढ़ रहे थे। एक बार तलवारें आपस में टकराकर पीछे हटी और साथ ही हंटर लहराये।

दो बार तलवारें टकरायी और तीसरी बार जब वह दोनों एक दूसरे के सामने तलवारों के जोर से एक दूसरे को पीछे हटाने का प्रयास कर रहे थे। ताबूत का ढक्कन झटके के साथ खुला और कुछ देर पहले मृत राजेश उछल कर बाहर आ गया।

“ठहरो..यह झगड़ा मत करो - इसका फैसला मैं किये देता हूँ।”

“तो भाइयों... आप लोगों को यह जानकर ख़ुशी होगी कि इन दोनों में से सम्राट मानिक कोई नहीं है।”

“क्या मतलब...।” दोनों मानिकों की तलवारें हटकर उसकी तरफ मुड़ गईं। वे दोनों एक स्वर में बोले-”कौन हो तुम?”

“मैं आपका फैसला करने जा रहा हूँ। इन दोनों में से सम्राट मानिक कोई भी नहीं। दरअसल सम्राट मानिक तो मैं हूँ... क्यों मीनाक्षी डार्लिंग।”

“शटअप...।” राजरानी चीखी।

“ओह सॉरी... तो आपको अंग्रेजी बोलनी भी आती है।”

हॉल में कहकहे गूँज उठे।

तभी सिंहासन पर कई सुराख हो गये।

“अरे बाप रे...गोली का इस पुराने जमाने में क्या काम..?” राजेश उछलकर सिंहासन के निकट क्रोध से काँपती राजरानी से लिपट गया।

“बदतमीज...नालायक...।” सम्राट मानिक उस दृश्य को न देख सका और उछलकर तलवार घुमाता हुआ राजेश की तरफ छलाँग लगाई। छलाँग पीछे से लगाई थी पर वह सम्राट मानिक का वार न बचा सका।

दोनों एक दूसरे से गुंथे फर्श पर लुढ़क गये।

ठीक उसी समय राजेश उस तरफ भागा जिधर उसे लियो सरकता नज़र आ रहा था। उसने एक ही छलाँग में लियो को दबोच लिया।

□□□

साइकोमेंशन की इमारत पूरी तरह अँधेरे में डूबी थी। इमारत के फाटक पर सख्त पहरा था साथ ही इमारत की बाहरी दीवार पर विद्युत करेन्ट संचार कर रहा था।

आज सीक्रेट एजेंटों की गोपनीय मीटिंग थी।

पवन काफी दिनों बाद जागा था और उसने अपने सभी एजेंटों को कॉल किया था कि वह निश्चित समय पर मीटिंग में शामिल हों यह आदेश शक्तिशाली ट्रांसमीटरों द्वारा फैला दिया गया था।

वह एजेंट जो दिग्राज के दर्रे में बुरी तरह जख्मी हो गये थे अब स्वस्थ हो चुके थे।

आज की मीटिंग में राजेश शामिल नहीं था।

साइको मेंशन पवन काएक महत्वपूर्ण खुफ़िया अड्डा था। मेंशन का गुप्त हॉल अति सुरक्षित था।

आजकल पवन का रोल फाइव टू अदा कर रहा था। राजेश की अनुपस्थिति में वही सब कुछ करता था इसलिए राजेश उसे अपना हमसाया समझता था। फाइव टू में वह सभी गुण थे, जो एक चीफ में होने चाहिये।

सीक्रेट ब्रांच के सभी एजेंट अपने सीटों पर बैठ चुके थे। उनके आगे ही मेज़ पर डॉक्टर एम सागर वाले केस की फाईलें लगी थीं। पूरा घटना चक्र और खतरनाक सूरतों के चित्र भी फाईल में मौजूद थे।

सामने कुछ ऊँचे स्थान पर स्याह पर्दा पड़ा था। और उसी पर्दे के पीछे से पवन का भर्राया स्वर पूरे हॉल में गूँज उठा।

सभी के चेहरे गम्भीर थे।

पवन का कथन स्पीच के रूप में जारी था।

गृह मंत्रालय से हमारी ब्रांच को आदेश मिला था कि हम डॉ सागर वाले केस की छानबीन करें। डॉक्टर एम सागर भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था और एक जिम्मेदार वैज्ञानिक भी... उन दिनों भारत सरकार एक गुप्त आविष्कार के लिये ऐड दे रही थी और उसकी सुरक्षा की सम्पूर्ण जिम्मेदारी सीक्रेट ब्रांच को सौंपी गयीं थी। डॉक्टर सागर दिग्राज के दर्रे से उपलब्ध होने वाली मिट्टी को सोने में बदलने का प्रयोग कर रहा था इसके लिये उसने दर्रे में एक गुप्त प्रयोगशाला भी बनवायी थी। लेकिन अचानक डॉक्टर को वापिस हिन्दुस्तान आना पड़ा। वह अपना प्रयोग वहाँ भी जारी किये रहा। हालाँकि उसकी सुरक्षा का सम्पूर्ण प्रबन्ध किया गया था, फिर भी अपराधी ने उसका अपहरण कर लिया। यहाँ पर यह बात भी उल्लेखनीय है कि डॉक्टर स्वयं भी अपनी इच्छा से कहीं गायब हो सकता है। हो सकता है एम सागर ही अपराधियों से मिल गया हो या स्वयं अपराधी बन गया हो। यूँ वह कहानी पूरी हो चुकी है, फिर भी वह केस बहुत खतरनाक सीमा तक पहुँच गया है, अतः हमें उसकी पहली श्रृंखला को मद्देनज़र रखते हुये आगे बढ़ना है।”

दिग्राज ऑपरेशन के बाद डॉक्टर को प्राप्त कर लिया गया था। राजेश के कथनानुसार वह सचमुच खातून की आत्मा द्वारा बन्दी बना लिया गया था।

राजेश और कर्नल विनोद दोनों ही हस्पताल से लापता हो चुके थे।

अतः केस और भी रहस्यमय बन गया।

प्रत्यक्ष रूप में राजेश हम लोगों से अलग है, किन्तु फिर भी प्रत्येक महत्वपूर्ण केस में हमारे साथ उसका हाथ रहा है। मैं उस इंसान की कद्र करता हूँ। कर्नल विनोद के अलावा

कुछ अन्य इंसान भी गायब हैं। इतने दिन लापता रहने से जाहिर होता है कि वह लोग किसी अनजाने खतरे के शिकार हुये हैं।

और हमे उनकी स्थिति के बारे में खोज करनी है।

पवन ने अपने इस वाक्य पर आवश्यकता से अधिक जोर दिया। कुछ पल तक वह उसी प्रकार खामोश रहा। उसकी खामोशी से वातावरण अत्यधिक रहस्यमय बन गया था।

पुनः मौन टूटा।

"मैं इतने दिन तक खामोश क्यों रहा, इसकी वजह थी। वह वजह मैं आपको बताता हूँ। हमारे कुछ विवेकशील एजेंटस इस कदर घायल हो चुके थे कि उनसे कार्य नहीं लिया जा सकता था। मुझे आशंका थी कि पुनः उन लोगों पर कोई खतरनाक वार न हो जाये इसलिये उनकी पूरी सुरक्षा की आवश्यकता थी। अब वह पूरी तरह स्वस्थ हैं और कार्य करने योग्य हैं। इस वक्त हमें अपना कार्य वीरानगढ़ में प्रारम्भ करना है।"

वीरानगढ़ का नाम सुनते ही एजेंट कुछ चौंके।

उन्होंने अपनी सीटों पर पहलू बदला।

"आप लोग मुख्य-मुख्य बातें अपनी डायरियों में नोट कर सकते हैं।

नम्बर एक - संदिग्ध व्यक्तियों में संग्रामसिंह आ चुका है। जिसकी हवेली जलालाबाद के निकट है। वह काफी हिंसक व्यक्ति है और इस केस में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

नम्बर दो- डॉक्टर लियो, थांगसी, जनपदसिंह भी संदिग्ध व्यक्ति हैं, जो काफी समय से ग़ायब हो चुके हैं।

नम्बर तीन - एक खूबसूरत औरत फ्रेंटाशिया जो एक आज़ाद देश भूतियालैंड की राजकुमारी बताई जाती है, इस केस में दिलचस्पी ले रही है। याद रहे भूतियालैंड की सरहद दिग्राज के दर्रे से मिलती है। दिग्राज के दर्रे पर किसी भी राष्ट्र का अधिकार नहीं है, यह दोनों ही एटलान्टिक सागर में एक बड़े टापू के रूप में स्थित हैं।

नम्बर चार - खातून की आत्मा वीरानगढ़ के प्रेत महल और दिग्राज का दर्रा - दोनों में दिलचस्पी ले रही है। उसका कुचक्र दोनों तरफ फैला है।

हमें इन बातों को हर समय दिमाग में रखकर आगे बढ़ना है, किसी को कोई शक हो तो पूछ सकता है।

पवन की स्पीच समाप्त होते ही उक्त एजेंटों ने एक दूसरे के चेहरे देखे, इस आशा से कि कोई कुछ पूछेगा।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

उन सबको मौन देखकर पवन ने अपने आदेश जारी किये।

"सेवन एण्ड फाइव आज रात संग्राम की हवेली चेक करेंगे। इस नये ऑपरेशन पर सभी को ट्रांसमीटर दे दिये गये हैं, जो कलाई घड़ी से अटैच हैं। इस एरिये की सूचनायें बराबर हेड क्वार्टर भेजी जायेंगी, नम्बर थ्री अर्थात जोली और नम्बर सेवेन मदन वीरानगढ़ स्टेट के लिये रवाना होंगे। यह लोग प्रेतमहल से अपना कार्य करेंगे। कार्य प्रणाली अपने ढंग से प्रारम्भ कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर पुलिस से सम्पर्क बना सकते हैं। इनकी सुरक्षा

के लिये गुप्त तौर से "ए फोर" और "ए टू" निगरानी करेंगे, वह इन लोगों से सम्पर्क नहीं बनायेंगे। इन चारों इंसानों का अभियान राजेश को खोज निकालना है, और यदि राजेश मिल जाता है तब यह एजेंटउसकी स्कीमों के अन्तर्गत कार्य करेंगे चूँकि ऑपरेशन बहुत खतरनाक है अतः विशेष सावधानी के लिये बुलेटप्रूफ पहनना आवश्यक है ताकि अनजाने ही कोई घातक वार उन पर न हो सके। फिलहाल हमारा प्रथम चरण राजेश को खोज निकालना है।"

मंचनुमा स्थान से तीन बार हरा बल्ब स्पार्क हुआ, जिसका अर्थ था, मीटिंग का समाप्त होना। हाल में खड़खड़ाट हुई और सीक्रेट ब्रांच के एजेंट ख़ामोशी के साथ उठ खड़े हुये।

उन लोगों के निकल जाने के बाद ही मेन्शन से एक स्याह रंग की बन्द कार बाहर निकली, जिसके ऊपरी भाग में दो ग्रीन बल्ब स्पार्क कर रहे थे।

रक्षकों की एड़ियाँ जुड़ गईं। साथ ही हाथ सैल्यूट के लिये उठे।

निश्चित रूप से वह कार पवन की थी। कार की ड्राइविंग सीट पर स्वयं "फाइव टू" बैठा था। साइको मेंशन से निकलने के बाद उसने कार बाईं सड़क पर मोड़ दी और एक अँधेरे से भाग में गुजरते समय कार से हल्का धुँआ उठा।

सीक्रेट ब्रांच के चीफ पवन की वह कार आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित थी। वह तभी इस्तेमाल में लाई जाती थी, जब कोई भयानक केस उलझ जाता था।

अधिकतर उस कार को "फाइव टू" ही इस्तेमाल करता था।

इस समय उसकी कार राजेश के बंगले की तरफ भाग रही थी। जाने क्यों उसे उम्मीद थी कि उसका बॉस राजेश अपने बारे में कुछ न कुछ महत्वपूर्ण सुराग छोड़ गया होगा। इस बार राजेश का ग़ायब होना रहस्यमय था।

राजेश के बँगले में अन्दर सिर्फ एक कमरे में उजाला था। फाइव टू ने नाईट कैप सिर पर झुकाई और बरामदे में पहुँचकर पुशबेल पर उँगली सटा दी। अन्दर कुछ आहट-सी उत्पन्न हुई।

"कौन है?" किसी ने अन्दर से पूछा।

वह आवाज़ भोलू की थी। जिसे तत्काल फाइव टू पहचान चुका था।

"मैं हूँ... दरवाजा खोलो।" उसने अपने असली स्वर में कहा।

"तुम्हारे बॉस आजकल कहाँ हैं?"

"पता नहीं साहब।"

"तुमसे वह आखिरी बार कब मिले थे?"

"कई महीने हो गये।"

"और मेकफ?"

"उसे भी उन्होंने फोन करके बुलाया था। मुझसे फोन पर इतना ही कहा कि घर गृहस्थी का ख्याल रखूँ। वह मेकफ की शादी करवाने जा रहे हैं।"

"तुमने अभी तक मुझे कॉफ़ी के लिये नहीं पूछा।" अचानक फाइव टू ने पूछा। मतलब सिर्फ इतना था कि कुछ देर के लिये भोलू को वह कॉफ़ी बनाने में उलझाना चाहता था।

"हाँ ठीक है साहब...।" भोलू ने गर्दन हिलायी और मुड़ गया। फाइव टू उसकी स्थिति देखकर मुस्कुराता रहा। भोलू कुछ गुनगुनाता हुआ ड्राईंगरुम से बाहर निकल गया।

फाइव टू तुरन्त राजेश के प्राइवेट रूम में पहुँचा। प्राइवेट रूम में जो आधुनिक यंत्र लगे थे उनसे वह पूरी तरह से परिचित था। उसने सर्वप्रथम मेज पर रखी काँच की गुड़िया को घुमाया। एक सपाट दीवार में छोटा सा खाना उभर कर सामने आ गया।

उस खाने में छोटा-सा डिक्टाफोन था जिसका सम्बन्ध एक टेप रिकॉर्ड से रहता था। राजेश को जब आवश्यक सूचना छोड़नी होती थी तो वह उसी रिकॉर्ड पर टेप हो जाया करती थी। उस टेप पर अटैच फोन नम्बर भी दूसरा ही था।

फाइव टू ने रिकॉर्ड का स्विच ऑन कर दिया।

मद्धिम गति से सनसनाहट की ध्वनि काँपने लगी। कुछ देर तक रिकॉर्ड उसी ध्वनि को बिखेरता रहा।

और फिर अचानक "फाइव टू" वह खिल उठा।

"फाइव टू... अटेन्ड फाइव टू अटेन्ड.... चेक दा मैसेज..!" तुरन्त फाइव टू ने उसका स्विच ऑफ किया और जेब से डायरी निकाली। पेंसिल खींचकर वह वहीं कुर्सी पर बैठ गया। उसने तुरन्त रिकॉर्ड का स्विच ऑन किया और डायरी सम्भाल ली।

कोडवर्ड में राजेश का स्वर सुनाई देता रहा।

वह कोडवर्ड सीक्रेट ब्रांच के चन्द एजेंट जानते थे। फाइव टू उन्हें नोट करता रहा। अंत में राजेश ने "ओवर एंड आल।" के साथ मैसेज समाप्त कर दिया।

लेकिन फाइव टू ने रिकॉर्ड का स्विच ऑफ़ नहीं किया। वह बराबर उसी प्रकार सनसनाहट की ध्वनि बिखेरता रहा।

कुछ क्षण बाद ही पुनः कॉल हुई।

"फाइटटू... अटेंड द- फाइव टू अटेंड द मैसेज।"

फाइव टू की आँखों में चमक-सी उत्पन्न होती रही। पुनः कोडवर्डों में मैसेज जारी हो गया। फाइव टू बराबर उसे डायरी पर उतारता रहा। राजेश ने पुनः उन्ही शब्दों के साथ मैसेज समाप्त किया। उसके बाद काफी देर तक सनसनाहट होती रही और फिर टेप का स्विच अपने आप ऑफ़ गया।

फाइव टू प्राइवेट रूम से बाहर निकल आया। अब उसे विश्वास हो चुका था कि राजेश खतरे से बाहर है।

ड्राईंग रूम में पहुँचकर उसने इत्मीनान की साँस ली और डायरी खोलकर बैठ गया, और एक खाली पृष्ठपर उसने कार्डवर्डस को मैसेज में बदला।

पहला मैसेज इस प्रकार था।

"वीरानगढ़ के चप्पे-चप्पे पर सीक्रेट ब्रांच के एजेंटों को फैला दो। मैं मामले की तह तक पहुँच रहा हूँ, कभी भी सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है।"

फाइव टू के होंठों पर हल्की-सी मुस्कान आ गयी। वह समय से पहले ही जाग चुका था। राजेश के सन्देश को पाने से पहले ही उसने एजेंटों को सक्रिय कर दिया था।

दूसरा मैसेज नोट करने के बाद उसने पढ़ा।

“डॉक्टर एम सागर को बेहोश स्थिति में क्वींस रोड की इमारत नम्बर 15 में पहुँचा दो। याद रहे, यह काम रहस्यमय ढंग से होना चाहिये। समाचार पत्रों में यह अफवाह उड़ायी जायेगी कि सागर का अपहरण हो चुका है। सागर को उस इमारत पहुँचाने का कार्य तुम स्वयं करोगे।”

“क्वींस रोड इमारत नम्बर पन्द्रह।” फाइव टू बड़बड़ाया।

□□□

रंजीत नर्म गद्देदार बिस्तर में पड़ा था। उसके दायें-बायें दो इंसान खड़े थे। उनमें से एक सफेद चोगा पहने था जो शक्ल से ही डॉक्टर जान पड़ता था।

रंजीत ने बार-बार दोनों को देखा- तत्काल ही वह चौंककर बैठ गया। वह उस व्यक्ति को पहचानने की कोशिशें करने लगा, जो बहुमूल्य सूट में लिपटा खड़ा था।

उसके दिमाग की नसों में तनाव आ गया।

पिछली घटनायें एक के बाद एक मस्तिष्क से गुजरने लगी, वह मादाम फ्रेंटाशिया के लिये कार्य कर रहा था। उसे वह भयानक रात याद आ गई, जब वह वीरानगढ़ के प्रेत महल में “तीसरी आग” का शिकार हो गया था। वह चेहरे याद आये जिन्हें वह इंसान नहीं बल्कि शैतान समझता था।

सम्राट मानिक- जिसकी शक्ल उससे मिलती थी, जिसकी जाँघ पर वैसा ही खानदानी निशान था। जैसे कि स्वयं उसकी जाँघ पर लगा था। वैसा निशान केवल वीरानगढ़ के खानदानी वंशजों की जाँघ पर पाया जाता था।

उस रात फ्रेंटाशिया ने उसे भी सम्राट मानिक बनाकर दरबार तक पहुँचा दिया था।

फ्रेंटाशिया स्वयं राजरानी बनकर उनके साथ गयीं थी।

उसके बाद क्या हुआ - अब वह कहाँ है?

क्या वह अपने को सुरक्षित समझे? उसकी निगाह पुनः उस व्यक्ति की तरफ उठ गईं। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उस सूरत को उसने पहले भी कहीं देखा है।

“अब तुम पूरी तरह से स्वस्थ हो रंजीत- वैसे डॉक्टर का कहना है कि तीन दिन तुम्हें और आराम करना पड़ेगा।” बहुमूल्य सूट वाला युवक मुस्कराकर बोला।

“मैं सोच रहा हूँ कि मैंने तुम्हें पहले भी कहीं देखा है।” रंजीत उसी मुद्रा में बैठा हुआ बोला।

“प्रिंस मनोहर?” युवक ने उसे याद दिलाते हुए कहा,”मैं जानता हूँ, तुम वीरानगढ़ के वह खोये हुए राजकुमार हो, जो पैदा होते ही दुश्मनों की साजिश का शिकार हो गया था। न - न बुरा मानने की बात नहीं है - मैं राजा चन्द्रसिंह की हालत से वाकिफ था या यदि मैं समय पर उन्हें तसल्ली न देता, तो उनकी जान को खतरा पैदा हो सकता था। अब वह जान चुके हैं कि रियासत वीरानगढ़ का प्रिंस अभी जीवित है। अब वह स्वयं से संघर्ष करेंगे और अपने आपको मौत के मुँह में जाने से रोक लेंगे। मेरे नकली प्रिंस बनने पर तुम्हें अब कोई क्रोध नहीं होना चाहिये।”

रंजीत ख़ामोशी से उसकी बात सुनता रहा।

यह उसके लिये स्वप्न ही था कि वह वीरानगढ़ जैसी ऐतिहासिक स्टेट का खोया हुआ राजकुमार था। उसका पालन-पोषण एक साधारण मछुआरेके परिवार में हुआ था। दुश्मनों ने बचपन में ही उसे किसी नदी की बहती धार में फेंक दिया था, तब मछुआरे ने उसे बचाकर वीरानगढ़ से काफी दूर पहुँचा दिया। वहीं मछुआरे की पत्नी ने उसे अपने बच्चे के समान पाला। उसकी माँ उस पर राजवंश का साया नहीं डालना चाहती थी।

रंजीत को माँ की अगाध ममता मिली थी। और तब वह न जाने क्यों कुछ लोगों के जाल में फँसा। एक रात जब वह सो कर जगा तो उसके समक्ष विचित्र ढंग का इंसान बैठा था... उसने अपना नाम कैप्टेन हमीद बताया था और यह भी कहा था कि उसकी शक्ल किसी कर्नल विनोद नामक व्यक्ति से मिलती है।

अपने शक्ल के उस इंसान को उसने सम्राट मानिक के रूप में देखा था।

"क्या सोच रहे हो...?"

"मैं...कुछ नहीं -- मेरा दिमाग पिछली बातों की ओर भटक गया था. उफ- वह सम्राट मानिक कितना भयानक इंसान था। उस समय यदि मैं जरा भी अपने अभिनय में चूक जाता तो - क्या वह इंसान मुझे ज़िन्दा छोड़ देता।"

प्रिंस मनोहर जो कि वास्तव में रमेश था - हँसा।

"तुम हँस रहे हो?"

"उसने तुम्हें मौत का उपहार देने में जरा भी कमी नहीं छोड़ी थी, लेकिन वह जो कुछ कर रहा था, वह हम लोगों के लिये स्वप्न है। तुम अभी पूरे रहस्यों से अवगत नहीं हो। एक दिन तुम खुद-ब-खुद समझ जाओगे कि जिसे तुमने सम्राट मानिक के रूप में देखा -- वह कौन है?"

"लेकिन उसकी शक्ल...?"

"सिर्फ शक्ल ही नहीं ... बल्कि उसकी बाईं जाँघ पर भी वीरानगढ़ का राजसी निशान था -- वह एक बहुत अजीबों-गरीब कहानी है। वह इंसान इतना कट्टर नहीं है जिस रूप में तुमने देखा- खैर, छोड़ो ! कुछ देर में तुम मादाम से सब कुछ पूछ लेना।"

"मादाम ... क्या मादाम यहाँ हैं?"

"हाँ, इस वक्त हम सब उसके सेवक हैं। उस रात वह प्रेत महल की भयानक सुरंगों के जाल में फँस गयीं थीं -- यह संयोग ही समझो कि मादाम के वीर सेवकों ने जान पर खेलकर उन्हें सुरंग से बाहर निकाल लिया।"

"ओह-- मुझे जल्दी उनसे मिला दो।"

"फ़िक्र न करो- वह कुछ देर में स्वयं तुमसे मिल लेंगी।"

अचानक रंजीत के कानों से विचित्र सा शोर टकराया साथ ही उसे महसूस हुआ जैसे फर्श हिल रहा है। कमरे में हल्का सा भूकम्प आ गया।

"यह शोर और भूकम्प कैसा है?"

"मैंने कहा न इस वक्त तुम्हें कुछ भी नहीं सोचना है। वैसे इतना जान लो कि हम किसी

जहाज में मौजूद है और बाहर लहरों का शोर है। चाँदनी रात होने के कारण लहरें काफी वेग से उठ रही है।"

"जहाज - ।"

"सम्राट मानिक का जीवन खतरे में है -- और उसका जीवन हम तब तक बचाने की कोशिश करेंगे, जब तक खून का आखिरी कतरा भी बाकी है।"

इतना कहकर रमेश झटके के साथ केबिननुमा कमरे से बाहर निकल गया। रंजीत अवाक् सा उसे जाते देखता रहा। उसकी समझ में रमेश की बातें नहीं बैठी थीं।

कभी सम्राट मानिक से मुठभेड़ और कभी उसकी ज़िन्दगी की रक्षा-- अजीब गोरख धन्धा।

डॉक्टर ने उसके सिर के नीचे तकिया लगा दिया।

रंजीत ने उसे घूरा।

"आप भी कोई बम का गोला छोड़कर बाहर जा सकते हैं।"

"हमारा काम सिर्फ घायलों को बचाना है न कि उनके सामने बम का गोला छोड़ने का।" कहकर डॉक्टर बाहर चला गया।

रंजीत अब खाली दरवाज़े को घूर रहा था। वह किसी और शक्ल के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था लेकिन काफी देर तक कोई दूसरी शक्ल दिखाई नहीं दी।

उसने करवट बदलकर लिहाफ ओढ़ लिया और आँखें मूँद लीं। कुछ देर में ही आहट हुई। रंजीत ने लेटे-लेटे घूम कर देखा- केबिन में प्रविष्ट होने वाली सुन्दर लड़की थी उसके साथ सफ़ेद लिबास में लिपटा इंसान हाथ में ट्रे लिये आ रहा था।

युवती को देखते ही रंजीत उछलकर बैठ गया। उसने पहली ही नज़र में रीना को पहचान लिया जो होंठों पर मिलन की मादक मुस्कान बिखेरे थी। रीना वही लड़की की, जो रंजीत के जीवन में अनजाने ही बहुत करीब आ गयीं थी। जिसके लिये उसने एक इंसान का कत्ल कर दिया था, हालाँकि रंजीत यही जानता था कि उसने रीना के लिये एक व्यक्ति को जान से मार दिया, किन्तु वास्तविकता कुछ और थी।

रमेश का कथन था कि रीना स्वयं फ्रेंटाशिया है। वह उसी का पीछा करते हुआ फ्रेंटाशिया तक पहुँचा था। वह यह भी जानता था कि महज रंजीत को नर्वस करने के लिये उस व्यक्ति को मरने का नाटक खेलना पड़ा, जबकि वह पिस्तौल जिसके द्वारा रंजीत ने उस पर गोली छोड़ी थी नकली थी।

इतना तो सत्य था कि पिस्तौल नकली थी और रीना द्वारा रंजीत को फँसाया गया किन्तु यह गलत था कि रीना और फ्रेंटाशिया एक युवती के दो रूप हैं। असलियत यह थी कि रीना फ्रेंटाशिया की सेविका थी। फ्रेंटाशिया ने उसे इस प्रकार ट्रेंड कर दिया कि वह आसानी से फ्रेंटाशिया का रोल कर सके।

यूँ फ्रेंटाशिया की असली सूरत से चन्द इंसान ही परिचित थे। रमेश ने स्वयं उसकी असली सूरत नहीं देखी थी। वह केवल आवाज़ के सहारे उसे पहचानता था। दूसरी पहचान वह नीली आँखों से करता था।

फ्रेंटाशिया की आँखों में काफी विशेषता थी। वह किसी हद तक इंसान को हिप्नोटाइज (आँखों द्वारा वशीकरण) कर सकती थी। उसकी आँखें देखने के बाद इंसान अपने को भुला सकता था।

किन्तु हिप्नोटिज्म अधिक समय तक इंसान को वश में नहीं रख सकता था और असाधारण इंसानों को हिप्नोटाइज करना आसान नहीं था। अलबत्ता वह रंजीत को हिप्नोटाइज कर चुकी थी।

रीना को देखते ही उसके दिलो-दिमाग पर रोमांस की लहरें दौड़ने लगीं। वह अपलक रीना को निहारता रहा।

"मैं तुम्हारे लिये जलपान लाई हूँ।" रीना ने उसके बेड के समीप पड़ी चेयर पर बैठते हुए कहा- "साथ ही स्वस्थ होने की बधाई भी दे रही हूँ।"

"तुम्हें देखकर मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गया रीना... वह कुछ घन्टे की मुलाक़ात केवल स्वप्न बनकर रह गयी।"

"यह बात नहीं है डियर रंजीत... तुम्हारे बिना मेरा एकाकी समय कैसे गुजरा, यह मैं ही जानती हूँ। आज तुम्हें बहुत दिनों बाद देखा है रंजीत, और मादाम का कहना है कि बहुत जल्द हम दोनों की शादी कर दी जायेगी।"

"शादी--।" इस शब्द को सुनते ही उसका माथा झनझना गया। एक बारगी पुजारी सरोवर की लड़की माया का चेहरा उसकी आँखों के आगे घूम गया। जाने क्यों उस मासूम चेहरे के आगे उसे रीना फीकी लग रही थी।

जब रंजीत दर-दर भटक रहा था- वीरानगढ़ की गलियों में पनाह लेने के लिये परेशान था। तब उसे सरोवर अपनी कुटिया में ले गया। वहीं माया उसके बहुत निकट आ गयीं थी।

वह आजकल की लड़कियों के समान एडवांस नहीं थी। सेक्स के मामले में वह रीना जैसी नहीं थी। रीना का जीवन अपराधियों के बीच गुजरा था और माया वह फूल थी, जो बाग़ में अभी-अभी खिला हो। जिस पर किसी भँवरे ने अपने पंख न फैलाये हों।

रंजीत ने उससे वायदा किया था कि यदि जीवन में कभी वह अपना हमसफर बनाने का ख्वाब देखेगा तो वह केवल माया होगी। माया के अलावा वह किसी को अपना जीवन साथी नहीं बनाएगा।

बहुत पुराने वायदे, कुछ घण्टे की मुलाक़ात, जन्म लेने वाले अफ़साने सभी सहज ही उसके दिमाग में घूमने लगे। वह उनमें खो गया। निगाह उठाकर देखा तो उसे रीना भी जैसे माया नज़र आई।

जैसे माया उसके सामने खड़ी मुस्करा रही हो।

वह बेड से उठा। रीना के करीब पहुँच कर उसकी बाहें फ़ैल गयी। रीना ने कोई भी विरोध नहीं किया।

जलपान की ट्रे रखने वाला नौकर खंखारा - रंजीत ने झटके के साथ रीना को अलग हटा दिया और तब उसे एहसास हुआ कि इस समय उसके सामने माया नहीं बल्कि रीना खड़ी है। रीना तो अब भी मुस्करा रही थी किन्तु रंजीत गम्भीर हो चुका था।

"जलपान कर लीजिये -- अभी कुछ समय बाद मादाम सभी को एक जरूरी मीटिंग में

कॉल करने वाली हैं। अनुमान है कि हमारा जहाज आज की रात हिन्द महासागर क्रॉस कर जायेगा। हम लोग इस समय मेडागास्कर की दक्षिण दिशा में बढ़ रहे हैं। आगे की यात्रा के बारे में मादाम कुछ बताने वाली हैं। मुझे इसलिए भेजा गया था।"

रंजीत कुछ नहीं बोला।

उसने जलपान शुरू किया। कुछ समय उपरान्त वह रीना के साथ केबिन से निकल आया। जहाज में जगह जगह रायफल मैन सतर्क टहल रहे थे। रीना उसे जहाज के ऐसे भाग में ले गई, जहाँ पहरा और भी सख्त था। वह भाग जहाज का अग्रिम भाग था।

एक बड़े से हॉलनुमा कमरे में वह रुके।

हॉल के दरवाजे पर उन दोनों को चेहरे छिपाने के लिये नकाबें दी गईं और फिर उन्हें टोकन पकड़ा दिया गया। टोकन पर सीट नम्बर और एजेंट नम्बर मौजूद था। रंजीत का नम्बर सेवेन था और रीना इलेवेन- दोनों हाल में दाखिल हो चुके थे।

कुछ समय उपरान्त ही हॉल के सभी बल्ब बुझ गये और फिर अँधेरे में कुछ आहट उत्पन्न हुई। उसके बाद पुनः तेज प्रकाश हो उठा। अब उस सुनहरी कुर्सी पर चमकदार सुनहरे नकाब में कोई बैठा था।

"मादाम फ्रेंटाशिया के सेवकों....।" कुर्सी पर बैठे सुनहरे नकाबपोश की आवाज़ में हल्की भर्राहट थी। उस आवाज़ में हल्का बारीकपन था लेकिन फ्रेंटाशिया के एजेंटउस आवाज़ को अच्छी तरह पहचानते थे- वह आवाज स्वयं फ्रेंटाशिया की थी।

"आज से पन्द्रह दिन पूर्व हमारी टीम एक रोमांचकारी यात्रा पर रवाना हुई थी उस समय किसी भी एजेंटको यह नहीं बताया गया था कि हमारी यात्रा कहाँ तक होगी। कुछ एजेंटस यात्रा के बारे में थोड़ा बहुत जानते भी हैं किन्तु इसका पूर्ण ज्ञान किसी को ज्ञात नहीं है। आज की रात हिन्द महासागर की सीमा पार हो जायेगी। यहाँ तक हमारे जहाज को कोई ख़तरा नहीं था। हिन्द महासागर पार करने के बाद हम एटलांटिक महासागर में प्रवेश करेंगे। दक्षिण एटलांटिक सागर के गर्भ में अभी सैकड़ों रहस्य दफन है। खासकर दक्षिण ध्रुव के निकटवर्ती क्षेत्र में खतरों का जाल फैला है। एटलांटिक के हिमखण्ड और व्हेल जैसी मछलियों से आप लोग अनभिज्ञ नहीं। फिलहाल वहीं तक हमे जाना है। इससे पहले कि मैं यात्रा के बारे में खुले रूप में समझाऊं मैं चाहती हूँ कि आप सब अपनी मेज के सामने रखी फाइल पर जुड़ा नक्शा खोल लें।"

कुछ देर खामोशी छाई रही।

अंग्रेजी भाषा रंजीत अच्छी प्रकार बोल सकता था अतः फ्रेंटाशिया का एक-एक शब्द वह अपने दिमाग में नोट करता रहा।

उसने भी फाईल खोल डाली। प्रथम पृष्ठ पर एक मुड़ा हुआ नक्शा था .... रंजीत ने उसे पूरा खोलकर फैला दिया। वह बड़ा नक्शा केवल अटलांटिक महासागर के दक्षिणी भागों का था। उसमें अनेक जगह रेड पेंसिल से चिन्ह लगाये गये थे।

अफ्रीका गणराज्य संघ का प्रसिद्ध नगर विटर फाउंटेन से सिधाई में दाई तरफ जो रेड निशान बना है वह एक छोटा-सा निर्जन टापू है। हमें इसके पार्श्व भागों से गुजरना है। यह जगह विटर फाउंटेन से पचास किलोमीटर दूर है। यही एक ऐसा स्थान है जिससे हमारा

जहाज अफ्रीका महाद्वीप के सबसे कम दूरी पर गुजरेगा , बाकी काफी लम्बाई का घेरा बाँधकर जहाज बढ़ रहा है। उसके बाद द्वीप और ड्रिस्ट्रान्डा कुन्हा टापू हैं। इनको क्रॉस करने के उपरान्त हो सकता है कि कुछ अनजान टापुओं के समुद्री लुटेरों से हमारा टकराव हो जाये। जहाँ डार्क रेड पेन्सिल के निशान हैं उन स्थानों पर ऐसे कांड हो चुके हैं, जबकि लुटेरों ने पूरे जहाज लूट कर आग लगा दी। इस ओर से आप लोगों को काफी सर्तक रहना है। इन खतरों से गुजरने के बाद हम भूतियालैंड की जमीन पर पाँव रखेंगे, जहाँ आपको किसी प्रकार का खतरा नहीं उठाना पड़ेगा। यह हमारी यात्रा की प्रमुख बातें थी, इसके साथ ही मैं यह भी बता देना चाहती हूँ... अतः भूतियालैंड में कदम रखने के बाद आप सभी को ज़िन्दगी का मोह त्याग देना होगा। हमारी एक टीम भूतियालैंड से दिग्राज नामक टापू में पहुँचेगी और दूसरी टीम दिग्राज से तीस किलोमीटर बायें सिंघराज में जायेगी। दिग्राज जाने वाली टीम का नेतृत्व एजेंट सेवेन और नाइन करेंगे और दूसरी टीम का नेतृत्व स्वयं मैं करूँगी। यह दोनों ऑपरेशन एक निश्चित तारीख से तय हो जायेंगे।

एजेंट सेवेन रंजीत था। और एजेंटनाइन रमेश अर्थात इन दोनों को दिग्राज के ऑपरेशन पर जाना था। सभी एफ. एजेंट अपने नक्शे पर झुके थे।

“अब आप लोग अपनी फाइल का पृष्ठ पलटिये।” फ्रेंटाशिया ने कुछ देर मौन रहने के बाद कहा - “फाइल में नम्बर एक तस्वीर एक अमेरिकन डॉक्टर की है, जिसका नाम लियो है। लियो एक वैज्ञानिक होने के साथ अपराधी भी हैं, जो इस समय निश्चित रूप से अपने दल के साथ दिग्राज जा चुका है। सर्वप्रथम हमे इन लोगों के मुख्य अड्डों को खोज निकालना... इस दल का सरगना एक अनजानी शक्ति “खातून की आत्मा” है। दिग्राज ऑपरेशन पर जाने वाले व्यक्तियों को यह बात नोट कर लेनी चाहिये, कि दिग्राज के कुछ कबीलों में खातून को देवता स्वरुप माना जाता है। वास्तविकता यह है कि खातून अब एक भयानक दल में बदल चुका है और हम लोग प्रत्यक्ष में इन्हीं के प्रतिद्वंदी है। यह दल दिग्राज के दर्रे में किसी महत्वपूर्ण वस्तु को खोज रहा है। हमारा ध्येय उस वस्तु को हर हालत में प्राप्त करना है। यह परिस्थिति बताएगी कि हमें उस वस्तु को हासिल करने के लिये कौन सा कदम उठाना पड़ेगा। डॉक्टर लियो के बारे में पूर्ण विवरण आपको अपनी फाइल में मिल जायेगा। दूसरी तस्वीर कुछ खतरनाक इंसानों की हैं। जो डॉक्टर लियो के संकेतों पर चल रहे हैं।

संग्रामसिंह, जनपदसिंह जो व्यक्ति संदिग्ध लिस्ट में जा चुके हैं, उनकी तस्वीरें फाइल में मौजूद हैं। अवसर पड़ने पर हम अब उन लोगों को समाप्त करने में जरा भी नहीं हिचकिचायेंगे।

पृष्ठ पाँच पर कैबिनेट साइज का बड़ा चित्र “सम्राट मानिक” का है। ध्यान रहे, यह बहुत महत्वपूर्ण इंसान है। संसार इसे कर्नल विनोद के नाम से जानता है। किन्तु कुछ विकट परिस्थितियों में फंस जाने के कारण वह अपना मानसिक संतुलन गँवा बैठा है और इसके दिमाग में भयानक परिवर्तन हो चुका है।

सम्राट मानिक उर्फ़ विनोद इन लोगों को मौत के घाट उतारने में जरा भी नहीं हिचकिचायेगा, मगर हर हाल में हमे यह कोशिश करनी है कि विनोद पर कोई ऐसा घातक वार न हो, जिससे उसके प्राण संकट में पड़ जायें। इस संकेत का तुम्हें हर कदम पर

ख्याल रखना है चूँकि यह जल्दी से हाथ नहीं आ सकता, अतः इसका अपहरण नहीं किया जा सकता। भारत से यह लोग बड़ी सुरक्षा के साथ दिग्राज की और रवाना हुए हैं। इसका पूरा दल पनडुब्बियों द्वारा दिग्राज पहुँचा है।

इस बारे में अभी पूर्ण ज्ञान नहीं है कि यह दल दिग्राज पहुँच चुका है अथवा नहीं... किन्तु सूत्रों से यह प्रमाण मिल चुका है कि इसका दल भारत के किसी किनारे से पनडुब्बियों द्वारा रवाना हो चुका है। जितनी बातें मैंने बताई हैं? क्या उनमें से किसी को कुछ पूछनाहै?"

हॉल में सन्नाटा छाया रहा।

"फाइल में सभी की ड्यूटियाँ लिखी है, अब आप लोग उसी रोल में कार्य करेंगे।"

फ्रेंटाशिया के शब्दों के साथ ही हाल में अँधेरा छा गया। उसके बाद जब रौशनी जली तो फ्रेंटाशिया की सीट खाली हो चुकी थी।

हॉल में बैठे एजेंटों ने अपनी-अपनी फाइलें सम्भाली और द्वार से बाहर निकल गये। रंजीत उस समय रीना से अलग हो चुका था।

सभी एजेंट अपने केबिनों में जा चुके थे।

बाहर समुद्र की अशांत लहरों पर शीतल चाँदनी का पीला प्रकाश फैला था। लहरें जैसे चाँद को छू जाना चाहती थी।

जहाज़ के डेक पर सतर्क पहरा था... ऊपर काफी दूर तक सर्च-लाइट का प्रकाश घूम रहा था।

इस समय मस्तूल के पास मादाम फ्रेंटाशिया के वह गुलाम कार्य कर रहे थे , जो लड़ाके होने के साथ ही समुद्री भागों के दूरदर्शी ज्ञाता थे।

जहाज़ अपनी एक रफ़्तार के साथ हिन्द महासागर की सीमाओं के अन्तिम छोर की तरफ अग्रसर हो रहा था।

□□□

जेम्सन को लेकर राजेश क्वींस रोड की कोठी नम्बर पन्द्रह पहुँचा। अभी दो रोज पहले राजेश ने वह कोठी किराये पर ली थी। आस-पड़ोस के लोग यही जानते थे कि उसे प्रिंस डिक्सन ने किराये पर लिया था।

एक और सूरत वहाँ मौजूद थी।

वह थे वीरानगढ़ स्टेट के राजा चन्द्रसिंह, जिन्हें राजेश स्वयं वीरानगढ़ से लौटते समय अपने साथ ले आया। यूँ प्रेतमहल पर आर्मी का सख्त घेरा पड़ गया था, किन्तु उस रात जब राजेश खाली हाथ महल से निकलना पड़ा, तभी उसे एहसास हो गया था कि अब प्रेतमहल में उसे कुछ भी नहीं मिलेगा।

केस का पूरा सुराग पाने के लिये उसे डिक्सन के रूप में राजा चन्द्रसिंह से मिलना पड़ा। उसने वायदा किया था कि वह हर हालत में वीरानगढ़ के खोये हुये राजकुमारों को राजा साहब तक पहुँचा देगा...परन्तु इसके लिये राजा साहब को कुछ कुर्बानी देनी पड़ेगी।

उन्हें राजधानी चलना पड़ेगा।

राजा साहब को उसने इस वेष में रखा ताकि कोई आसानी से पहचान न सके। सुबह ही वह बाहर निकल गया था और जेम्सन को भी उसी कोठी में घसीट लाया।

जेम्सन को उसने एक कमरे में ले जाकर बन्द कर दिया।

बेचारा जेम्सन कुछ भी नहीं समझ पा रहा था। वह राजेश से कुछ पूछता तो उसका जवाब उसे ऊट-पटाँग मिलता था। अतः वह मौन साधकर कमरे में लेट गया। राजा चन्द्रसिंह कोउसने यही बताया कि वह कोई शत्रुओं का एजेंट है। उसने यह भी बताया कि शत्रु उनके पीछे लग गये हैं, अतः अब काफी सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

और जब रात्रि का आगमन हुआ तो...।

उसकी कार्य प्रणाली अजीबो गरीब ढंग से सामने आई। उसी रात फाइव टू ने सिल्वर हाऊस से डॉक्टर एम सागर को रहस्यमय ढंग से बाहर किया और बेहोशी की हालत में उसने उसे क्वींस रोड की पन्द्रह नंबर की इमारत के कम्पाउंड में छोड़ दिया। अपना कार्य समाप्त करने के बाद जब वह बाहर खड़ी कार के समीप पहुँचा तो उसे स्टेयरिंग व्हील पर एक कागज लिपटा नजर आया।

तुरन्त उसने लिपटे हुये कागज को उतार कर पढ़ा। पेंसिल से जल्दी में लिखा गया था। देखते ही वह पहचान गया था कि लिखावट राजेश की है-

लिखा था-

“योजना बदल गई है... मदन, जौली और माथुर के साथ स्वयं तुम भी आज की रात पूरी तरह तैयार हो जाओगे। तुम्हारे पास एक अच्छे किस्म के हेलीकाप्टर की व्यवस्था होनी चाहिये। इसी समय गृहमंत्रालय को कॉल करो कि डॉक्टर सागर का अपहरण हो गया है, अतः अपराधी की खोज के लिये तुम्हें हर वस्तु भारत सरकार द्वारा आज रात ही मिल जायेगी। पूरी व्यवस्था होते ही ट्रांसमीटर द्वारा मुझे संदेश दो। इस कोठी में दिलचस्पी लेने की आवश्यकता नहीं।”

फाइव टू ने उस कागज़ को लाइटर से जला दिया। इधर राजेश ने राजा साहब को एक ऐसे कमरे में रख छोड़ा था, जिसके दरवाजे बड़े मजबूत थे। वह द्वार आसानी से टूटने वाला नहीं था।

राजा चन्द्र सिंह नहीं जानते थे कि अपने बच्चों की खोज में जिस आदमी के साथ वह बहरूपिये बने घूम रहे हैं, वह उनके लिये विपत्ति साबित होगा।

हुआ भी यही।

राजेश जब कमरे में घुसा तो उसने अचानक चन्द्रसिंह पर हमला कर दिया। वार इतना सख्त था कि राजा साहब का बूढा शरीर हिल भी नहीं सका। वह बिना आवाज किये बेहोश हो गया।

राजेश ने तुरन्त उन्हें दूसरे कमरे में पहुँचाकर बन्द कर दिया। उसके बाद उसने पूरी कोठी में अँधेरा कर दिया। कम्पाउंडसे वह डॉक्टर एम सागर के बेहोश शरीर को उठाकर लाया।

और सागर को भी उसी कमरे में डाल दिया गया।

उसी कमरे में एक टेपरिकॉर्डर रख दिया गया। अपना काम समाप्त करने के बाद उसने

दोनों के चेहरों पर जल के छीटें मारे और तेजी के साथ कमरे की रौशनी जलाकर बाहर चला गया।

बाहर से उसने द्वार बन्द कर दिया।

पहले होश आया सागर को.. जो एक लम्बे समय से पागल हो गया था। उसने पागलों के समान आँखें नचाकर चारों तरफ देखा फिर राजा चन्द्र सिंह के शरीर को बुरी तरह घूरने लगा। उसके बाद वह हँसा... ठहाके मारकर हँसता रहा। हँसते-हँसते उसने राजा चन्द्र सिंह को झिंझोड़ना शुरू कर दिया।

"नहीं मिलेगी...उल्लू के पट्ठों...सूअर के तख्तों... नहीं मिलेगी...बंदरिया की दुम...राजा की पूँछ नहीं मिलेगी। वह तभी मिलेगी जब मैं बन्दर को इंसान और इंसान को बन्दर बनाने का आविष्कार पूरा कर लूँगा, हाहाहा क्यों मिस्टर इंसान..तुम्हें क्या तकलीफ है? क्या तुम भी बन्दर बनकर बंदरिया से इश्क लड़ाओगे?"

राजा चन्द्र सिंह को होश आ गया।

"हे .. राजा की दाढ़ी में तिनका. .तुम्हारी दाढ़ी में कबूतर वाला क्या खायेगा?" सागर ने राजा साहब की दाढ़ी पकड़कर हिलाई तो नकली दाढ़ी नुच गयी। अवाक् सा सागर कुछ देर तक दाढ़ी के बालों को घूरता रहा और फिर उसने बच्चों के समान तालियाँ बजायी।

"डॉक्टर सागर--।" राजा साहब चौंककर उसे देखने लगे।

"हां हां बड़ी मजेदार है यह दाढ़ी। इसे मैं लंगूर की पूँछ पर चिपकाऊंगा। तुम बुरा मत मानना मिस्टर इंसान..हम बन्दर को आदमी और आदमी को बन्दर बनायेंगे। आदमी अगर बन्दर नहीं बन सका तो लँगूर जरूर बन जायेगा।"

"डॉक्टर एम सागर!" राजा साहब जोर से चीखे "तुम्हें क्या हो गया है और मैं... हम लोग कहाँ हैं और वह.....।"

राजा साहब उठकर दरवाज़े की तरफ झपटे।

राजा साहब ने दो-तीन बार दरवाज़े को थपथपाया।

"हम लोग किस विपत्ति में फँस गये हैं। हे ईश्वर! यह सब क्या हो रहा है, मुझे मौत क्यों नहीं मिल जाती?"

"शी! मिस्टर सागर! यह सब क्या है? मैं अपने कुमारों के लिये तरस गया हूँ, यह साजिशें तभी से शुरू हुई सागर जब तुमने-तुमने मुझे उकसाया, तुमने गड़े मुर्दे उखाड़े। न तुम खज़ाने के चक्कर में पड़ते और न आज हमें यह दिन देखने पड़ते। अब तो मैं भी स्वयं किसी अनजान आदमी की कैद में फँस गया हूँ। अब तुम खामोश हो, क्या इन सब बातों के जिम्मेदार तुम नहीं हो?"

अचानक सागर के कंठ से एक विचित्र स्वर निकला।

वास्तविकता यह थी कि वह कोई गले की करामात नहीं थी बल्कि कोई अनजानी भाषा थी। सागर उसी भाषा में कुछ बड़बड़ा रहा था। राजा साहब के चेहरे पर अनेकों भाव आयें।

और उसके बाद आश्चर्यजनक चमत्कार हुआ।

वह स्वयं भी उसी भाषा में बड़बड़ाने लगे थे। काफी देर तक यही किस्सा चलता रहा।

इस समय सागर जरा भी पागल नजर नहीं आ रहा था। उसका चेहरा पूर्णतया गम्भीर था। लेकिन वह दोनों टेप रिकॉर्डर से पूरी तरह अनभिज्ञ थे।

कुछ समय उपरान्त ही दोनों ने दरवाजे पर टक्करें मारनी शुरू कर दी।

राजेश उस समय बाहरी कमरे में बैठा च्युइंगम चबा रहा था।

सर्वप्रथम उसने कलाई घड़ी में लगे स्विच को ऑन किया और उससे मुँह सटाये रहा। वह कोडवर्ड से ट्रांसमीटर पर कुछ आदेश जारी कर रहा था। ट्रांसमीटर पर सूचना देने के बाद वह उस कमरे का द्वार खोले बिना बाहर निकल गया। वह सीधा उस कमरे में पहुँचा जहाँ उसने जेम्सन को बन्द कर दिया था।

कमरे में जेम्सन के खर्राटे गूँज रहे थे।

राजेश ने दरवाज़ा खोला और रौशनी जला दी।

“ए दोपहर की औलाद!” राजेश ने उसका कॉलर पकड़कर सीधा किया। हड़बड़ा कर जेम्सन ने आँखे खोल दीं। उसे अपने सामने प्रिंस डिक्सन के रूप में राजेश खड़ा नज़र आया।

“क...क्या है .... अब क्या सोने भी नहीं दोगे।”

“शटअप ...तुम्हारा बाप खतरे में है। और तुम सोने जा रहे हो।”

“श्रीमान ... ममुझे आप गोली मार दें तो अच्छा है। मैं इस ज़िन्दगी से तंग आ गया हूँ।”

“कमल कांत से मिले बिना नर्क जाओगे।”

“कमल.. क्या कमल बॉस आ गये।”

“जित्तू की औलाद, ठीक तरह होश में आ जाओ नहीं तो थप्पड़ इतनी जोर से पड़ेगा,- कि सारी ज़िन्दगी भर सोते समय गाल दर्द करते रहेंगे। इस वक्त मैं जो कह रहा हूँ। तुम्हें वही करना है। सबसे पहले मैं तुम्हें सौ का नोट दे रहा हूँ। इस कोठी में सभी सामान मौजूद है। तुम्हारी शेव भी काफी बढ़ी है और अब तुम्हे क्लीन शेव बनना है। इस समय वक्त क्या हो रहा है।”

“मैं क्या जानू? मगर आप तो सौ के नोट की बात कर रहे थे।”

“बाकी बातें शायद तुमने नहीं सुनी।” राजेश ने उसकी गर्दन को झटका दिया।

“मैं सब सुन रहा हूँ श्रीमान - मगर आप मुझे जेम्सन कहेंगे। मेरा नाम जितू नहीं है।”

“आज से न तुम जितू रहोगे और न ही जेम्सन।”

“फिर क्या नेम चेंजिंग सेरेमनी।”

“शटअप!” राजेश गर्जा- “यहाँ कई सूट रखे हैं उसमें से तुम कोई भी सूट इस्तेमाल कर सकते हो। उसे पहनने के बाद तुम उस कमरे में पहुँचोगे, जिसका दरवाज़ा पीटा जा रहा है। बस तुम्हें दरवाजा खोलकर कोठी से भाग निकलना है... सौ का नोट तुम्हारी जेब में रहेगा। किसी भी कटिंग सैलून में पहुँचकर शेव बनवाओगे, उसके बाद रात के ठीक बारह बजे मुझे कैफ़े चार्मिंग में मिलना। तुम्हारा नाम एडोलिन होगा और तुम मेरे सेक्रेटरी रहोगे। कैफ़े चार्मिंग से तुम तब तक नहीं हिलोगे जब तक मैं नहीं आ जाऊँगा।”

“मगर श्रीमान..।” अचानक जेम्सन उदास हो गया।

“अब क्या बात है?”

“क्या बिना शेव बनाये काम नहीं चल सकता।”

“चल सकता है।” राजेश ने कोमल स्वर में कहा।

“तो फिर वही बता दीजिए...दरअसल मुझे अपनी दाढ़ी के कोमल बालों से प्यार हो गया है। हर समय ऐसा लगता है जैसे किसी हसीन प्रेमिका के रेशमी बाल मेरे गालों पर बिखरे हुए हों और फिर कमल बॉस का भी कहना था कि यदि मैं दाढ़ी कटवा लूँगा तो लोग मुझे बिना बाँस का मर्द, वह क्या कहते हैं यानि कि न औरत और न मर्द...।”

“हिजड़ा!”

“जी हाँ वही लगने लगूँगा।”

इससे पहले कि वह कुछ और कहता राजेश ने उसे सौ का नोट थमाया साथ ही एक रिवॉल्वर भी दिया।

“यह तुम्हारी सुरक्षा के लिये है। ध्यान रहे शेव बनाकर शाइनिंग मेकअप के साथ कैफ़े चार्मिंग पहुँचोगे ... अगर नहीं पहुँचे तो इसी रिवॉल्वर की गोली तुम्हारे शरीर में उतार दी जायेगी।”

कहकर राजेश तेजी के साथ बाहर निकल गया।

कुछ क्षण बाद ही कोठी में उधम मच गया। राजेश ने मेन स्विच भी ऑफ कर दिया था। भागते क़दमों की आवाजों से पूरी कोठी गूँज उठी। बाहर कम्पाउंड में भी कुछ साये मंडराते नज़र आये।

उसी समय एक काले रंग की वैन कोठी के फाटक के सामने रुकी।

राजेश बड़ी फुर्ती के साथ उस कमरे में पहुँचा जहाँ कुछ देर पहले उसने सागर और राजा चन्द्रसिंह को कैद किया था। उसने गुलदस्ते के रूप में रखे टेपरिकॉर्डर को उठाया और तेजी के साथ कोठी के पिछले हिस्से में जा पहुँचा।

कोठी के पीछे अँधेरी सड़क थी।

वह उसी पर उतर गया। कुछ दूर पैदल चलने के उपरान्त उसने एक रौशन सड़क का रुख किया।

वैन की ड्राइविंग सीट पर नाईट कैप और ओवरकोट में छिपा एक इंसान बैठा था। उसने वैन से बाहर सिर निकाला।

“क्या बात है...? यह...”

“बात बड़े पते की है। राजेश ने कहा और उसे ढकेलता हुआ अन्दर प्रविष्ट हो गया। आते ही ड्राइविंग सीट पर जम गया और बिना उस व्यक्ति के बात किये उसने वैन भी स्टार्ट कर दी।”

“अरे आप... आप और यहाँ?” यह आवाज मदन की थी जो उसे विस्फ़टित नेत्रों से देख रहा था।

“हाँ प्यारे शागिर्द.. इस बार हमने आसमान में छलाँग लगाई और जब नीचे गिरे तो खजूर पर लटक गये। बड़ी कठिनाई से खजूर से छुटकारा पाकर आया हूँ.. तुम्हे उस चूहे ने

भेजा होगा।"

"देखो मैं आपको गुरु जरूर मानता हूँ। इसका मतलब यह नहीं है कि आप हमारे बॉस को कुछ भी कहो।"

"छोड़ो...इधर कैसे भटक आये।"

"पहले मैंआपके बारे में जानना चाहूँगा।"

"अपना किस्सा मैं बता चुका हूँ। अलिफ़-लैला के समान लम्बी कहानी है। बड़ी कठिनाई से इमारत नम्बर पन्द्रह में उन लोगों को चकमा दे सका।"

"मुझे बॉस ने ट्रांसमीटर पर आदेश दिया था कि यहीं पहुँचकर मुझे किसी प्रिंस डिक्सन को वैन में बिठाकर साइकोमेंशन तक पहुँचना है, मगर वहाँ तो एकदम अँधेरा था। अगर मुझे बॉस का आदेश न मिलता तो मैं इमारत नम्बर पन्द्रह में जरूर प्रविष्ट होता, मगर उन्होंने सख्त हिदायत दी थी कि मैं इमारत में एक कदम न रखूँ। डिक्सन स्वयं मुझ तक पहुँच जायेगा। अगर दस बजकर बीस मिनट तक न पहुँचा तो खाली हाथ वापिस लौट आऊँ।"

"काफी अक्लमन्द है तुम्हारा बॉस..तुम शायद दस बजकर इक्कीस मिनट बजते ही वैन लेकर वापिस खाली हाथ जा रहे थे।"

"मेरी कुछ भी समझ में नहीं आता। वहाँ कुछ साये मुझे कम्पाउंड में भागते नज़र आए। उनमें से एक चार-दीवारी फाँद कर भी भागा था...आखिर बॉस ने इस प्रकार का आदेश क्यों दे दिया.. न जाने इमारत में क्या गड़बड़ हो गयीं थी और यह डिक्सन...मगर ठहरिए... आपने अभी जिक्र किया था कि आप भी अभी...।"

"घबराने की जरूरत नहीं.. तुम अब डिक्सन को लेकर ही साइकोमेंशन जा रहे हो।"

"क्या मतलब... क्या आप!"

"हाँ, प्यारे... मैं देखना चाहता था कि उन लोगों के एजेंट अभी यहाँ मौजूद हैं या नहीं....मगर क्वींस रोड की इमारत नम्बर पन्द्रह में जिस रहस्यमय कार्य प्रणाली को अख्तियार किया गया। उससे जाहिर हो चुका है ...कि अब लाइन पूरी तरह साफ़ हो गयीं है। तुम्हारी वैन का पीछा भी नहीं हुआ... सागर का अपहरण इस ढंग से हुआ कि यदि खातून की आत्मा के एजेंट यहाँ मौजूद होते तो यह बात उनसे छिप नहीं सकती थी कि सागर को अपहरण करने के बाद क्वींस रोड की पन्द्रह नम्बर इमारत में पहुँचाया गया है। इसका कारण राजा चन्द्रसिंह थे जो वीरानगढ़ से मेरे साथ आये थे।

अब तक मैंने जितनी हरकतें की, वह सिर्फ इसलिए ताकि मालूम हो सके कौन-सा व्यक्ति हमारी निगरानी कर रहा है। मैं किसी ऐसे ही इंसान की खोज में था किन्तु सागर का अपहरण करने के बाद भी कोई ऐसी घटना नहीं घटी। इससे स्पष्ट हो चुका है कि न तो उन लोगों को अब सागर की आवश्यकता है और न वह यहाँ मौजूद है... वीरानगढ़ में भी वह सब लोग हवा की तरह प्रेतमहल की सुरंगों से भाग निकले मदन प्यारे... मैं रंजीत को बेहोश हालत में महल के बुर्ज पर रमेश के हवाले कर आया था.... उसके बाद दोबारा महल के उस भाग में पहुँचना चाहा, लेकिन कामयाबी नहीं मिली। रात भर महल में भटकता रहा। यहाँ तक कि सुबह उजाले में भी महल के चप्पे-चप्पे को खोजा मगर एक पक्षी तक

नहीं मिला। मेरा बॉडीगार्ड मेकफ भी उन लोगों के चंगुल में है- और निश्चित रूप से वह लोग यहाँ से बहुत दूर जा चुके हैं।"

"तो अब...चीफ की क्या योजना है?"

"ख़ाक योजना है वह तो हमेशा बिल में घुसा रहता है।"

"मेरी समझ में अब तक यह केस नहीं आया। दिग्राज का वीरानगढ़ से क्या सम्बन्ध है? आपने तो बताया था कि सागर ने ऐसा आविष्कार किया था, जिससे दिग्राज के दर्रे की मिट्टी को सोने में बदला जा सकता था।"

"सरकार को मालूम था।"

"अर्थात--?"

"अभी मेरी जेब में एक जादू की पुड़िया है, कुछ देर बाद उससे खुलासा होगा। वैसे अगर सागर की बात सत्य होती तो अब तक दिग्राज का दर्रा किसी शक्तिशाली और निकटवर्ती राष्ट्र के कब्जे में होता है। एडवेंचर के शौक़ीन वहाँ तक गये हैं। विज्ञान, आज इतनी उन्नति पर है तब यह सोचना मूर्खता है कि दिग्राज को सोने में बदला जा सकता है। क्या अमेरिका और अफ्रीका के नागरिक बिल्कुल मूर्ख हैं। जरा सोचो यह टापू एटलांटिक सागर में पड़ता है, जिसमें आज तक किसी भी राष्ट्र ने दिलचस्पी नहीं ली।

वहाँ अब भी जन-जातियाँ रहती हैं उसका मतलब साफ़ है कि दिग्राज, भूतिया लैंड और सिंघराज को आज़ाद सिर्फ इसलिए छोड़ा गया है कि किसी भी शक्तिशाली राष्ट्र को उससे कोई लाभ नहीं हो सकता। ऐसी बात नहीं कि वहाँ खोज नहीं हुई है। तब सागर ऐसा कौन सा आसमानी फ़रिश्ता है जिसने डंके की चोट पर यह घोषणा की कि दिग्राज को सोने में बदला जा सकता है।"

राजेश उसे इसी प्रकार उल्टी-सीधी बातें सुनाता हुआ विभिन्न सड़कों पर कार दौड़ाता रहा। कुछ देर बाद ही उनकी कार साइकोमेंशन के फाटक पर रुक गयी। मदन ने खिड़की से हाथ निकाल कर संतरी को कार्ड दिया, उसने कोडवर्ड में कुछ पूछा- जिसका जवाब मदन ने दिया।

राजेश ने पुनः कार स्टार्ट की और फाटक पार करता हुआ गैरेज की तरफ ले गया। कार गैरेज में पहुँचने के बाद वह दोनों उतर पड़े।

लम्बे डग भरते हुए वह साइकोमेंशन की इमारत में प्रविष्ट हो गये।

मदन ने राजेश को उस सीक्रेट रूम के दरवाजे पर खड़ा कर दिया, जहाँ पवन किसी भी इंसान से अकेले में मिलता था उस कमरे का द्वार भी अन्दर से मैकेनिज्म से खुलता और बन्द होता था।

उस समय फाइव टू अन्दर से ही स्क्रीन पर राजेश को खड़ा देख रहा था।उसे इस समय राजेश का ही इन्तजार था। उसने तुरन्त दरवाज़े का मैकेनिज्म खींच दिया।

फर्श अपने स्थान से सरका साथ ही दरवाजा दो भागों में विभाजित होता चला गया। राजेश कुछ क्षण बाद ही कमरे में फाइव टू के समक्ष खड़ा था।

"बैठो?" राजेश ने उसे आदेश दिया। दोनों आमने-सामने बैठ गये। सर्वप्रथम राजेश ने जेब से वह गुलदस्ता निकाला जो वास्तव में टेपरिकॉर्डर था।

टेपरिकॉर्डर का स्विच ऑन कर दिया गया। फाइव टू के साथ राजेश भी ध्यान से सागर के पागलपन की स्पीच सुनता रहा और कुछ देर बाद ही रमेश डायरी और पेंसिल सँभालकरबैठ गया। उस अजीबों गरीब भाषा के साथ उसकी पेंसिल शॉर्ट हैण्ड में चलती रही। काफी देर तक टेप पर वार्तालाप चलता रहा। उसके समाप्त होते ही राजेश ने स्विच ऑफ कर दिया।

“कुछ समझे!” राजेश ने फाइव टू की तरफ सरसरी सी निगाह डालकर कहा।

“यहकौन सी भाषा है सर?” फाइव टू ने चकित होकर पूछा।

“दरअसल डॉक्टर सागर अपने बचाव के लिये पागल हो गया था। उसे खतरा था कि उसकी ज़िन्दगी से पुनः खिलवाड़ शुरू हो जायेगा। यह बात सीक्रेट रखी गयीं थी कि वह इंडियन सीक्रेट ब्रांच के सुरक्षित अड्डे में रखा गया है। वह किसी भी हालत में उस रहस्य को नहीं खोलना चाहता था, जिसके लिये उसे सरकार से झूठ बोलना पड़ा। राजा चन्द्र सिंह को प्रेतमहल में कुछ पुराने हस्त लिखित कागजात मिले थे, जो उनके पूर्व वंशजों में से किसी ने लिखकर छोड़ा था। इतिहास के अनुसार सम्राट मानिक यहाँ से हजारों मील दूर एक टापू से किसी सुन्दर राज कुमारी का अपहरण करने गया था। वह राजकुमारी सिंघराज नामक टापू की थी।”

अपने अभियान में वह सफल तो हो गया किन्तु जब राजकुमारी को उसने दासी बनाने के बजाय अपनी पत्नी बनाया, तब राजकुमारी ने एक अजीबो-गरीब खजाने की कथा लिख छोड़ी थी। क्योंकि उन कागजातों में सम्राट मानिक की मौत का पूर्ण विवरण है अतः वह सम्राट मानिक नहीं लिख सकता। फिलहाल राजा चन्द्रसिंह को यहाँ लाने के बाद मैंने गुप्त तौर से उनके बंगले की तलाशी ली। कागजात मुझे मिल गये। उनमें सिर्फ इतना जिक्र है कि राजकुमारी का अपहरण करने के बाद सम्राट मानिक दोबारा खजाने को हथियाने के लिये जहाज से रवाना होता है।

टापू में अधिक सुरक्षा और बहादुर लड़ाके नहीं थे, यह मानिक पहले ही देख चुका था। अतः इस ओर से वह बेफिक्र रहा कि उसका मुकाबला टापू के चन्द लोग कर सकेंगे। लेकिन ऐसा नहीं था, वहाँ राजकुमारी के अपहरण से पूरी आग भड़क चुकी थी और चन्द इंसान ही सम्राट मानिक की मौत का कारण बन गये। उसने खजाने को हटाकर कहीं और छिपा दिया था।

उस समय सिंघराज में भयानक जंग जारी थी। मानिक के योद्धा समाप्त होते जा रहे थे तब वह इस भय से भाग खड़ा हुआ कि कहीं वह स्वयं भी मारा न जाये। फिलहाल ...वह क्यों भागा, यह तो मानिक ही जानता होगा। वहाँ उसने एक वसीयत लिखी थी और अपने वफादार अंगरक्षक को, जो कि हर वक्त उसके शरीर के साथ रहता था, मरते समय यह कहा कि दर्रे में ही वसीयत उसके शरीर के साथ दफना दी जाये.. उसके शरीर को जलाया न जाये। उसके पापों का प्रायश्चित उसका कंकाल दर्रे में ही करेगा। रक्षक ने वही किया। काफी अरसे तक वह भटकता रहा और न जाने फिर कैसे अपने सम्राट की रियासत तक पहुँच ही गया।

जंग की इन भयानक चपेटों में सम्राट मानिक तो मर गया किन्तु राजकुमारी का एक

बच्चा जन्म ले चुका था, अतः उसके वंशज समाप्त नहीं हुए और अब जब कि उस इतिहास का साक्षी केवल प्रेत महल रह गया, तब राजा चन्द्रसिंह को वह कागजात मिले यह जानने के लिये उनकी उत्सुकता जागी कि वह वसीयत क्या थी यूँ वीरानगढ़ एस्टेट के दो वंशज कुमार भी थे, जिनमें से एक शत्रुओं की साजिश का शिकार हो गया था और दूसरा उन्होंने अपने मित्र के पास बहुत छोटी उम्र में भेज दिया था। मित्र ने कुमार को इंग्लैंड में रख छोड़ा उसे यह भी नहीं बताया कि वह किसी स्टेट का प्रिंस है। खैर, मित्र की मौत के बाद राजा साहब उस प्रिंस का पता भी नहीं निकाल सके। तुम्हें आश्चर्य होगा कि वह कुमार और कोई नहीं बल्कि कर्नल विनोद है। मैंने सागर और चन्द्रसिंह को रहस्यमय ढंग से एक कमरे में इसलिए कैद किया ताकि असलियत का पता चल सके।

राजा चन्द्रसिंह एक बार सागर के साथ पहले भी वसीयत के चक्कर में अफ्रीका द्वीपसमूह की यात्रा कर चुके हैं। वहाँ की भाषाओं का उन्हें ज्ञान है। यह भाषा अफ्रीका दक्षिण पश्चिम के एक नगर बिंदहोक की है।

दिग्राज के दर्रे में प्रयोगशाला बनाकर आत्माओं का जाल रचने का यही मकसद था, मगर अचानक एक सचमुच की आत्मा वहाँ टपक गयी। अनेकों दल दर्रे में दिलचस्पी लेने लगे जिनमें से एक हम लोगों का भी दल है लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि खातून की आत्मा क्या बला है?

फाइव टू इस अजीबो-गरीब गाथा को सुनकर बुरी तरह चकरा गया था। इतना लम्बा चौड़ा केस आजतक उन लोगों के पल्ले नहीं पड़ा था, जिसमें कई भयानक मुठभेड़ों के बाद केवल यही रहस्य खुल पाया कि केस की जड़े क्या हैं?

“हो सकता है। यह सत्य हो कि सम्राट मानिक का दूसरा जन्म विनोद हो।”

“सत्य और असत्य का फैसला भी हो जायेगा। अब जरा मेरी योजना सुनो, तुम उसे कार्य रूप दोगे। मैं आज की रात के बाद तुमसे बिल्कुल अलग हो जाऊँगा। तुम्हारी टीम मुझसे बिल्कुल अलग कार्य करेगी।”

राजेश काफी देर तक उसे धीमे स्वर में कुछ समझाता रहा और फाइव टू गर्दन हिलाकर सहमति प्रकट करता रहा।

उसके बाद राजेश उठ खड़ा हुआ।

साइकोमेंशनसे निकलने के बाद उसने क्रॉसिंगसे टैक्सी ली और कैफे चार्मिंग की ओर रवाना हो गया। उसे अपने सेक्रेटरी जेम्सन को साथ लेना था।

उसका सेक्रेटरी।

जो कि जित्तू से जेम्सन और जेम्सन से एडोलिन बन चुका था। वह समय से पहले ही क्लीन शेव व कीमती सेंट की खुशबू वाले सूट में लिपटा हुआ कैफे चार्मिंग की रौनक देख रहा था।

□□□

मादाम फ्रेंटाशिया की रहस्यमय यात्रा जारी थी। हिन्द महासागर पार हो चुका था और अब वह एटलांटिक महासागर की सीमाओं में प्रविष्ट हो चुके थे। डिस्ट्राकुन्हा के पार्श्व भागों से गुजरने के बाद छुटपुट अँधेरा छा गया।

हर रात की तरह आज चाँदनी रात नहीं थी अतः सागर की लहरें शांत थीं। जहाँ तक नजर जाती, हर तरफ स्याह सागर नज़र आता। अभी समय केवल ग्यारह का ही हुआ था कि सहसा मस्तूल पर कार्य करने वाले इंसान चौंक पड़े।

डेक के पहरेदार सतर्क हुए।

और कुछ क्षणों बाद ही मद्धिम ध्वनि का वह अलार्म बज उठा जो खतरे का संकेत था। डेक से एक पहरेदार नीचे भागकर पहुँचा और उसने यह रिपोर्ट मादाम तक पहुँचा दी कि जहाज के चारों ओर कुछ स्याह धब्बे अग्रसर होते नजर आ रहे हैं।

तुरन्त मादाम का स्वर माइक पर गूँज उठा।

"ऑल एफ एजेंट अटेंशन- सूचना मिली है कि जहाज किसी अनजाने खतरे से घिरता जा रहा है। निश्चय ही समुद्री लुटेरे हैं। चूँकि वह संख्या में अधिक हैं और जहाज के चारों तरफ से बढ़ रहे हैं इसलिए एजेंट पनडुब्बियाँ उतारकर सागर के गर्भ में समा जायें, इससे पहले कि यह लोग जहाज तक पहुँच सके इनको तारपीडो से ध्वस्त कर दिया जाये।"

मादाम के इस आदेश के साथ ही भगदड़ मच गयी। एजेंट सर्तक हुए और अपने चुस्त लिबासों को पहन कर उस भाग में पहुँचे ,जहाँ जहाज में पनडुब्बियाँ व अन्य सुविधाजनक जलवाहन थे।

उस समय जबकि चारों तरफ लुटेरों का जाल फैलता हुआ निकट आता जा रहा था, हमीद खर्राटे की नींद सो रहा था। उसे फ्रेंटाशिया के इन आदेशों की ज़रा भी परवाह नहीं थी।

इस यात्रा में अधिकतर समय हमीद ने सोकर गुजारा था। किसी ने उसे जोरों के साथ झिंझोड़ा और अचकचा कर वह बड़बड़ाता हुआ बैठ गया।

"अरे भाई किस उल्लू के पट्ठे ने जगाया।" उसने कुछ ऊँचे स्वर में कहा।

"शोर मत मचाओ यह मैं हूँ ।"

"म.. मैं... कौन?" आवाज़ पहचानते हुए भी हमीद ने मज़ाक के मूड में कहा।

"उठो यह लुटेरे बहुत खतरनाक होते हैं और फिर इस समय जिन भागों से हम गुजर रहे हैं वहाँ यह भी हो सकता है कि खातून की आत्मा के दल से मुठभेड़ हो जाये।"

"आप यह कहाँ की हाँक रही हो। हमीद उछलकर खड़ा हो गया "यहाँ रूप के लुटेरों का क्या काम...।"

"हमीद ।"

"यस डार्लिंग।"

"मजाक में समय बर्बाद न करो!"

ठीक उसी समय एक भयंकर दृश्य खौफनाक आंतक निश्चित रूप से आंतक लुटेरों का नहीं हो सकता था। कई धमाके हुए - जहाज बुरी तरह डगमगा गया। खतरे का सायरन बड़ी जोरों के साथ चीख उठा। डेक से लड़ाकों की टॉमीगनें चारों दिशाओं की तरफ गरज उठीं।

सागर की सतह पर खूनी नाटक शुरू हो गया।

चारों तरफ से सागर की सतह पर नजर आने वाले धब्बे एकाएक सतह से गायब हो गये। बिल्कुल इस प्रकार जैसे सागर के गर्भ ने उन्हें छिपा लिया हो।

झटके के साथ हमीद केबिन से बाहर निकला।

अभीवह धमाकों का कारण समझ भी न पाये थे कि डेक पर कई चीखें गूँज उठी। जहाज पर प्रलय-सी आ गयी।

"यह लुटेरे नहीं है- लुटेरे नहीं हो सकते- हमारा जहाज नष्ट हो चुका है। तुम मेरे साथ आओ हमीद- उफ़- यह डेक पर आग कैसे लग गयी?"

इंसान उछल-उछल कर नीचे जम्प ले रहे थे। साथ ही उनकी गनें भी लक्ष्यहीन आग उगल रही थी। मस्तूल ने भी आग पकड़ ली और उस पर कार्य करने वाले भाग खड़े हुए।

मादाम हमीद का हाथ पकड़कर अपने स्पेशल केबिन में पहुँची, जो कंट्रोल रूम के पास ही था। वह रूम सबसे अलग था।

एक बार उसका आदेश पुनः माइक पर सुनाई दिया।

"मेरे ज़िन्दादिल साथियों तुम लोग सब जहाज को छोड़कर भाग जाओ। मोटर बोट और पनडुब्बियाँ पिछले भाग में मौजूद हैं। जहाज डूबता जा रहा है। आग जोर पकड़ती जा रही है।"

धमाकों के जोर से सागर की सतह काँप उठी थी।

जहाज का वह छोटा सा केबिन वैज्ञानिक चमत्कारों से परिपूर्ण था। फ्रेंटाशिया ने अपना आदेश जारी करने के बाद तुरन्त स्विच बोर्डों से खेलना शुरू कर दिया। कमरे की ठोस दीवारों का स्थान पारदर्शक शीशे ने ले लिया। फिर हल्की सी गूँज पैदा हुई और वह पारदर्शक शीशों से घिरा कमरा एकदम नीचे धंसने लगा।

हमीद उस समय चौंका जब उसने तीन तरफ की पारदर्शक दीवारों पर दूसरी तरफ से पानी की लहरें और मछलियों का सरसराना देखा। इससे स्पष्ट जाहिर था कि वह लोग अब जहाज छोड़कर समुद्री जल में आ चुके हैं।

विचित्र कमरे के आकार की यह पनडुब्बी पानी में डूबती जा रही थी।

"हमारे आदमी भयंकर खतरे से घिरे हैं हमीद। वह लोग वैज्ञानिक ढंग से हम लोगों के चारों तरफ घेरा डाले हैं।" फ्रेंटाशिया ने कुछ चिंताजनक स्वर में कहा। हमीद तुरन्त उसके समीप पहुँचा।

"यह तुम किस आधार पर कह रही हो। हो सकता है वह लुटेरे ही रहे हों। तुमने बताया था कि इस प्रदेश के समुद्री लुटेरे जहाजों को लूटकर आग लगा देते हैं।"

थोड़ा दिमाग से काम लो यदि वह लुटेरे होते तो बिना जहाज को लूटे आग नहीं लगा सकते थे। निश्चित रूप से वह लुटेरे नहीं हैं।

फ्रेंटाशिया ने टेलीविज़न का स्विच ऑन कर दिया था, फ्रेंटाशिया ने दो तीन स्विच और दबाये। इस बार उसने ट्रांसमीटर ऑन किया था, ट्रांसमीटर पर हल्की सी सरसराहट उत्पन्न होने लगी।

"हैलो- हैलो - एफ एजेंट-हैलो एफ- एजेंट -।" अचानक फ्रेंटाशिया ने अपनी पनडुब्बी

को तीर के समान एक दिशा में बढ़ाना शुरु कर दिया था। उसने एंटीवाटर गनों की नाल पनडुब्बी की प्रत्येक दीवार पर उभार दी। वह जब चाहती अपने स्थान पर ही बैठी हर ओर बुलैट छोड़ सकती थी।

सहसा हमीद चौंका उसने टेलीविज़न पर अपनी ओर तीव्र प्रकाश रेखा बढ़ती देखी। ऐसा जान पड़ता जैसे पनडुब्बी पर कोई भयानक अस्त्र छोड़ा जा रहा हो। फ्रेंटाशिया से भी वह वस्तु छुपी नहीं थी। उसने तुरन्त पनडुब्बी का रुख मोड़ दिया।

तीर के समान निकट आने वाली प्रकाश रेखा कुछ साफ हो गयी। वह अजीब प्रकार की लम्बी रबड़नुमा पनडुब्बी थी जिसके आगे वह सर्च लाइट जल रही थी। उसके ऊपर स्याह लबादे में गैस मास्क पहने चार व्यक्ति लेटे थे। जिनके हाथों में लम्बे आकार की गने थीं।

पांचवा व्यक्ति उस अजीब पनडुब्बी कोकंट्रोल कर रहा था।

फ्रेंटाशिया ने अपनी पनडुब्बी की सभी रोशनियाँ बुझा दी और उसको एक स्थान पर स्थिर कर लिया।

"शिकार खुद-ब-खुद अपने जाल में फँसता जा रहा है।" फ्रेंटाशिया ने धीमे स्वर में कहा- "मैं इनमें से किसी एक को जीवित पकड़ना चाहती हूँ।

यह लोग शायद हमारे प्रकाश को देखने के बाद इस तरफ आये हैं। लेकिन ये यह नहीं जानते कि हमारी इस पनडुब्बी पर इनकी कोई भी पनडुब्बी प्रभाव नहीं डाल सकेगी।"

"काफी खतरनाक इंसान हैं। ऐसा लगता है जैसे समुद्री जीव हों-।"

"हम लोग एक रिस्क उठायेंगे। अगर इन पाँचों को जीवित बन्दी बना लिया जाये तो शायद इनके मुख्य अड्डे का ज्ञान हो सके। क्या तुम पूरी तरह तैयार हो। मैं इन्हें चाहूँ तो बहुत आसानी से मार सकती हूँ। निश्चित रूप से इनका जिस्म बुलेटप्रूफ से ढका होगा। फिर चेहरे और गैस सिलेंडरों को तोड़ा जा सकता है जिससे यह लोग आसानी से समाप्त हो जायेंगे। लेकिन हमे ऐसा नहीं करना है। यह तो हर इंसान कर सकता है।"

"तुम्हारे इरादे नेक हैं। बेचारों को मारने से हमे क्या मिलेगा?"

"इन्हें जीवित गिरफ्तार करना है।"

"मगर ये कैसे हो सकता है? हमारी पनडुब्बी इनको जीवित कैसे पकड़ लेगी?"

"विज्ञान पकड़ेगा।" अजीब स्वर में फ्रेंटाशिया ने कहा- "अब हम सागर की सतह पर चल रहे हैं। बस- देखते रहो- यह हमारा अनुसरण करेंगे।"

"वह काफी नजदीक आ चुके हैं- वह देखो उनकी गनों से तीरनुमा बुलैट निकल रहे हैं।"

"उनसे कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

फ्रेंटाशिया ने पनडुब्बी के यंत्रों पर उँगलियाँ सटा दी। पनडुब्बी अब स्थिरता के साथ ऊपर उठ रही थी। कुछ देर के लिये टेलीविज़न से वह सूरतें गायब हो गईं । लेकिन जैसे ही वह सागर सतह पर आये, पुनः वह रौशनी कुछ तिरछी होकर ऊपर उठती नजर आईं।

"आओ -!"

फ्रेंटाशिया ने फुर्ती के साथ शरीर पर सिलेंडर कस लिया। स्कर्ट उतारकर वह बनियान और कच्छे में आ गयी।

एक बार तो हमीद का दिल तेजी से धड़क उठा। हल्की रौशनी में वह फ्रेंटाशिया को निहार रहा था। उसने भी तुरन्त अपने जिस्म पर लाल रंग का चुस्त लबादा डाला, जैसा कि फ्रेंटाशिया डाल रही थी। गैस मास्क फिट करने के बाद उन्होंने गनें सँभाली और प्रथम इसके कि आने वाले समुद्री सतह पर आते, वह दोनों एक दूसरे का हाथ थामकर पनडुब्बी से कूद चुके थे।

दोनों सागर के गर्भ में समाते चले गये।

दोनों के हाथ जुड़ से गये थे। दूसरे हाथों से उन्होंने गनें सँभाल ली थी।

अधिक समय नहीं गुजरा। अभी वह पनडुब्बी समुद्री सतह पर नहीं आई थी।

बहुत दूर सागर में आग की लपटें उठ रही थीं जो निश्चित रूप से जहाज की थीं।

दोनों कुशल खिलाड़ी तैरते हुए ठीक उस पनडुब्बी के नीचे आ गये थे जो तीर के समान ऊपर उठ रही थी। उन्होंने उसका निचला हिस्सा थाम लिया था। धीरे-धीरे वह सरकते हुए पिछले हिस्से तक पहुँच गये, उन दोनों ने एक बार अपने पाँच शत्रुओं को देखा। फ्रेंटाशिया ने संकेत किया और दूसरे ही क्षण उनके हाथों में खुले चाकू आ गये।

वह बेखबर थे।

बिजली की फुर्ती से वह दोनों उछले और दो इंसानों की गैस ट्यूब कट गईं। अपनी इस कार्यवाही के साथ ही शेष दोनों पर वह झपट पड़े।

गैस मास्क कट जाने के कारण पहले वाले दोनों बौखला गये और पानी बड़ी तेजी से उनके आँख-मुँह में प्रविष्ट होने लगा। अभी वह जल की सतह पर नहीं आये थे। कदाचित उनका शरीर पनडुब्बी में बंधा था, क्योंकि इसी घपले में पनडुब्बी का चालक हड़बड़ा गया। और पनडुब्बी एकदम उल्टी हो गयी। लेकिन ऐसा होने के बावजूद भी वह पाँचों पनडुब्बी से अलग नहीं हुए।

शेष दो का काम पलक झपकते ही हो गया। उन चारों के हाथों से गनें छूट चुकी थी।

चालक न जाने कैसे पनडुब्बी से ही कूद पड़ा। प्रथम इसके कि वह पानी में लोप होकर कोई नयी हरकत कर पाता हमीद ने पलट कर एन्टीवाटर गन से अनेक बुलैट उसके शरीर पर छोड़े। शायद उसमें से एक आध चालक के चेहरे से भी टकराया था, क्योंकि पानी में चीख का हल्का सा कम्पन पैदा हुआ था।

वह चारों अब तक अपनी चेतना गँवा चुके थे।

हमीद ने प्रत्येक को लेटे-लेटे इत्मीनान से टटोला।

उधर फ्रेंटाशिया ने पनडुब्बी को ऊपर उठाना शुरू कर दिया। कुछ क्षण बाद ही वह समुद्री सतह पर थे। फ्रेंटाशिया ने गैस मास्क हटा दिया।

“इनके शरीर पर कसी चेन खोल डालो, अब हमें इनके शरीरों को अपने रूम में पहुँचाना है।” फ्रेंटाशिया ने कहा।

चेन खोलने के बाद हमीद ने अपना गैस मास्क भी उतार डाला, और अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाये।

“अरे! यह क्या कर रहे हो!” फ्रेंटाशिया ने अजीब स्वर में पूछा।

“शरारत...।” हमीद ने पीछे से दोनों हाथ उसकी गर्दन में फँसाये।

“यह शरारत का समय नहीं है।”

“इसका कोई समय नहीं होता।” हमीद कुछ और आगे सरक गया।

“यू नॉटी बॉय ..।” फ्रेंटाशिया हँस पड़ी।

हँसी पर उसके होंठ फैले थे, फैल कर पूरी तरह सिकुड़ भी न पाये थे कि हल्की गर्माहट उसके लबों पर धड़क उठी। उसके हाथ स्टीयरिंग पर थे। फिर भी जाने क्यों उसने स्टेयरिंग से दोनों हाथ हटा लिये।

फ्रेंटाशिया न चाहते हुए भी उससे लिपट गयी।

पनडुब्बी आगे सरक रही थी।

और वह दोनों चालक सीट पर लम्बे लेट गये थे। हमीद न जाने क्यों उसके रूप को अपने से अलग न देख सका।

वह बहकता जा रहा था। फ्रेंटाशिया की साँसे भी तेजी पकड़ती जा रही थीं।

“उठो अब.... अभी बहुत काम बाकी हैं...।” अचानक फ्रेंटाशिया ने बायें हाथ को स्टेयरिंग पर टिकाते हुए कहा।

“यही तो मैं सोच रहा हूँ, जो काम बाकी रह गये हैं उन्हें इसी समय पूरा कर लिया जाये।” फ्रेंटाशिया की बात को कुछ दूसरी तरफ ढालते हुए हमीद ने कहा।

“वह काम बाद में भी हो जायेंगे। एक बात बताऊँ हमीद आज तक मेरे इतने करीब आने का साहस किसी ने नहीं किया। तुम पहले व्यक्ति हो...।”

“फिर बेवक्त के प्रश्न...।” इतना कहने के उपरान्त फ्रेंटाशिया ने उसके मुँह पर हाथ सटा दिया और उसको अपने ऊपर से हटाती हुई बैठ गयी।

“चलो अब ज़रा इस पनडुब्बी को हमारे ग्लोब के पिछले भाग पर बाँध दो इतने में मैं द्वार खोलती हूँ।”

फ्रेंटाशिया तैर कर अपनी गोलाकार पनडुब्बी की तरफ बढ़ गयीं और बड़बड़ाता हुआ हमीद सामने घूरने लगा। कुछ क्षण बाद ही उसने पनडुब्बी को चेन से जोड़ दिया।

अब उन दोनों ने चारों को अन्दर पहुँचा दिया। हमीद अपने वस्त्र बदलने लगा और फ्रेंटाशिया ने यंत्रों से खेलना शुरू किया।

वह चारों शक्ल से रेड इंडियन जान पड़ते थे। उनेक जिस्म का रंग ताम्बे के समान था। शरीर के चुस्त लिबास पर उल्लू का सुनहरा निशान बना था।

“मैंने कहा था न... यह लुटेरे नहीं हैं।”

“मेरे ख्याल से वह बेचारे अपना असली अड्डा नहीं जानते होंगे।”

“इनके और साथी कहीं नजर नहीं आये।”

“या तो वह लोग भाग गये या हमारे एजेंटों द्वारा मार दिए गये, फिलहाल मैंने रेड बल्ब इसीलिए जलाये हैं कि पूरी बात का ज्ञान हो सके। यदि इनके अन्य साथी मौजूद होंगे, तो हमारी पनडुब्बी पर अटैक होगा और नहीं होंगे तो हमारे साथी चारों तरफ से उन बल्बों की दिशा में अग्रसर हो जायेंगे।”

"मेरी समझ में नहीं आता जहाज को अचानक आग कैसे लग गयी।"

"कोई विशेष बात नहीं। यह काम सागर के गर्भ में छिपकर किया गया होगा, ऐसा भी हो सकता है कि इनका कोई एजेंट हमारे जहाज में चोरी छिपे दाखिल हो गया हो। वह आग पेट्रोल गैस से लगाई गयीं हो।"

हमीद उन चारों के हाथ पीछे बाँधता जा रहा था ताकि होश में आने के उपरान्त वह कोई हरकत न कर बैठे।

उसी समय ट्रांसमीटर पर संकेत मिला। फ्रेंटाशिया ने उसका स्विच आने कर दिया।

"हैलो मादाम.... हैलो मादाम -- रिसीव दी मैसेज...?"

"यस मादाम अटेंडिंग योर मैसेज ओवर?"

"मैं एक एजेंट नाइन बोल रहा हूँ- एफ एजेंटनाइन ओवर...।"

"क्या रिपोर्ट है?"

"हमने उन लोगों की दो पनडुब्बियों को ध्वस्त कर दिया, उनके दस आदमी मारे गये। शेष शायद भाग गये हैं, इस वक्त हम सर्च लाइटों से सागर के गर्भ को छान रहे हैं, लेकिन अब कोई नजर नहीं आ रहा है।"

"ट्रांसमीटर संकेत से उस ओर बढ़ो , जिधर हम मौजूद हैं... अपने सभी साथियों को सूचित करो कि वह सावधानी से एक घेरा बनाकर आगे बढ़ना शुरू कर दें... अब हमारी आगे की योजना तब बनेगी, जब तुम लोग ठीक हमारे आगे पीछे आ जाओगे...सिगनल के लिये हमने रेड बल्ब स्पार्क कर दिए हैं।"

"ओ के मादाम--?"

"ओ के... ओवर एंड आल?"

मादाम फ्रेंटाशिया की पनडुब्बी अपने स्थान पर स्थिर खड़ी थी, अब उसे अपने अन्य एजेंटों के आगमन का इन्तजार था।

उधर वह चारों होश में आ चुके थे, उनकी अधमुंदी आँखें वातावरण का निरीक्षण कर रही थी। हमीद ने तीव्र दृष्टि उन पर डाली और फिर प्रश्नवाचक निगाहों से फ्रेंटाशिया को देखा।

"क्या तुम पूरी तरह होश में आ चुके हो?", फ्रेंटाशिया ने प्रश्न किया।

वह चारो मौन रहे।

"ठीक है, तो मुझे दूसरा तरीका इस्तेमाल करना पड़ेगा, इधर देखो मेरी आँखों में...क्या मैं तुम लोगों को सुन्दर नहीं लगती।"

हमीद चौंका।

उन चारों की निगाहें एक साथ उठीं। निगाहें फ्रेंटाशिया की नीली आँखों से टकराई और वह अपलक फ्रेंटाशिया की आँखों में झाँकते रहे।

"तुम्हें मेरी नजरों में क्या नज़र आ रहा है?"

"देवता की झलक--।" वह चारों एक साथ बोले।

"हूँ अब तुम सब लोग बैठ जाओ।"

वह खामोशी के साथ बैठ गये।

हमीद इस चमत्कार से चकित था,तभी उसे ख्याल आया कि फ्रेंटाशिया की आँखों में अनजानी शक्ति है, जिससे वह साधारण इंसानों को हिप्नोटाइज कर सकती है।

"तुम लोग किसके सेवक हो?"

"खातून के पुजारी।"

"गुड, मगर अब तुम लोग खातून के पुजारी नहीं रहोगे, बल्कि मादाम फ्रेंटाशिया के पुजारी रहोगे, मुझे अच्छी तरह पहचान लो तुम लोग मेरी पूजा करोगे। क्या तुम लोगों ने सुना?"

"मादाम हम आपके पुजारी हैं।" चारों एक साथ बोले।

"खातून देवता आजकल किस स्थान पर हैं?"

"टिम्बा लुन्का से दो मील पूर्व में।"

"तुम वहाँ तक पहुँच सकते हो?"

"न..नहीं.. वहाँ सिर्फ बड़ा पुजारी जा सकता है।"

"क्यों...?"

"उसके अलावा जो भी जाता है वहीँ मार दिया जाता है।"

"तुम्हारा कमांडर कौन है?"

"कमांडर पाँचवा था।"

"तुम लोग कहाँ तक जा सकते हो?"

"टिम्बा लुन्का तक, वहाँ सभी खातून के पुजारी रहते हैं।"

"कोई ख़ास पहचान?"

चारों ने एक साथ अपनी आस्तीन फाड़ दी। फ्रेंटाशिया ने उनकी भुजाओं पर सुनहरे उल्लू का निशान देखा। शायद वह निशान उनकी भुजाओं पर सुनहरे रंग से गोदा गया था, जिसे मिटाया नहीं जा सकता था।

"दिग्राज में टिम्बा लुन्का बस्ती कहाँ पर स्थित है?"

"वहाँ सब कबीले वाले जानते हैं।"

"ठीक अब तुम सो जाओ, तुम बहुत थक गये हो।"

फ्रेंटाशिया की पलकें मुंदती चली गयी। ठीक उसी तरह इनकी पलकें मुंदती चली जा रही थी बिल्कुल ऐसा जान पड़ता जैसे वह कोई महान जादूगरनी हो।

"क्या कमाल का जादू है तुम्हारे पास?"

"मैं चाहूँ तो तुम्हें भी हमेशा के लिये बकरा बनाकर रख सकती हूँ।"

"छोड़ो अब हम दोनों विपक्षी नहीं रहे।" फ्रेंटाशिया ने कुछ हँसकर कहा--"मेरे दिमाग में अचानक एक योजना आ गयी है।"

"जरा मैं भी तो सुनूँ...?"

"हम लोग क्यों न खातून के पुजारी बन जाएँ। निश्चित रूप से यह लोग एक दूसरे को

उल्लू के निशान से पहचानते होंगे। रिस्क है। सफल भी हो सकते हैं और मर भी सकते हैं। मगर मैंने आज तक इस भय से रिस्क नहीं त्यागा कि मैं अपने अभियान में असफल हो जाऊँगी।

चार आदमी बड़ी आसानी से वहाँ पहुँच सकते हैं। उनका रंग तांबे के समान बनाया जाये... बस वह पीछे जुडी पनडुब्बी से रवाना हो जायेंगे। वहाँ पहुँचने के बाद वह यह रिपोर्ट देंगे कि सागर के बीच उनका कमांडर मारा गया। जिससे वह समुद्री मार्ग से भटक गये। उन चारों के दाँईं भुजा पर गुदे रहे उल्लू का निशान भी बना दिया जायेगा। अब चार का चुनाव करना है।"

"उनमें हमारा नाम तो अवश्य होगा।"

"हाँ..लेकिन मैं तुम्हें नहीं भेजूँगी।"

"मगर मैं जाना चाहता हूँ ... बहुत दिनों से जलने वाली आग को ठंडा करना चाहता हूँ। इस वक्त मैं मजाक के मूड में नहीं हूँ बल्कि गम्भीरता के साथ कह रहा हूँ। याद रखो फ्रेंटाशिया या तो मैं इन खतरनाक लोगों का जड़ से सफाया करके लौटूँगा अन्यथा यह समझ लेना कि ईश्वर हम दोनों को इस जन्म में नहीं मिलाना चाहता था।"

"हमीद.. मैं जानती हूँ कि कोई स्त्री उन लोगों के बीच इसलिए नहीं जा सकती क्योंकि इनमें कोई स्त्री नहीं है। लिहाजा मेरा जाना ठीक नहीं है और तुम्हें मैं हर वक्त अपने पास देखना चाहती हूँ... हम लोग ऊपरी तौर पर अपने साथियों की रक्षा करेंगे।"

"इस मामले में मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा।"

"ठीक है जैसी तुम्हारी इच्छा, तुम्हारे साथ रमेश भी रहेगा। अपने दो अन्य साथियों को भी अच्छी प्रकार से ठोक बजाकर देख लेना। वह दोनों इन टापुओं की भाषाएँ भी जानते हैं।"

"आशा है हम सफल होकर लौटेंगे।" हमीद ने कुछ गर्वीली मुस्कुराहट के साथ कहा।

फ्रेंटाशिया गर्दन झुकाकर कंट्रोल टेबल की तरफ मुड़ गयी।

□□□

एक अनोखे ढंग से राजेश भारत की भूमि छोड़ गया।

अफ्रीका दूतावास से सूचना भेज दी थी कि प्रिंस डिक्सन जो एक प्रसिद्ध शिकारी है.... ऑस्ट्रेलिया से अपनी एडवेंचर यात्रा पर रवाना हुए हैं। भारत वह एक सप्ताह रुके और उनका मुख्य ध्येय अफ्रीका के निकटवर्ती द्वीपों में भ्रमण करने का है। सभी रिकॉर्डों में यही उल्लेख किया गया और प्रिंस डिक्सन के रूप में राजेश अपने सेक्रेटरी सहित अफ्रीका के लिये रवाना हो गया।

वह दक्षिण पश्चिम अफ्रीका पहुँचा और वहाँ एअरपोर्ट पर ही दूतावास ने उसे रिसीव कर लिया।

राजेश के पास कुछ ऐसे प्रमाणपत्र और कागज़ात थे जिनके जरिए उसका महत्व अफ्रीका में काफी बढ़ गया था।

अफ्रीकी सरकार ने उसकी कोठी पर कुछ रक्षक भी रख छोड़े थे।

राजेश यह मालूम करना चाहता था कि विन्दहोक में उन लोगों के एजेंट हैं या नहीं। अगर नहीं है तो उसे अपनी जेल यात्रा शुरू करनी चाहिये और है तो उन्हीं के जरिये कोई नया मार्ग बनाना चाहिये। तीन दिन के भीतर ही उसे यह एहसास हो चुका था कि वहाँ कोई व्यक्ति नहीं है जो उसकी निगरानी करवा रहा हो। यदि उन लोगों के एजेंट विन्दहोक में है तब यही कहा जा सकता था कि प्रिंस डिक्सन पर उन लोगों को कोई संदेह नहीं है।

चौथे दिन वह बंदरगाह के निकट रहने वाले एक प्रसिद्ध व्यक्ति से मिला। वह इंसान एक आँख का अँधा था। शक्ल काफी भयानक थी। अफ्रीका का बच्चा-बच्चा जानता था कि जेवराक नाम का इंसान समुद्र का सबसे बड़ा ज्ञाता है, उस ने टार्जन के जंगलों तक को छाना है। सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि एटलांटिक महासागर का कोई भी छोटा बड़ा द्वीप उससे नहीं बचा है।

वह अफ्रीका का प्रसिद्ध शिकारी था।

उसका दाँयाँ चेहरा शेर के आक्रमण में बर्बाद हो गया था।

उसका कद केवल पाँच फुट था।

जबकि राजेश लगभग साढ़े छः फीट लम्बा था। अतः उसके सामने जेवराक नाटा-सा लगता था। जेवराक का शरीर पत्थर के समान गठा हुआ था.... उसकी आँखों में हर समय अजीब चमक रहती थी... जिससे साफ़ प्रकट होता था कि वह असाधारण इंसान है।

राजेश इस समय उसी के सामने बैठा था।

“वैसे तो मैं ऑस्ट्रेलिया का प्रिंस हूँ-- मगर आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत के लगभग सभी राजवंशी इंसान मेरे नाम को जानते हैं। खासकर राजा चन्द्रसिंह... वह मेरे पिताजी के गहरे मित्र थे।”

“राजा चन्द्रसिंह...?” जेवराक के नेत्र विस्मय से फ़ैल गये।

“क्या आप उनको जानते हैं?” राजेश ने उसके चेहरे का अध्ययन करते हुए कहा-”दरअसल इस बार भी मैं उनसे मिल कर ही यहाँ आया हूँ... मगर आप उन्हें कैसे जानते हैं?”

“जैसे आप मुझे जानते हैं।” जेवराक का स्वर कुछ बदल गया। उसकी बाईं आँख सिकुड़ गयी। वह कुछ गुर्राहट भरे स्वर में बोला- “साफ़-साफ़ बताओ.. तुम कौन हो... मिस्टर डिक्सन.. राजा चन्द्रसिंह का नाम बताकर तुमने अपनी आधी असलियत प्रकट कर दी।”

“तो.. इसका मतलब मेरा अनुमान भी गलत नहीं निकला। राजा चन्द्रसिंह और सागर दोनों ही इंसान ऐसे हैं जिन्होंने...”

जेवराक ने मेज पर हाथ मारा। अगर राजेश उछल कर खड़ा न हो गया होता तो मेज उसके ऊपर आ जाती। वह इस समय किसी झगड़े के मूड में नहीं था। वास्तविकता सिर्फ इतनी थी कि राजा चन्द्रसिंह और सागर के मुँह से दो बार जेवराक का नाम बातचीत के दौरान निकला था। उसकी टेप की गयीं बातों से राजेश ने यही अनुमान लगाया कि जेवराक कोई ऐसा इंसान है जो दक्षिण अफ्रीका में काफी प्रसिद्ध है.. और इस केस के बारे में बहुत कुछ जानता है।

हालाँकि राजेश को आशा नहीं थी कि वह जेवराक को खोज पायेगा.. मगर अचानक

जब उसने इस नाम का जिक्र एक अफ़्रीकी नौकर से किया तो तुरन्त उसे जेवराक की सारी जियोग्राफी मालूम हो गयी।

अब तक जेवराक रिवॉल्वर निकाल चुका था। अन्दर खट-पट होने के कारण उसके दो आदमी भी दरवाजे पर आ चुके थे।

"यह रिवॉल्वर जेब में रख लो जेवराक। मैं यहाँ झगड़ा करने नहीं आया हूँ। तुमने मुझे गलत समझा।"

"अपने दोनों हाथ उठाओ।" खौफनाक स्वर में जेवराक बोला।

राजेश ने दोनों हाथ उठा दिए। वह अब भी मुस्करा रहा था। जेवराक आगे बढ़ा। उसने राजेश के सीने से रिवॉल्वर की नाल सटा दी और दूसरे हाथ से उसकी तलाशी लेने लगा।

"अब मैं तुमसे जो कुछ पूछूँ, उसका सही उत्तर मिलना चाहिये।"

"प्रश्नों का जवाब देने के लिये मुझे बाध्य नहीं किया जा सकता, फिर भी मैं कोशिश करूँगा कि तुम्हारे प्रश्नों का उचित जवाब मिल सके।"

"मैं सब कुछ कहलवाने के लिये बाध्य कर देता हूँ।"

"राजा चन्द्रसिंह को कैसे जानते हो।"

"जेवराक! यह प्रश्न तो कोई बच्चा भी पूछ सकता है, कोई अक्लमन्दी का सवाल करो।"

जेवराक के माथे पर बल पड़ गये।

"शायद तुम भी सिंघराज के खज़ाने के चक्कर में आए हो।"

"ब्यूटीफुल... तो मैं सही जगह पहुँचा?" राजेश चहका।

"देखो, मुझे उलझनपूर्ण बातें जरा भी पसंद नहीं है।"

"जिस काम को डॉक्टर सागर पूरा नहीं कर सका, उसे मैं पूरा करने आया हूँ, अगर तुम मेरा साथ दो तो आधा-आधा हो सकता है।"

जेवराक ने कहकहा लगाया।

"तुम्हारी इस हँसी का कारण।"

"तुम्हारी स्थिति पर हँस रहा हूँ। शायद तुम्हें स्वप्न देखने की आदत है। आत्म-हत्या करने के लिये क्या अफ्रीका के ही जंगल सूझे थे।"

"क्या मतलब?"

"मैंने उस खजाने के बारे में पहली बार चन्द्रसिंह के मुँह से सुना, वह मुझे इसलिए मिला था क्योंकि मैं इन समुद्री टापुओं का काफी अनुभवी व्यक्ति था।"

"इसलिए मैं भी मिला हूँ।"

"पहले मेरी बात सुन लो।" जेवराक गर्जा--"अपनी टाँग बाद में अड़ाना। सिंघराज एक भयानक टापू है। वहाँ के लोग किसी अजनबी को अपनी सीमाओं में नहीं देखते। एक लम्बे अरसे से वहाँ यह नियम चला आ रहा है कि टापू में जो कोई भी अजनबी आये, उसकी बलि चढ़ा दी जाये। टापू पर मांडूक जैसे खतरनाक इंसान का राज्य है और मांडूक मुझ जैसे दस आदमियों को पछाड़ने की शक्ति रखता है। वह अब भी पूर्व प्रचलित नियमों का पालन कर रहा है। जाने क्यों वह लोग न तो सभ्य नागरिकों में आना चाहते हैं और न किसी सभ्य

नागरिक को अपने टापू में देखना चाहते। मैंने बहुत पहले उस खजाने की हल्की अफवाह सुनी थी, अनेक जिन्दादिल इंसान उस टापू में गये। लेकिन जीवित कोई नहीं लौटा।"

कुछ लोगों का कथन है कि उसमें प्रविष्ट होने के कितने ही रास्ते हैं। उनमें कुछ ऐसा षड्यंत्र फैलाया गया है कि इंसान उसे पार ही नहीं कर सकता और मार दिया जाता है। राजा चन्द्रसिंह का कहना था कि उस खजाने का कोई नक्शा दिग्राज नामक टापू में कहीं छुपा है, उस जाल में मैं भी लालच में फंस गया था, जिसका अंजाम मेरा यह बाँयाँ चेहरा है। ये निशानी राजा चन्द्रसिंह का साथ देने पर मिली है जिसे मैं भूल नहीं सकता, और अब तुम...मैं अब ऐसे किसी पागल का साथ नहीं दे सकता जो अपने साथ मुझे भी मौत के मुँह में डालना चाहता हो, अब तो दिग्राज अपराधियों का अखाड़ा बन गया है और तुम शायद अपराध प्रवृत्ति रखते हो।"

"नहीं... और अगर हूँ भी तो तुम्हारे लिये नहीं?"

"तुम भी पागल हो...।"

राजेश हँसा।

"तुमने मेरा दूसरा रूप देखा है...इसलिए कह रहे हो। मांडूक यदि तुम जैसे दस इंसानों का मुकाबला कर सकता है तो मैं मांडूक जैसे दस इंसानों का सफाया पलक झपकते ही कर सकता हूँ।"

"मेरा एक थप्पड़ सहन कर सकते हो...।" जेवराक ने उपहास उड़ाते हुए कहा--"अफ्रीका में मुझसे बड़ा शातिर कोई नहीं है।"

"बात सोचने की है और तुम्हारी बात का जवाब देने से पहले मैं सिगरेट पीना चाहता हूँ। मेरा दिमाग तब तक काम नहीं करता जब तक सिगरेट न पी लूँ। राजेश ने इस प्रकार कहा जैसे वह चेन स्मोकर हो जबकि वह सिगरेट पीने का आदि नहीं था।"

जेवराक रिवॉल्वर ताने दो कदम पीछे हट गया। उसने अपने आदमी को संकेत किया। तुरन्त सिगरेट केस और लाइटर उसको दे दिया गया। राजेश ने एक सिगरेट होंठों पर लगाई और लाइटर से उसे सुलगाने लगा। अभी वह पहला ही कश खींचकर सिगरेट को नीचे ला पाया था कि जेवराक की बाईं आँख एकदम फ़ैल गयीं और वह उछलकर अलग हट गया।

सब कुछ बड़े चमत्कारिक ढंग से हुआ था और जब जेवराक सावधानी से मुड़ा तो उसका रिवॉल्वर राजेश के हाथों में था। यह कार्य राजेश ने बिजली की फुर्ती से किया था। दरअसल उसने सिगरेट का कोना दबाया और एक पतला तार जेवराक के हाथों पर पड़ा। न जाने वह तार कैसा था जिसने जेवराक के हाथों से रिवॉल्वर को उछाल दिया। उसके बाद राजेश ने इत्मीनान से उसे कैच कर लिया था।

उसके दोनों साथियों ने बदली परिस्थिति को देखकर रिवॉल्वर निकालना चाहा।

"इसकी जरूरत नहीं...यह लो...।" राजेश ने रिवॉल्वर उनकी ओर उछाल दिया। उन दोनों ने एक साथ रिवॉल्वर कैच करने के लिये अपने हाथ उठाये और इसी चक्कर में राजेश ने खड़े-खड़े तीसरा चमत्कार दिखा दिया। उसने फुर्ती से मेज उठाकर उनकी तरफ पलट दी। वह दोनों रिवॉल्वर पकड़े बिना लड़खड़ाकर गिरे साथ ही उनकी चीखें भी निकल गईं।

मेज उनके ऊपर लद चुकी थी।

उधर जेवराक ने उछलकर छलाँग लगाई।

मगर राजेश को पाने के बजाय वह औंधे मुँह फर्श से टकराया। राजेश पुनः उसी रिवॉल्वर पर फिसलता हुआ दरवाजे तक पहुँच गया था। उसने दरवाजा भी अन्दर से बंद कर लिया और उठकर कपड़े झाड़ने लगा।

अपनी असफलता के कारण जेवराक बुरी तरह बौखला गया। अब उसने जेब से लम्बे फल का चाकू निकाल लिया। वह समझ चुका था कि प्रतिद्वंदी काफी चतुर और शक्तिशाली है। अतः वह सावधानी से आगे बड़ा।

“तुम्हें आज मुझे गुरु बनाना पड़ेगा जेवराक....।” राजेश ने अर्धमुस्कान के साथ कहा। बेचारे जेवराक का होंठ कट चुका था।

रक्त की धार उसने आस्तीन से पोंछी।

राजेश ट्रिगर के बीच ऊँगली फँसाकर रिवॉल्वर घुमा रहा था। इसलिये जेवराक का साहस बढ़ा। इस बार उसने अद्भुत ढंग से काम लिया। राजेश पर न तो छलाँग लगाई और न चाकू सहित झपटा। बस खड़े खड़े वह एक बार झुका और जब झुककर सीधा हुआ तो चाकू राजेश के सीने की तरफ बढ़ा।

मगर यह क्या...।

“वाह रे राजेश! रिवॉल्वर हाथ में स्थिर हुआ। ट्रिगर दबा और एक धमाके के साथ रिवॉल्वर से गोली भी छूट गयी। उससे ठीक एक गज के फासले पर चाकू झनझनाकर फर्श पर गिर गया। गोली ठीक चाकू के फल से टकराई थी।”

कार्य इतना अद्भुत था कि जेवराक को फर्श पर लुढ़क जाना पड़ा। वह समझा था राजेश ने उसका लक्ष्य लेकर फायर किया है, किन्तु गोली छूटने के बाद जब उसने इस नयी कला का परिणाम देखा तो उसकी एक आँख आश्चर्य और भय से फैलने लगी।

“डू नॉट वरी माई डियर?” राजेश ने इस बार अंग्रेजी झाड़ी,”साहस खोना बुजदिलों का काम है उठो।”

गोलियों की आवाज से बाहर दौड़ते क़दमों की आहट नजदीक आने लगी और कुछ क्षण बाद ही दरवाजा पीटने की तेज ध्वनि पैदा हुई।

“उठो...?” राजेश ने इस बार स्वर को भयानक बनाकर कहा।

सचमुच उस करामाती इंसान के सामने जेवराक सहम गया। उसके शरीर में ठंडी लहर दौड़ गयी। मेज के नीचे पड़े उसके साथी भी वह दृश्य फटी-फटी आँखों से देख रहे थे।

जेवराक उठ खड़ा हुआ। उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लिये।

“हाथ उठाने की आवश्यकता नहीं है?” राजेश ने उसी स्वर में कहा।

जेवराक ने हाथ गिरा दिये।

“अब रिवॉल्वर तुम सँभालो...मैं तुम्हें संग आर्ट का दृश्य दिखाऊँगा।” राजेश ने सचमुच रिवॉल्वर उसकी तरफ उछाल दिया। उसकी एक-एक बात जेवराक को प्रभावित करती जा रही थी। रिवॉल्वर को पकड़ते ही वह कुछ पल तो स्तब्ध खड़ा रहा और तभी उसे होश

आया कि उसका प्रतिद्वन्दी अब निहत्था खड़ा है। रिवॉल्वर उसके हाथों में आ चुका है।

"इतना कुछ होने के बाद तुम मुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ोगे.. शिकारी होने के नाते तुम सच्चे निशानेबाज हो। गोली चलाकर अपने इस प्रतिद्वंदी को समाप्त करो।"

जेवराक सहमा।

उसके नेत्रों में पुनः चमक आ गई, फायर करने से पूर्व उसने सोचा, क्या वह अपने प्रतिद्वन्दी को समाप्त कर सकेगा?

उसकी आत्मा गवाही दे रही थी कि वह ऐसा नहीं कर पायेगा। फिर भी अपना सच्चा निशाना याद आते ही उसके होंठों पर हल्की हँसी आ गयी।

उसने पहला फायर किया।

संग आर्ट का माहिर राजेश । उसने सिर्फ इतना किया कि जेवराक की आँख और रिवॉल्वर की नाल पर नज़र जमाये रहा। ऐसा करने में वह इतना आसानी से समझ लेता था कि गोली जिस्म के किस भाग से टकरायेगी। बस उसी अंग को बचाना ही संग आर्ट था।

राजेश बुलेटप्रूफ बहुत कम इस्तेमाल करता था। बुलेटप्रूफ मोटा होने के कारण उसका जिस्म उतना फुर्तीला नहीं रहता था। छोटे-मोटे अवसरों पर वह संग आर्ट से बुलेटप्रूफ का कार्य ले लेता था। जेवराक ने लगातार चार फायर और किये किन्तु एक भी गोली राजेश को न लगी। जेवराक को ऐसा लगा जैसे वह अब भी अपने स्थान पर बिना हिले हुये खड़ा है। धमाके से धुँआ फैलता और उसी धुएँ के कारण राजेश के जिस्म की हरकत वह नहीं देख पाता।

"मेरे जिस्म पर कोई बुलेटप्रूफ नहीं है जेवराक?" उसका रिवॉल्वर खाली हो जाने के बाद राजेश बोला- "क्या अब तुम मेरा एक वार सँभालोगे।"

खूँखार नेत्र बनाता हुआ राजेश आगे बढ़ा, जेवराक इस बार भयभीत हो गया था। उसने दरवाजे की तरफ देखा। शायद वह दरवाजा खोलने बढ़ता मगर तब तक राजेश उछल कर द्वार के निकट पहुँच गया। जेवराक सहम कर पीछे हटा और राजेश उसकी तरफ खाली हाथ बढ़ाता रहा।

बाद में जेवराक की पीठ दीवार से टकरा गयीं तो उसने दोनों हाथ फैला दिये।

"ठ...ठहरो?" जेवराक ने अधरों पर जुबान घुमाते हुये कहा--"तुम क्या चाहते हो?"

राजेश बोला-- "कुछ नहीं।" उसने निकट जाकर जेवराक के दायें हाथ को झटका दिया और तुरन्त अपने दायें हाथ के पंजे से उसका पंजा जकड़ लिया।

"दोस्ती?" अजीब ढंग से उसने कहा।

"प्रिंस डिक्सन यू आर ग्रेट मैन। मैं अब प्राण भी दे सकता हूँ।"

"तब ठीक है।" अपने चन्द आदमियों को सिंघराज के शिकार के लिये तैयार कर लो। वो आदमी कैसे होने चाहिये। यह तुम स्वयं सोच लो।"

"यह एडवेंचर सचमुच मेरे जीवन का सबसे अद्भुत मोड़ होगा।"

राजेश ने जेब से च्युइंगम का पीस निकाला। और उसे मुँह में रखने के बाद वह अपने स्थान पर टर्न ले गया।

स्टीमर तूफानी गति से आगे बढ़ने लगा। स्टीमर की लम्बाई चौड़ाई काफी थी। दूर से देखने में वह छोटा जलपोत लगता। उसके अन्दर सात मोटर बोटों को भी लिया गया था।

वह जेवराक का निजी स्टीमर था।

□□□

बहुत धीमे प्रकाश में....।

एक ही सुनहरे लिहाफ ने दोनों के जिस्मों को ढाँप दिया था। उनके चेहरे लिहाफ से बाहर थे। पीठ जुड़ी थी और चेहरे का रुख विपरीत दिशाओं में था।

अचानक सुनहरे बाल हिले, शायद उसने करवट ली थी। चेहरा साफ नजर आया, वह मीनाक्षी थी। मीनाक्षी जो अपने को सिंघराज की राजकुमारी का दूसरा जन्म बताती थी।

करवट लेते ही उसके दोनों बाजू मानिक उर्फ़ विनोद की गर्दन पर पड़ गये। उसकी हथेलियों का स्पर्श मानिक के गालों पर होने लगा। फिर उसकी पलकें भी उठ गयी। उन्मादी आँखों से उसने एक बार वातावरण को निहारा।

न जाने क्या सोचकर उसने लिहाफ हटा दिया और उठ कर बैठ गयी।

"मानिक...।" उसने धीमे स्वर में पुकारा।

मानिक की निद्रा पर उसकी आवाज का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वह बेखबर सोता रहा।

उसकी आँखों में प्यार था और रोमांस भी...। उसके होंठ काँपने लगे थे। काँप कर मानिक के गालों से टकरा गये थे। साँसे कुछ तेज होने लगीं। वह मानिक के ऊपर अधलेटी-सी हो गयी।

शायद वह कुछ और भी करती किन्तु तभी एक अजीब ठंडा स्वर कमरे में गूँजा।

"क्या कर रही हो मीनाक्षी..अपने आपको सँभालो अन्यथा तुम अपने कर्तव्य को नहीं निबाह पाओगी। चुप चाप सो जाओ...।"

मीनाक्षी ने उस तरफ देखा जहाँ एक उल्लू बैठा उसे घूर रहा था।

"मैं ऐसे कब तक रह सकती हूँ, वह मेरा राजकुमार है। इस जन्म में हम एक दूसरे के इतने करीब आये हैं, सच्चे दिल से उसने मुझे चाहा है... और अब क्या मैं अपने प्रेमी का प्यार भी नहीं पा सकती। आखिर कब तक यह नाटक चलता रहेगा।"

इतना कहकर वह लेट गयी।

उसी समय विनोद ने करवट बदली। उसका हाथ मीनाक्षी के वक्ष से टकराया। मीनाक्षी ने तुरन्त लिहाफ से अपना शरीर ढँक लिया और दोनों हाथ लिहाफ के अन्दर कर लिये और मानिक की बाजू पर चुटकी काट ली।

मानिक की आँख खुल गयी। कुछ पल तक वह मीनाक्षी के चेहरे को देखता रहा और फिर हड़बड़ा कर बैठ गया।

"हम कहाँ हैं?"

"सो जाओ शहजादे, हम सुरक्षित हैं।"

"मगर कहाँ, यह हमारे राजमहल का शयनागार नहीं है। ओह हमे अचानक यह कैसे दौरे पड़ जाते हैं। तुमने कहा था, हम जब सोते हैं तो एकदम बेहोश हो जाते हैं।"

"मेरे सम्राट-- बस कुछ दिन और इसी तरह बीतेंगे। आप सिंघराज के महल में बुरी तरह घायल हो गये थे। तभी से आपके साथ ऐसा होने लगा था। उस रात महल में कुछ सिंघराज के जासूसों ने हमला कर दिया था, आपको याद होगा, आपकी शक्ल का वह जासूस आपका स्थान ग्रहण करना चाहता था। ओह हम लोग बड़ी कठिनाई से महल छोड़कर भागे थे, आपको दौरा पड़ गया था। लेकिन अब हमने एक नया संगठन खड़ा कर लिया है। मुझे अब सिंघराज के प्राणियों से कोई मोह नहीं रहा। इस बार मैं खुद आपके साथ रहकर उस देश पर हमला करना चाहती हूँ या तो हम दोनों एक साथ मारे जायेंगे अथवा इस धरती पर हमारा कोई दुश्मन नहीं रहेगा। सिंघराज के खजाने को हम अपनी रियासत में ले जायेंगे।"

"सिंघराज का खजाना?" विनोद की ललाट की रेखाएं तन गयी। उसकी आँखें किसी चिंता में डूब गईं जैसे वह कुछ सोच रहा हो।

सिंघराज बहुत खतरनाक देश है राजरानी...हम उस खजाने को पाने के बाद भी अपनी सेना को नहीं बचा सके। वहाँ से हमे भागना पड़ा। और--और हमें सब याद आता जा रहा है। हमने घायल हालत में रहकर एक वसीयत लिखी थी। राजरानी! न जाने हमें क्या हो रहा है, जैसे हमारे पापों से धरती काँप उठी है। हमें मर जाना चाहिये था। हम क्यों नहीं मरे राजरानी? उस जंग की भयंकर चपेटों में हमने सौगंध खायी थी कि दूसरे जन्म में हम अपने पापों का प्रायश्चित करेंगे। मगर शायद अभी हमारे पापों का घड़ा भरा नहीं है शायद एक बार फिर तलवारें बजेंगी। सिंघराज के लोग हमें इंसान के रूप में नहीं देखना चाहते हैं। हम इस वक्त कहाँ हैं?

मानिक का स्वर कुछ तेज हो गया।

उस चौड़े पलंग से उतरकर खड़ा हो गया वह।

"इस वक्त हम दिग्राज नाम के टापू में हैं सम्राट।"

"दिग्राज!" मानिक एकदम उसकी तरफ घूम गया। यह कैसे हो सकता है? भारत की सीमा से दिग्राज सैकड़ों मील दूर है। तीन महीने से पहले वहाँ नहीं पहुँचा जा सकता?"

"मैं सच कह रही हूँ मैंने आपके दौरे का इलाज इस बीच इसलिए नहीं करवाया था कि कहीं आप जंग से घबराकर मुँह न मोड़ लें। कहीं आपका शेर दिल कमजोर न हो जाये। हमारी सेना एक बार फिर सिंघराज में खून की नदियाँ बहायेगी। उनको मुँह तोड़ जवाब दिया जायेगा। अब तो मेरा जीवन आपके साथ बंध गया है। सिंघराज मेरे लिये शत्रु देश बन गया है। यही एक ऐसा सुरक्षित स्थान है जहाँ हम पड़ाव डालकर अचानक सिंघराज पर आक्रमण कर सकते हैं।"

"सेना को तैयार किया जाये! हम अभी अपनी ज़िन्दादिली का प्रमाण देंगे।"

"अभी रात है सम्राट।"

"रात है या दिन इस बारे में हमेशा गीदड़ सोचते हैं या मुर्दादिल। हमारे अंगरक्षक को बुलाओ जिसको हमने वसीयत दी थी। सिंघराज में दाखिल होने वाले मार्ग का नक्शा भी उसी के साथ है।"

"ओह मगर वह रक्षक तो मर गया।"

"क्या बकती हो?"

“मैं सच कह रही हूँ।”

“तो वह वसीयत।”

“शायद उस स्थान पर छूट गयी हो जहाँ आप लिखते-लिखते बेहोश हो गये थे। वह स्थान भी दिग्राज में ही कहीं होगा। हमारे आदमी उसे तलाश कर लेंगे। आप अभी आराम करें। अगर वसीयत न मिली तब भी हम सिंघराज पर आक्रमण करेंगे।”

“तुम काफी बदल चुकी हो। हमारा बहुत ख्याल रखती हो।” विनोद ने उसके रूप को निहारा। दोनों की आँखें उलझ सी गयी।

कोने में दुबका उल्लू बराबर खामोशी के साथ उनका वार्तालाप सुन रहा था। वह दृश्य उल्लू देखने लगा तब विनोद मीनाक्षी के रूप को बड़े ध्यान से निहार रहा था।

वह आगे बढ़ा।

मीनाक्षी उस समय पलंग पर बैठी थी।

मानिक और समीप पहुँचा। उसके दोनों हाथ फैले और दूसरे ही क्षण मीनाक्षी उसकी गोद में लुढ़क गयी। उसके अधर पुनः काँपने लगे। दोनों अब भी अपलक एक दूसरे को निहार रहे थे।

“कितना प्यार करने लगे हो तुम मुझे, जबकि मैं क्रूर होने के साथ ही अय्याश भी हूँ। मेरी हर रात एक नयी दासी के साथ कटती थी। लेकिन जब से तुम मेरे जीवन में आयी हो मैंने उन सबको रूप महल में आज़ाद छोड़ दिया। उन्हें इजाजत दे दी थी कि वह किसी के भी साथ अपनी शादी कर सकती हैं। सचमुच तुम्हारे करीब आने से हम एकदम बदल गये... बदलते जा रहे हैं...लोग ठीक कहते थे तुम्हारे रूप के सामने कोई भी अपने को न्यौछावर किये बिना नहीं रह सकता।”

अपने शब्दों के साथ ही मानिक उसके चेहरे पर झुकता चला गया।

उन दोनों के अधर जुड़कर एक हो गये।

मीनाक्षी जैसे पागल हुई जा रही थी। मानिक के स्पर्श मात्र से ही वह उत्तेजित हो चुकी थी। कुछ देर पहले उल्लू द्वारा दी गयीं शिक्षा को वह भूल चुकी थी।

“म..मेरे मानिक...आह?” उसने लड़खड़ाते स्वर में कहा।

मानिक के शरीर पर राजवंशी टाइप का चोगा था। उसका रंग सुनहरा था। ठीक वैसी ही ढीली सुनहरी पोशाक मीनाक्षी के शरीर पर थी।

बंधन कसते गये।

वह दोनों एक दूसरे से चिपके पलंग पर करवटें लेने लगे और... और

जब चाँदनी का टकराव जल से होता है तो ज्वार भाटे का आना स्वाभाविक हो जाता है। जब भँवरा फूल पर मंडराता है तो उसका रस चूसे बिना वापस भी नहीं जाता।

विनोद जैसा विवेकशील व्यक्ति जिसकी अब तक की उम्र में कोई लड़की इतने करीब नहीं आई थी उसी इंसान के कदम डगमगा रहे थे लेकिन वह अपने उस जीवन से पहले ही बिछड़ चुका था।

अब वह विनोद रहा ही कहाँ था।

वह तो सम्राट मानिक था।

और मानिक की बाजुओं में फँसी थी रूप की शहजादी।

तन के बल खुलते जा रहे थे।

जिस्म के वस्त्र भी हटने लगे। धड़कने तेज हुई चमकता हुआ वक्ष उभरने लगा, तेज साँसों के साथ वह बैठ रहा था। जाने क्यों मीनाक्षी ने अपने तन के कपड़े हटते ही लिहाफ खींच लिया और मानिक उनके रूप को अपने मन में समेटने लगा था।

ऊँची नीची सिसकिया।

मद्धिम रौशनी भी बुझ गयी।

उसके साथ ही साँसों की तेजी कुछ अधिक हो गयी। अँधेरे में रूप लुटता रहा, प्यार की हर सीमा अंतिम छोर पर थी. जहाँ पहुँचने के लिये प्यार की लड़ें पड़ती हैं, जिसे मानव की सबसे बड़ी तपस्या समझा जाता है।

जहाँ पहुँचने के बाद मानव स्वयं ईश्वर का रूप बन जाता और तब अपने ही समान एक शिशु को इस धरती पर भेज देता है।

जिसे संसार का सबसे बड़ा आनन्द माना गया है।

वही सब कुछ - "पहले तेज साँसे।"

फिर उखड़ाव... ढीलापन..।

□□□

दूरबीन से वह बस्ती साफ़ नजर आ रही थी। दोपहर से ही वह एक पथरीली चट्टान पर लेटे थे। लगभग हर तरफ वातावरण का निरीक्षण उन्होंने अच्छी प्रकार कर लिया।

"इसी बस्ती का नाम टिम्बा तुन्का है।" हमीद ने दुरबीन आँखों से हटाकर कहा, "मैं साँझ होते ही इसमें प्रविष्ट हो जाना चाहता हूँ। इस वक्त सूरज पश्चिमी पहाड़ियों की ओर अग्रसर हो चुका है।"

"तुमने एक बात नोट की है। पास लेटे एजेंट नाइन रमेश ने कहा, बस्ती के चारों तरफ कुछ चमकीले तार बिछे हैं। देखने से वह एक घेरा नजर आ रहा है। इससे साफ़ जाहिर है कि वह तार अवश्य ही अनजान लोगों के लिये मौत का सामान लिये हैं।"

"लेकिन हमारे लिये नहीं।" हमीद शुष्क स्वर में बोला।

वह चारों आपस में इसी प्रकार की बातें करते रहे। इस समय उनका शरीर काले लबादों में छिपा था उन चार बन्दियों द्वारा पूरा ज्ञान उन्हें मिल चुका था। चेहरों पर विचित्र तांबे के रंग का रोगन था। जिससे उन्हें पहचाना जाना कठिन था। इस समय वह सागर के किनारे स्थित ऊँची चट्टान पर मौजूद थे। काफी दूरी पर दिग्राज के अन्य कबीले भी नजर आ रहे थे। वह जिस दिशा में मौजूद थे, वही मार्ग ऐसा था, जो बस्ती के अत्यन्त निकट पड़ता था। उस तरफ कोई कबीला भी मार्ग में नहीं पड़ता था।

बिना टकराव के वह आसानी से टिम्बा लुन्का पहुँच सकते थे। सुरक्षा के लिये उन्होंने अपने लिबास में कुछ आधुनिक यंत्र छिपाये थे। उनके अलावा कोई दूसरा सामान उनके पास नहीं था।

साँझ होते ही उन्होंने अपना स्थान छोड़ दिया और ऊँचे नीचे टीलों को पार करते हुए जंगल की सीमा में प्रविष्ट हो गये।

जंगल का अन्तिम छोर ही पुजारियों की बस्ती में मिलता था।

दिग्राज में रात्रि का दामन फैलने लगा।

उजाला समाप्त होकर झुटपुट अँधेरे में बदला और फिर उसके स्याह दामन में टापू छिपता चला गया। जंगल के मध्य अँधेरा और गहरा हो गया था।

छोटे बड़े जानवरों की चीख पुकार से वातावरण गूँज रहा था। दो एक बार उन्हें आस-पास की झाड़ियों में चमकीली आँखें भी नजर आयीं, वह अपना हर कदम सँभल सँभल कर रख रहे थे।

यूँउन चारों ने बताया था कि इस जंगल में हिंसक जानवर अवश्य हैं किन्तु वह इंसानों पर हमला नहीं करते। पुजारियों के काले लिबास ने उन्हें इस कदर भयभीत कर दिया है कि वह इक्के दुक्के से भी दुम दबाकर रास्ता काट जाते हैं। बड़े-बड़े जानवरों ने तो उस जंगल को छोड़ ही दिया था।

लकड़बग्घे चीख रहे थे।

गीदड़ भी अपना समिश्रित राग अलापे थे।

वह चारो निर्भीक सीधे चलते रहे। सबसे आगे चलने वाले एजेंट ने टॉर्च जला ली थी। यह एजेंट थर्टीन था, जो भूतिया लैंड का प्रसिद्ध शिकारी था जिसे टापुओं की सभी भाषाओं का ज्ञान था।

उसके पीछे हमीद बढ़ रहा था।

वह घने वृक्षों के नीचे से गुजर रहे थे। वृक्षों के कारण वातावरण में हल्की सी गर्माहट थी। उनमें से कोई भी इस समय मुँह से आवाज नहीं निकल रहा था। कान सभी के सतर्क थे। जरा सी आहट पाते ही उनके कदम रुक जाते, आस-पास का निरीक्षण कर लेने के बाद आगे बढ़ने लगते।

उसी प्रकार चलते हुए जंगल की सीमा के छोर पर आ गये। अभी वह चटियल जमीन पर आकर खड़े ही थे कि उन चारों को एक साथ चौंकना पड़ा। अँधेरे में काफी दूर उन्हें कुछ नरकंकाल वायु में उड़ते नजर आये। यह दृश्य ऐसा था जिससे उनके शरीरों में ठण्डी लहरें दौड़ने लगी। उन कंकाल के जिस्म दैवीय शक्ति के समान चमक रहे थे।

“लेट जाओ?” हमीद फुसफुसाया,”वरना कोई मुसीबत हमारे गले लटक जायेगी।”

चारों पुनः झाड़ियों में सरककर लेट गये।

धरती पर अंधकार फैला था। बस्ती खामोश अँधेरे में डूबी थी।

वह नर कंकाल इस समय बस्ती में उड़ते हुए गुजर रहे थे।

वह इंसानों की नहीं बल्कि प्रेतों की बस्ती लगती थी। हवा में उड़ने वाले नरकंकाल नहीं हो सकते थे। इस समय वह चारों यही सोच रहे थे। शायद उन्हें बन्दी हुए इंसानों ने किसी भयानक प्रेत कुण्ड में झोंक दिया था।

वह प्रेत बस्ती के चारों तरफ दौड़ लगा रहे थे। जैसे उन सभी को किसी वस्तु की खोज

हो और अब प्रेतों की वह टोली दिशाओं से जंगल की तरफ बढ़ती नजर आयी तो स्वाभाविक था कि वह काँप उठते।

उनकी आँखों में आश्चर्य और भय की मिली-जुली रेखायें तन गयीं।

हड्डियों में फुरफुरी उत्पन्न हो गयी।

वह चारों इतने साहसी थे कि सैकड़ों इंसानों पर भी भारी पड़ सकते थे किन्तु किसी प्रेत आत्मा से टकराना इंसान के बस से बाहर था। हवा में उड़ते प्रेत करीब आते जा रहे थे।

"यह क्या बला है?" किसी ने धीमे स्वर में कहा।

"मौत के अलावा हो भी क्या सकता है , हमे जंगल में प्रविष्ट हो जाना चाहिये। शायद वह हम लोगों को ही खोज रहे हैं। हमीद ने दबे स्वर में कहा।"

"तुमने यह धारणा कैसे बनाई?"

"पागल हो गये, जरूर हमसे कोई भूल हो गयी है।"

"लेकिन अगर यह नर कंकाल प्रेत हैं तो फिर हम इनकी नजरों से बच नहीं सकते?" रमेश ने कहा।

"लेकिन हम अब कर भी क्या सकते हैं।" एजेंट थर्टीन बोला-"यदि सामने जाते हैं, तो मौत है, फायर करते हैं तो हमारी स्थिति साफ हो जाती है और यदि यह इंसान हैं तब भी इन्हें पराजित कर पाना आसान नहीं होगा। मगर यह इंसान भी नहीं हो सकते ओह गॉड! वह देखो...।"

लगभग बीस प्रेत दो पंक्तियों में उड़ते हुए तीव्र गति से चटियल धरती पर आ गये थे, दिशा ठीक चारों की ओर थी।

सबसे पहले हमीद ने झाड़ी से छलाँग लगाई। अँधेरे में कोई उसे देख नहीं पाया कि वह किस तरफ गायब हो गया। तीनों बौखला गये। हमीद का इस प्रकार अकेले भाग जाना उनकी घबराहट का कारण बना।

बचे हुये तीनों बिना टॉर्च जलाये एक दिशा में दौड़ने लगे। अँधेरा होने के कारण एजेंट थर्टीन किसी कटीली झाड़ी में फँस गया। रमेश ने उसे खींचकर निकालना चाहा लेकिन समय बहुत कम था। प्रेतों के चमकते ढाँचों से कुछ झाड़ियों में प्रकाश सा हो गया था। एक प्रेत तो लगभग बीस गज के फासले पर आकर रुक गया था।

"तुम निकल जाओ...।" एजेंट थर्टीन ने कहा"मेरे जिस्म में काँटे चुभ गये हैं...आह...यू गो...न नाइन...।" थर्टीन कराहा। उसने झाड़ी में ही अपना रिवॉल्वर खींच निकाला।

रमेश ने मुड़कर देखा। फोर्टीन भी गायब था। शायद वह आस-पास कहीं छुप गया था। रमेश की स्थिति विचित्र थी।

"मैं इनका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर रहा हूँ.... तुम अपनी जान बचाओ...मादाम से कह देना...मैं काम आ गया।"

रमेश ने थर्टीन को कातिल निगाह से देखा...वह अब भी काँटों में उलझा था। उसका साया बिना किसी हरकत के घेरा गया था।

सहसा एक शोला निकला। वह थर्टीन की करामत थी। रमेश ने तुरन्त अँधेरे में छलाँग

लगा दी। रिवॉल्वर वह भी निकाल चुका था, सचमुच थर्टीन ने जिन्दादिली का प्रमाण दे दिया था...अगर वह ऐसा न करता तो शायद रमेश भी न बच पाता...क्योंकि उसने निकट आने वाले प्रेतों को देख लिया था।

अनेक खनकती आवाजें वायुमंडल में तैर गईं।

थर्टीन की गोलियों का प्रभाव उनमें से किसी पर भी नहीं पड़ा।

वह मौत की तरह भयानक हँसी हँसते हुए उस झाड़ी की तरफ बढ़ गये।

रमेश ने सोचा, कहीं वह भी दौड़ते हुए किसी किसी झाड़ी में न उलझ जाये, इसलिए वह एक पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर चढ़ते समय उसने थर्टीन की चीखें सुनी जो कुछ क्षण बाद ही शांत हो गईं थीं। रमेश ने ठण्डी साँस खींचकर पत्तों में अपने जिस्म को छिपा लिया।

तभी दो प्रेत एक अन्य झाड़ी में भी छलाँग लगा गये थे। उस झाड़ी में भी दो तीन धमाके हुए और रमेश की आँखों से वह दृश्य नहीं छिप सका। वह एजेंट फोर्टीन था, जिसने थर्टीन को बचाने के लिये गोलियाँ चला दी थी।

अचानक रमेश चौंक पड़ा।

उस पेड़ के नीचे भी एक प्रेत खड़ा था। रमेश का विवेक जाग उठा। उसने मरने से पूर्व कुछ कर लेना उचित समझा, उस ने वह भूल नहीं की जो थर्टीन और फोर्टीन कर गये थे।

पत्तों से ही उसने नीचे झाँका।

यह गनीमत थी कि उस पेड़ के पास एक ही प्रेत पहुँचा था अन्य इधर उधर घूम रहे थे। शायद वह बचे हुए दो इंसानों की खोज कर रहे थे।

क्या वह इस प्रकार पत्तों में छिपकर बच जायेगा। यह विचार रमेश के दिमाग में तेजी के साथ घूमता जा रहा था। उसे लगा जैसे उन प्रेतों के चंगुल में उनमे से कोई भी नहीं बच सकेगा।

कुछ फैसला करके वह नीचे सरकने लगा।

वह एक भयानक रिस्क लेने का फैसला कर चुका था।

उसे लगा जैसे उनमें से कोई भी प्रेत नहीं है। अपने नीचे खड़े प्रेत के ढाँचे से उसे इसका एहसास हो गया था। प्रेत का कंकाल धरती से कुछ फीट ऊपर उठा था, प्रकाश में रमेश ने उसके नीचे लम्बे आकार का स्याह साया देखा था।

बिल्कुल ऐसा काला जानवर जैसे कोई घोड़ा खड़ा हो।

रमेश की आँखों में चमक आ गयी। वह तने से चिपक कर नीचे सरकने लगा। अपनी तरफ से वह पूरी तरह कोशिश कर रहा था कि किसी प्रकार की आहट न हो। उसने साँस तक रोक ली।

उस तने से उतरकर वह दूसरे तने पर लेट गया। अब स्थिति इस प्रकार थी रमेश ठीक उस प्रेत के ऊपर वाले तने पर लेटा था। नजदीक से देखने पर उसे कंकाल के चारों तरफ स्याह लबादा चिपका दिखाई दिया।

प्रेत पर छलाँग लगाने से उसकी योजना बिगड़ सकती थी, शायाद वह घोड़ा ही था,

जिस पर नर कंकाल सवार था। वह कोई ऐसा कार्य करना चाहता था जिससे न तो आवाज हो और न घोड़ा ही बिदक सके।

एक योजना उसके दिमाग में आ गयी।

किन्तु उसमें खतरा था।

ऐसे अवसर पर बिना रिस्क लिये काम नहीं चल सकता था। रमेश अब जो कुछ करने जा रहा था वह एक आश्चर्यजनक कार्य था।

उसने दोनों पेरों की कैंची को डाल पर शक्ति के साथ फँसा दिया। उसके बाद उसका पूरा शरीर तने से अलग हो गया। ऐसा करने से हल्की आहट हुई। भयानक फुर्ती से रमेश के दोनों हाथ प्रेत की गर्दन से चिपक गये।

प्रथम इसके कि प्रेत सँभल पाता, उसके पाँव घोड़े की रकाबें छोड़ चुके थे। वह हवा में ऊपर उठता चला गया। इस आसमानी मुसीबत ने उसके आधे होश उड़ा दिये।

रमेश के पैर अब भी तने से चिपके थे। इस वक्त वह तने से उल्टा लटक रहा था। उसने अपने पंजे कंकाल की गर्दन पर सख्त कर दिये थे। इतने सख्त कि वह चीखें भी तो आवाज गले में ही घुट जाये।

उस स्थिति में वह प्रेत को हिलाने लगा।

उधर भाग्य ने साथ दिया।

घोड़ा अपने सवार के हटते ही कुछ अलग सरक गया। इस पहली पकड़ में ही रमेश को एहसास हो चुका था कि वह कोई प्रेत नही बल्कि उसी के समान मानव है।

उसका साहस और भी बढ़ गया।

कथित प्रेत नुमा व्यक्ति के दोनों हाथ ऊपर उठ गये। वह अपनी गर्दन को छुड़ाने का असफल प्रयास करने लगा। लेकिन पाँव हवा में होने के कारण वह कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

फिर रमेश ने उसे जबरदस्त झटका देकर उछाल दिया। तुरन्त ही वह स्वयं भी सँभल कर तने से कूद गया। प्रेत एक झाड़ी में गिरा था। रमेश ने उसी झाड़ी में छलाँग लगा दी थी लेकिन उसे दोबारा कोशिश नहीं करनी पड़ी। प्रेत झाड़ी में बेसुध पड़ा था।

शायद वह अपनी चेतना गँवा चुका था।

सचमुच वह इंसान था।

शरीर पर काला चुस्त लबादा, लबादे पर फॉस्फोरस की चमकीले धारियाँ खींच दी गईं थी। अँधेरे के कारण काला लबादा तो छिप जाता था, किन्तु वह धारियाँ फोसफोरस पेन्ट के कारण चमकती रहती थीं।

रमेश ने उसकी पौशाक उतार डाली।

वह पौशाक काफी वजनी थी। अन्दर की ओर लोहे की महीन जाली लगी थी। जो कि एक तरह से बुलेटप्रूफ का कार्य कर रही थी। सारी प्रेत लीला रमेश समझ चुका था। उसने अपना लबादा उस व्यक्ति को जल्दी-जल्दी पहना दिया और स्वयं प्रेत की पोशाक को लेटे-लेटे अपने जिस्म पर फिट कर लिया।

जिस्म में केवल आँखों का भाग खाली रह गया।

प्रेत की पोशाक में छोटी काले रंग की गन लगी थी। रमेश ने उसे परखा, अवसर आने पर वह टॉर्च के कार्य में भी लायी जा सकती थी। वैसे प्रकाश शरीर की धारियों से ही इतना हो जाता था कि आस-पास का दृश्य स्पष्ट दिखाई दे सके। अब वह स्वयं प्रेत था। उसने प्रेत की उस गन की ताल बेहोश पड़े इंसान के चेहरे से सटा दी और लेटे-लेटे आँख मूँदकर उसका ट्रिगर दबा दिया।

आवज़ बहुत हल्की हुई।

बेहोश व्यक्ति एक बार तड़पा, फिर रक्त से रमेश भी भीग गया। वह भयानक तौर से एक इंसान के प्राण ले चुका था। वक्त को देखते हुए वह उसे जीवित भी कैसे छोड़ सकता था।

आँख खोलकर देखा...प्रेत के चेहरे पर माँस के लोथड़े चिपक गये थे। शक्ल बड़ी भयानक हो गयीं थी। अब उसका जिस्म मुर्दा पड़ा था।

लम्बी साँस खींचकर वह उठ खड़ा हुआ। तभी उस झाड़ी के निकट ही दो घुड़सवार प्रेत रुके। वह दोनों उछलकर नीचे उतर गये।

रमेश ने झुककर मरे हुए व्यक्ति को कंधे पर लाद दिया। उन प्रेतों के सामने ले जाकर उसने उसे पटक दिया और स्वयं पेड़ के निकट घोड़े की तरफ बढ़ गया। उन दोनों ने उसे अपना साथी समझा। मरे हुए व्यक्ति को वह दोनों एक थैले में बाँधने लगे। उनमें से एक कुछ जोर से बोला। शायद उसने रमेश से कुछ कहा था। भाषा अजीब थी। तो रमेश ने केवल हाथ उठाया और घोड़े पर बैठ लगाम को झटका दिया।

घोड़ा झटके के साथ एक दिशा में बढ़ने लगा।

रमेश प्रेत बन चुका था, किन्तु एक बड़ी समस्या उसके सामने आ गयीं थी, वह उस भाषा से अनभिज्ञ था। फिलहाल वह अपने को प्रकाश में नहीं लाना चाहता था। अतः उसने अन्य प्रेतों के बीच मिल जाना उचित समझा।

जंगल में मंडराने वाले प्रेत अब एक जगह एकत्रित होने लगे थे... बड़ी अजीब-सी आवाज उत्पन्न हो रही थी। जान पड़ता जैसे कोई कुत्ता रो रहा है। आवाज कोई संकेत था जिस की प्रतिक्रिया यह हुई कि जंगल में चमकने वाले प्रेत उसी ओर बढ़ने लगे।

इसलिए रमेश को उन्हीं में शामिल होना पड़ा।

कुछ समय उपरान्त ही।

बीसों प्रेत उसी प्रकार हवा में उड़ने लगे। उनके नीचे घोड़े सरपट भागने लगे। न जाने घोड़ों के पाँव पर ऐसी कौन सी वस्तु चिपकी थी, जिससे टापों की आवाज बहुत हल्की हो गयी थी।

घोड़े उन तारों को भी छलाँग गये जो बस्ती के चारों तरफ खिंचे थे। उनका दल अब मैदानी भाग में दौड़ रहा था।

अजीब चमत्कार था।

घोड़ों को काले पेंट से रंगा गया था, जिससे वह भी अँधेरे में छिप जाते थे और उनके

ऊपर बैठे इंसान इस प्रकार पैर हिलाते रहते थे जैसे सचमुच हवा में प्रेत उड़ रहे हों।

उनकी वास्तविकता रमेश पर खुल चुकी थी।

बस्ती में अब भी अँधेरा छाया था। जान पड़ता जैसे वह मुर्दों का शहर हो। वहाँ सन्नाटे का साम्राज्य था। लगभग तीन सौ मकानों की वह बस्ती इस प्रकार बनी थी कि उसके मध्य केवल एक ही मार्ग से पहुँचा जा सकता था। मकान गोल दायरे में आपस में जुड़े थे।

बीचे में छोटा सा मैदान था।

जब सभी प्रेत उस मैदान में पहुँच गये, तभी बस्ती में मशालें जल उठीं। मैदान के मध्य एक बड़ी प्रतिमा स्थिर खड़ी थी। प्रतिमा एक मंचनुमा स्थान पर मौजूद थी। वह एक बहुत बड़े आकार का उल्लू था। उल्लू की प्रतिमा कम भयानक नहीं थी।

श्वेत आँखों के बीच अंगारे जैसी चमक थी।

□□□

आँखें गड्ढों में फँस चुकी थी। शेव इतनी बढ़ चुकी थी कि उसे पहचान पाना असंभव था। वस्त्र तार-तार हो चुके थे...पीठ और सीने पर लगे स्याह निशानों से जान पड़ता जैसे उस इंसान की खाल हंटरों से नोची गयीं हो।

शरीर जीर्ण हो चुका था।

उसके चेहरे पर छाई पीली परतें जीवन की आशाओं से बहुत दूर जा चुकी थी। वह तो अपने को बहुत पहले मृत समझ चुका था।

अब तो जंजीरों में बंधा केवल अंतिम दिनों की याद में घुट रहा था।

ईश्वर उससे रूठ चुका था।

धरती उससे ऊब चुकी थी।

इसलिए तो वह नर्क में सड़ रहा था। वह दुर्गंध जो उसके चारों तरफ फैली रहती थी, इतनी भयानक थी कि कई बार होश में आने के बाद भी उसे बेहोश होना पड़ा। किंतु अब एक लम्बा समय गुजर चुका था, अतः वह इस दुर्गंध में रहने का आदी हो चुका था।

एक बंद गुफानुमा कमरे में वह अपने बचे-खुचे दिन पूरा कर रहा था। कभी-कभी वह सोचता कि उसे इस प्रकार जीवित क्यों छोड़ा गया है जबकि अनेक बार वह मौत की भीख गिड़-गिड़ा कर माँग चुका था।

किंतु मौत भी उसे नहीं दी गयी।

वह लोग बड़े बेरहम थे।

जिस युवती की जान बचाने के चक्कर में वह फँसा था वह उन राक्षसों के हाथों अपना सब कुछ लुटा चुकी थी।

अब भी जब वह रात याद आती है तो उसका रोयाँ-रोयाँ काँप उठता है। इस संसार में न जाने कैसे इंसानों को जन्म मिला है ऐसे बेरहम लोग उसने अब तक नहीं देखे थे। उसकी आत्मा में प्रतिशोध की ज्वाला भड़कती रहती थी लेकिनवह चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता था।

वह रात कितनी भयानक थी।

इसी प्रकार उसे जंजीरों से बाँधा गया। उस समय वह घुटे हुए वातावरण में नहीं बल्कि एक भयंकर प्रतिमा के सामने बाँधा गया था। प्रतिमा उल्लू की थी जिसकी आँखें पूरे दिग्राज में प्रलय ला सकती थी।

वह शोले उन्हीं आँखों से निकलते थे।

उसकी आँखों के सामने पुजारियों ने खूँखार खेल दोहराया। कबीले की उस लड़की को मूर्ति के समक्ष लाया गया।वह भयभीत हिरनी के समान प्रतिमा के करीब खड़ी हो गयी।

चारों तरफ तमाशगीर बैठे थे।

जंजीरों में जकड़ा कमल सब कुछ देखता रहा। बड़े पुजारी ने प्रतिमा के समक्ष जाकर कुछ कहा और उसकी आवाज पर पाँच अन्य पुजारी मंच के समक्ष आ गये। उसके बाद लड़की को जबरदस्ती कुछ पिलाया गया। शायद मदिरा थी।

बड़े पुजारी ने उसके कपड़ों की उतरवा दिया।

वह दृश्य कमल अपनी आँखों से नहीं देख सका। मजबूरन उसे आँखें मूँदनी पड़ी। कान वह बंद नहीं कर सकता था। लड़की चीखती रही खूनी दरिन्दे उसके रूप को बाजुओं में कसकर उछालते रहे। वह जिस तरफ जातीउसी तरफ लपलपाती वासना की प्यास उसका स्वागत करती रही। अन्य पुजारी उस खेल को देखकर हँसते रहे, उनकी समिश्रित हँसी दानवों के समान लग रही थी।

कमल ने आँखें तब खोली जब उसके बदन पर हंटर पड़ा। उसके कंठ से चीख निकली। सामने देखा एक देवकाय शरीर का इंसान हंटर लिये खड़ा था। उधर लड़की के नंगे जिस्म पर एक पुजारी लेटा था। वह शायद बेहोश हो चुकी थी क्योंकि अब उसने चीखना चिल्लाना बंद कर दिया था।

कमल ने चीख-चीख कर उन्हें गालियाँ सुनायी किंतु गालियों का प्रभाव किसी पर नहीं पड़ा। दो तीन हंटर और पड़े और वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा और उसके बाद वह तब तक चिल्लाता चला गया। जब तक चेतना शून्य नहीं हो गया।

रोज़ जब उसे एक बार खाने के लिये माँस का टुकड़ा दिया जाता था। तब उसको हंटरों से मारा जाता था। कमल आज तक नहीं समझ पाया था कि उसके साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया जाता है। उसकी किसी भी बात का जवाब नहीं मिलता था।

कुछ दिन तक वह भूखा-प्यासा रहा। न जाने वह माँस किस चीज का था, जिसे मुँह के पास ले जाते ही उल्टी होती थी।

लेकिन भूखा कब तक रहता।

भूख में इंसान सब कुछ खाने को आतुर हो जाता है। कुछ वैसी ही भयानक परिस्थितियाँ उसके सामने आ गयी। धीरे-धीरे वह आदी होने लगा। पिटते समय आवाज तक न निकालता और फिर माँस खाकर अपनी भूख मिटाकर सो जाता। यही उसकी दिनचर्या थी।

रात और दिन के आगमन का पता उसे तभी लगता जब हंटरों से उसकी खाल उधेड़ी जाती थी।

इस मार ने उसे कीड़े के समान कमजोर और शक्तिहीन बना दिया था। जीवित होते हुए भी वह निर्जीव लाश बन गया था। वह नहीं जानता था कि यह क्रिया उसके साथ कब तक

दोहराई जायेगी।

प्राण अधर में लटके थे।

आज भी चौबीस घंटे में एक बार उसे गोश्त का टुकड़ा मिला था। उसे खाने के बाद वह नंगी जमीन पर लेट गया था। वह प्रयास कर रहा था नींद आ जाये क्योंकि यह वह अच्छी तरह जान चुका था कि रात के समय उसे खाना दिया जाता है।

उसकी आँखें छत को निहार रही थी।

एक आले में बड़ा दियादान रखा था जिसका पीला प्रकाश उसके जीर्ण शरीर को और पीला बना रहा था। उसकी याददाश्त बहुत पुरानी बातों की तरफ भटक रही थी।

वह चेहरे याद आ रहे थे, जिनके आगे, बड़ी से बड़ी अपराध शक्ति ने घुटने टेके थे।

जाने क्यों कभी-कभी उसका दिल गवाही देता कि राजेश एक दिन फ़रिश्ते के समान आयेगा, सारी बस्ती को मौत की गोद में सुला देगा और उसके बाद इस भयानक कैद का अंत करके उसे कैद से निकाल ले जायेगा।

हल्की आशा की किरण बाकी थी।

अचानक हल्की सी आहट हुई। कमल ने उस तरफ देखा, काले लिबास में लिपटे दो इंसान उसके बेढब कमरे में दाखिल हुए थे।

इस समय उन दोनों के चेहरे भी ढके थे। कमल को यह समझते देर नही लगी कि वह दोनों खातून के पुजारी हैं। उन दोनों को देखते ही कमल भयभीत हो गया।

"उठो..." एक ने अंग्रेजी जबान में कहा।

कमल के दोनों हाथ पीछे जंजीर से बाँधे गये थे। एक जंजीर उसकी कमर से भी चिपकी थी। बड़ी कठिनाई से वह बैठ गया।

वह दोनों निकट आ गये।

दीवार पर बने हुक से जंजीर खोली गयी।

"क्या तुम लोग मुझे मार नहीं सकते?" धीमे स्वर में कमल ने कहा।

"आज तुम्हारी यह इच्छा भी पूरी हो जायेगी, क्योंकि आज की रात यहाँ हम लोगों की आखिरी रात है। देवता तुम सबको एक साथ मरता देखना चाहते हैं।"

उनमें से एक बोला।

कमल ने गर्दन हिलाकर इस प्रकार संतोष की साँस ली जैसे वह मरने नहीं जा रहा, बल्कि एक नया जीवन पाने जा रहा हो। इस भयानक पीड़ा से मौत उसे अच्छी लग रही थी।

मगर तत्काल ही उसे पुजारी के शब्द याद आये, उसकी बातों से आभास हुआ जैसे उसके साथ कुछ और लोग भी मरने जा रहे हैं। अभी तक उसने बंदी के रूप में किसी और को नहीं देखा था।

"मेरे साथ कौन-कौन मरेगा?" साहस बटोरकर उसने पूछ ही लिया।

"तुम स्वयं देख लेना; शायद वह तुम्हारे ही साथी होंगे।" अत्यंत रूखे स्वर में उसने कहा। उसके बाद कमल को धक्के देकर निकाला गया। कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद वह एक

मकान के कमरे में आया, यहाँ दो काले इंसान खड़े थे। उनके शरीरों पर वह चुस्त लबादा नहीं था।

दोनों काले मानव उसे खूँखार नजरों से घूरने लगे। उनका जिस्म काफी शक्तिशाली जान पड़ता था। कमल ने आज पहली बार उन दैत्याकार हब्शियों को देखा था।

"इसको मैदान में ले जाओ।" उसी पुजारी ने कमल को धक्का देते हुए कहा। अगर वह दोनों हब्शी उसे सँभाल न लेते तो वह निश्चित रूप से लड़खड़ाकर मुँह के बल गिर पड़ता। हब्शी उसे घसीटते हुए मैदान में ले गये।

मैदान में इस समय काफी भीड़ थी।

प्रतिमा के चारों तरफ एक घेरा बना दिया गया था। मैदान के सामने कुछ भाग खाली था। उसके बाद बस्ती के सभी सेवक बैठे थे। उनके जिस्म भी काले लबादे में ढके थे। वह सब इस ढंग से बैठे थे जैसे सामने कोई नाटक पेश किया जाने वाला हो। कमल उनके मध्य बने रिक्त स्थान से ले जाया गया, मंच के सामने खाली स्थान पर उन्हें छोड़ दिया गया।

चारों तरफ मशालें जल रही थीं।

लगता था जैसे किसी जश्न की तैयारी हो। एक तरफ बड़ा सा ढोल आग की आँच में तपाया जा रहा था। उन शैतानों की कार्यप्रणाली बिल्कुल जंगलियों के समान थी।

प्रतिमा के सामने जाकर कमल की समस्त जंजीरें खोल दी गईं। वह बुत के समान चुपचाप खड़ा रहा। कुछ समय बाद ही वह हब्शी दो बंदियों को और ले आये। यह दोनों एजेंट थर्टीन और फोर्टीन थे। उन्हें रस्सियों से जकड़ा गया था। हब्शियों ने उन्हें ले जाकर कमल के साथ खड़ा कर दिया।

कमल ने बुझे नेत्रों से दोनों बंदियों को निहारा।

"तुम लोग कौन हो?" उसने धीमे स्वर में पूछा।

"इस वक्त केवल बंदी हैं।" फोर्टीन बोला-"मगर तुम...।"

"एक मरा हुआ इंसान...।"

"नाम क्या है?"

"बाप ने कमलकांत रख छोड़ा था। मैंने कमल कपूर रख छोड़ा, अब शायद अमर कांत हो जाऊँगा।"

"जीने की आशा छोड़ चुके हो।" फीकी मुस्कान के साथ फोर्टीन बोला "यह लोग क्या करने जा रहे हैं?"

"पता नहीं।"

"क्या तुम हिन्दुस्तानी हो?" अचानक थर्टीन ने पूछा।

कमल चौंक कर उसे देखने लगा।

"क्यों दोस्त तुमने कैसे पहचाना?"

"नाम और शक्ल से...।"

"क्या तुम दोनों भी भारत में रहे हो?"

"ह..हम वहाँ की हर जगह से वाक़िफ़ हैं।"

“नाम क्या है तुम दोनों का?”

“एफ फोर्टीन और थर्टीन और...मेरा नाम थर्टीन है।”

कमल ने बुरा सा मुँह बनाया।

“यह तो लकी नम्बर है।” वह बड़बड़ाया।

न चाहते हुए भी वह दोनों मुस्करा पड़े। उन्होंने एक नजर समूह पर डाली,जो इस वक्त उनके तीनों ओर बैठा था। चौथी तरफ मंच और उल्लू की बड़ी प्रतिमा थी।

“तुम कितने समय से यहाँ कैद हो?”

“दो तीन माह हो गये हैं। एडवेंचर का शौक था।”

“काफी दिलचस्प जान पड़ते हो।”

“किसी जमाने में था... बहुत जल्द मुझे मूर्ख सम्राट की उपाधि मिलने वाली थी। मगर अब.. उन सारी आशाओं पर पानी फिर गया। मैं अपने देश-वासियों की शक्ल देखने को भी तरस गया हूँ।” कमल का स्वर भर्रा गया,”हमारे देश वासी कैसे हैं?”

“कुशल हैं।” फोर्टीन ने धीरज बंधाया--”हमे भी तुम अपना देश-वासी समझो। तुमने मादाम फ्रेंटाशिया का नाम जरूर सुना होगा। शायद तुम कोई भारतीय जासूस हो?”

कमल चौंका!

फ्रेंटाशिया का नाम उसके लिये अनजाना नहीं था।

“तुम लोग फ्रेंटाशिया को जानते हो?”

“हम उन्हीं के सेवक हैं।”

“नहीं!”

“यकीन मानो कमल...इन लोगों की बर्बादी का समय आ गया है। चार भयानक देव इनके पीछे पड़ गये हैं-यह किस-किस को कैद करेंगे। अकेली हमारी मादाम से टकराना मुश्किल हो जायेगा और फिर भारतीय जासूसों की टीमें भी शांत नहीं होंगी।”

“क्या मतलब... तुम लोग काफी काम के आदमी जान पड़ते हो।”

“काम के आदमी न होते तो इस जगह तक पहुँच भी कैसे सकते थे।”

उसी समय लगातार ढोल बजने की आवाज से उनकी बातों का क्रम रुक गया।

“क्या तुम हमारे बंधन खोल सकते हो।” इस बार फोर्टीन ने भारतीय भाषा में कहा।

कमरा खुला था यह भी उन दोनों का सौभाग्य था। वह कुछ सोचकर उनके बंधन खोलना ही चाहता था कि इतने में तीन पहलवान सरीखे देव वहाँ पहुँच गये। उनके शरीरों पर केवल कच्छा था। शेर की खाल से उन्होंने शरीर पर क्रॉस बना रखा था।

कमल को रुकना पड़ा। उसकी निगाह उस तरफ मुड़ गयी। दूसरे ही क्षण वह बुरी तरह चौंक पड़ा। उसे लगा जैसे वह कोई स्वप्न देख रहा है। वह तीनों काले शरीरों के दानव लगते थे।

मगर उनमें से एक पर कमल की निगाह जमी थी।

“नहीं ये मेकफ नहीं हो सकता।” वह होठों के बीच बड़बड़ाया। उसकी आँखों में आश्चर्य था। उसने अपने सिर को इस प्रकार झटका दिया जैसे कोई स्वप्न देख रहा हो।

मगर वह स्वप्न नहीं था।

उनमें से दो राणा संग्राम सिंह के अंगरक्षक ब्लेक ब्लड और ब्लू ब्लड थे। तीसरा मेकफ के अलावा कोई नहीं था। राजेश का अंगरक्षक मेकफ जो प्रेतमहल से बाहर निकल आया था।

ढोलों की आवाज और तेज हुई।

तीनो हब्शी खूँखार नत्रों से उन्हें घूरते हुए कुछ कदम के फासले पर खड़े हो गये।

अचानक प्रतिमा की आँखों से आग की लहरें निकलने लगी। सभी पुजारी खड़े हो गये। उसी ढंग से उन्होंने अपना मस्तक नवाया और फिर बड़ा पुजारी प्रतिमा के समक्ष मंच पर चढ़ गया। उसने प्रतिमा के आगे शीश नवाया और फिर अन्य लोगों को बैठ जाने का संकेत दिया।

बड़े पुजारी का चेहरा तांबे के समान चमक रहा था।

कमल उसे अच्छी तरह जानता था।

वह तीनों उस समय मंच के दाँईं ओर खड़े थे और तीनों हब्शी बाँईं तरफ मौजूद थे। अभी तक कमल कपूर कुछ भी समझ पाने में असमर्थ था।

बड़े पुजारी ने ऊँचे स्वर में कुछ कहा और दूसरे ही पल दो अन्य इंसान अग्रिम पंक्ति से निकल कर बड़े पुजारी के दाँयें बाँयें खड़े हो गये। उनकी सूरत भी तांबे के समान थी। वह तीनों एक पंक्ति में एक भाव से खड़े थे।

उसी क्षण एक भयानक आवाज़ वातावरण में गूँज उठी। ऐसा जान पड़ता जैसे आवाज़ प्रतिमा के प्रत्येक भाग से निकल रही हो। उस आवाज़ में ऐसी गूँज थी कि मजबूत कलेजे वाला इंसान भी दहल उठे।

जनसमूह ने ऊँची आवाज़ में नारे लगाये।

नारे काफी बुलंद होने लगे।

ढोल की आवाज़ कानों के पर्दे फाड़ देने वाली थी। मैदान में गूँजने वाली विचित्र आवाज़ वायु मंडल में गूँज पैदा करती हुई दूर तक जा रही थी। प्रेतों की उस बस्ती में भयानक शोर पैदा होता जा रहा था। सहसा प्रतिमा अपने स्थान पर घूमने लगी। उसके साथ ही शोर कम होने लगा और कुछ मिनट बाद ही उल्लू की वह प्रतिमा धरती से कई फुट ऊपर उठ गयी।

प्रतिमा के नीचे आग का दहकता शोला था, जिसके मध्य एक इनसानी खाका स्पष्ट नजर आ रहा था, उसके जिस्म के चारो तरफ आग ही आग थी। प्रतिमा के समक्ष खड़े तीनों पुजारी पेट के बल लेट गये। उन्होंने कोई मंत्र पढ़ा और फिर अलग मंच के किनारे जा खड़े हुए।

मंत्र के मध्य इस समय वही आग का गोला था और गोले के ऊपर उल्लू की प्रतिमा चमक रही थी।

“मेरे सेवकों....।” गोले से अफ्रीकन भाषा में कहा गया,”आज एक लम्बे समय बाद मेरी आत्मा जागी है और मैं तुम सब को श्रद्धा से दर्शन देने चला आया हूँ। मैं तुम सभी से बेहद प्रसन्न हूँ। यह जानकार मुझे हर्ष होता है कि तुम सब अपने वतन की याद भूलकर काफी समय से मेरी सेवा कर रहे हो। और अब इंसान सच्ची लगन से पूजा करता है तो उसकी

लगन सफल होती है। तुम लोगों को आखिरी बार इस धरती को चूम कर विदा लेनी है, हर इंसान के सुख दुःख बड़े पुजारी द्वारा हम तक पहुँच जाते हैं। कुछ दिनों बाद ही हम अपने सभी सेवकों के लिये एक अद्‌भुत संसार का निर्माण करेंगे। वह देश जिसे लोग सोने की धरती कहते हैं, लेकिन वहाँ पहुँचने के लिये हमे उन पिछड़े इंसानों को समाप्त करना होगा, जो उस धरती पर अपना अधिकार जमाये हैं। हमने आज तक अपने भागों में आने वाले हर काँटे को मोड़ा है और एक बार फिर सबको अपनी जिन्दादिली का प्रमाण देना है। यहाँ से कुछ दूर सिंघराज नामक टापू है वही टापू सोने की धरती बनाई जायेगी और मेरे सेवक उसी टापू में एक नये संसार की स्थापना करेंगे। सिंघराज के इंसान संसार के प्रसिद्ध लड़ाके हैं - गनीमत है कि अभी वहाँ आधुनिक शस्त्र नहीं उपजे हैं। वह लोग तीर और तलवार से इतने दक्ष हैं कि उनका मुकाबला रिवॉल्वर और टॉमीगन से भी कठिन पड़ सकता है। लेकिन फिर भी मुझे अपने बहादुर सेवकों पर नाज है, वह इस युद्ध में विजयी होंगे। यह जानकार तुम सभी को हर्ष होगा कि इस युद्ध का नेतृत्व एक महान सम्राट करेगा, जो एक बार पहले भी सिंघराज की सरजमीन पर खून की होली खेल चुका है। सम्राट मानिक सिंघराज के सभी स्थानों से वाकिफ है।”

कुछ पल के लिये खातून की आत्मा शांत रही। मैदान में एकदम सन्नाटा छाया था। कहीं कोई आवाज़ नहीं पैदा हो रही थी।

“आज इन तीन इंसानों की ज़िन्दगी के फैसले से हमारा जश्न शुरू होगा। मैं इन तीन लोगों को बता देना आवश्यक समझता हूँ कि इन्हें सजाये मौत क्यों दी जा रही है। नम्बर एक कमल कपूर एक भारतीय जासूसों की टोली से सम्बन्ध रखता है, इसलिए हमारे सेवकों के कार्य में बाधा डाली। दिग्राज में घुसकर उसने अपनी मौत को निमन्त्रण दिया और हमारा नियम है कि बहादुरों की मौत भी बहादुरी से होनी चाहिये। कमल कपूर ब्लैक ब्लड से लड़कर अपनी शक्ति लगायेगा। यदि वह विजयी हुआ तो इस ब्लू ब्लड से लड़ना पड़ेगा अर्थात यह तब तक लड़ता रहेगा जब तक इसके शरीर में प्राण रहेंगे। इसके बाद मादाम फ्रेंटाशिया के दो गुलामों की बारी है। इन लोगों ने हमारे चार आदमियोंको समाप्त किया और उनके लिबासों को धारण करके बस्ती में घुसने का प्रयास किया जबकि हमारी निगाहों से बचकर यहाँ तक पहुँचना असंभव है। यह नहीं जानते कि बस्ती के चारों तरफ कुछ ऐसे चमत्कार छिपे हैं, जिनसे हम आसानी से इनकी हरकतें यहीं बैठे बैठे मालूम कर सकते हैं। इनके दो साथी हमारे सेवकों द्वारा मारे गये। इन दोनों को भी कमल कपूर की तरह लड़ते हुए मरना पड़ेगा। यह दृश्य हम अपनी आँखों से देखेंगे। इन दोनों की रस्सियाँ खोल दी जाये और इस जश्न की शुरुआत की जाये।”

बड़े पुजारी ने अपने पास खड़े हब्शियों को संकेत किया और वह दोनों मंच से उतर कर बंदियों के पीछे जा खड़े हुए। थर्टीन और फोर्टीन के बंधन खोल दिए गये।

“पहले यह लड़ाई बिना किसी शस्त्र के होगी।” आग के गोले से आवाज़ निकली।

कमल ने अपने साथियों को देखा जो रस्सियाँ खुल जाने के बाद अपनी कलाईयों को रगड़ रहे थे। उनके अन्दर थोड़ी शक्ति थी, जिससे वह कुछ समय तक लड़ सकते थे किंतु कमल तो एकदम निर्जीव खड़ा था।

वह ब्लैक ब्लड का एक हाथ भी नहीं सह सकता था। उसे पीछे खड़े व्यक्तियों ने मंच के सामने ढकेल दिया और शेष दोनों के आजू-बाजू भाग कर खड़े हो गये।

“कमल कपूर तुम मरते समय अपनी पूरी शक्ति लगा सकते हो?” आवाज़ आई।

धक्का लगने के कारण कमल लड़खड़ा कर औंधे मुँह गिर पड़ा था और जब वह सँभलकर खड़ा हुआ तो उसने हाथी के समान खड़े ब्लैक ब्लड को निहारा,जो उससे भिड़ने के लिये सामने आ गया था।

ढोल बजा।

ब्लैक ब्लड हिंसक मुस्कान के साथ धीमे धीमे आगे बढ़ा। कमल उसी गति से पीछे हटने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। इतने खतरनाक इंसानों से बचकर भागना भी असंभव था। पीछे वह कब तक हटता।

सहसा उसके दिमाग में एक योजना आ गयी। वह मंच की तरफ सरकने लगा। और फिर उछलकर मंच पर चढ़ गया। आग के गोले की गर्मी उसके शरीर से टकरा रही थी।

ब्लैक ब्लड रुक गया।

“नीचे उतरो।” बड़े पुजारी ने आदेश दिया।

स्थिति बड़ी खतरनाक थी। कमल ने कनखियों से बड़े पुजारी को निहारा, जिसके हाथ में विचित्र प्रकार की टॉर्चनुमा गन थी।

कमल सहमकर नीचे उतर गया।

सहसा ब्लैक ब्लड उस पर छलाँग लगा गया। भयानक फुर्ती से कमल जम्प लेकर लम्बा लेट गया। ब्लैक ब्लड खाली जमीन से टकराया। किंतु उसका विशेष प्रभाव उस पर नहीं पड़ा। वह फुर्ती के साथ उठ खड़ा हुआ।

कमल लेटे लेटे सरक रहा था।

जिस प्रकार बाघ अपने शिकार पर झपटता है। ठीक उसी प्रकार ब्लैक ब्लड कमल पर झपटा। इस बार कमल अपने को न बचा सका।

ब्लैक ब्लड के एक ही घूँसे ने उससे मस्तिष्क में अँधेरा फैला दिया और दोबारा जब उसे उठाकर पटका तो कमल की चीख निकल गयी। वह बेहोश नहीं होना चाहता था।

ब्लैक ब्लड ने उसे उठने के लिये उँगली का संकेत दिया। अचानक कमल ने उछलकर उसके पेट में सिर की टक्कर जड़ दी। यह कार्य उसने पूरी शक्ति लगाकर किया था। टक्कर मारने में सफल हो गया किंतु उसकी गर्दन ब्लैक ब्लड के बाजू में फँस गयी।

दूसरी चीख कमल के कंठ से निकली। ब्लैक ब्लड उसकी गर्दन को झटका दे रहा था।

“म..मेकफ..म...मुझे बचा लो...।” कंठ फाड़कर वह चीखा। इसके अलावा वह कर भी क्या सकता था। उसे आश्चर्य इस बात से हुआ था कि मेकफ खामोशी के साथ खड़ा उसे पिटते देख रहा था।

राजेश का बॉडी गार्ड मेकफ जैसे सोते से जागा।

उधर एजेंट फोर्टीन और थर्टीन किसी अवसर की ताक में थे; अभी वह दृश्य जारी ही था कि सहसा बड़े पुजारी के कंठ से घुटी-घुटी चीख निकली। वह आग के गोले से टकराकर

उलट गया। उसके पूरे जिस्म पर आग लग गयीं थी। मंच से एक नकाबपोश उछलकर उन दोनों पर गिरा जो एजेंट थर्टीन और फोर्टीन के पीछे खड़े थे।

न जाने वह नकाबबोश मंच पर किस तरफ से कूदा था।

दृश्य पलटा।

थर्टीन ने ब्लैक ब्लड पर छलाँग लगायी और फोर्टीन में उनमें से एक पुजारी को थामा, जो नकाबपोश से गुँथे थे। यह उत्पात खूनी था।

ब्लैक ब्लड गुँथा हुआ थर्टीन के साथ लुढ़क गया। उसी समय आग के गोले से तीन शोले निकले। लक्ष्य नकाबपोश और दोनों एजेंटों को लिया गया था। किंतु वह तीनों भी कम फुर्तीले नहीं थे। परिणाम बड़ा भयंकर साबित हुआ। एक शोला ब्लैक ब्लड के शरीर से टकराया।

जिसकी चपेट में थर्टीन भी आ गया था।

नकाबपोश फोर्टीन को समेटता हुआ मंच के बाँईं और लुढ़क गया। उनमें से एक पुजारी तो बच गया किंतु दूसरे के कंठ से भयानक डकार निकली।

तीन इंसान आग से जलते हुए चीख रहे थे।

“इस नकाबपोश को समाप्त कर दो।” गोले से भयानक स्वर निकला-”यह लोग भागने न पाएं।”

कई गोलियाँ नकाबपोश के शरीर से टकरा गईं। बस्ती के प्रेतों ने अपनी गनें खींच ली... एक अजीब सा शोर वहाँ गूँज उठा।

ब्लू ब्लड सकपका कर पीछे हटने लगा। गोलियाँ चलते ही उन लोगों ने पोजीशन लेनी शुरू कर दी थी। ब्लू ब्लड मंच के पीछे छलाँग लगा गया। और उसके पीछे मेकफ ने भी छलाँग लगा दी... गोलियों का केंद्र मंच के सामने वाला मैदान था। जिस पर इस समय बहुत सारे इंसान तड़प रहे थे। धीरे-धीरे उनकी चीखें मद्धिम पड़ती जा रही थी, नकाबपोश शायद बुलेटप्रूफ में छिपा था। वह फोर्टीन को लिटाकर उसके आगे पोजीशन ले चुका था। वैसे ही गन उसके हाथ में भी थी।

उन इंसानों के चेहरे का लक्ष्य लेकर वह फायर करता जा रहा था। उनमें से कई चीखें मारकर उलट गये थे।

“तुम्हारी बर्बादी है खातून की आत्मा...आज की रात कोई यहाँ से बचकर नहीं जा पायेगा। जिस इंसान पर तुम्हें नाज़ था वह अपने ही आविष्कार से समाप्त हो चुका है। यह आवाज़ कैप्टन हमीद की थी। उसने चीख-चीख कर उक्त शब्द कहे थे।”

इस नाटक का रुख बदलता देख रमेश भी चुप नहीं बैठा। वह भी स्थायी सेवकों की पौशाक में बैठा था। नकाबपोश को स्टेज पर देखते ही उसने मंच की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया था और बड़ी फुर्ती से कमल के ऊपर छा गया था। अन्य सेवकों ने समझा, वह कमल को अपनी गिरफ्त में ले चुका है अतः सबका रुख बाँईं तरफ कुछ अँधेरे में लेटे नकाबपोश की तरफ हो गया।

रमेश कमल को घसीटता हुआ उस तरफ ले गया; जहाँ दाँईं तरफ ब्लू ब्लड और मेकफ ने छलाँग लगाकर पोजीशन ले ली थी।

मशालें बुझने लगीं।

मशालों के बजाय चिंगारियों का नृत्य शुरू हो गया। उधर आग का गोला बड़ी तेजी के साथ घूमकर जमीन में धँसने लगा, कुछ लोगों की निगाह ऊपर खुले आकाश की तरफ उठ गई, जहाँ एक हेलिकॉप्टर चकराने लगा था।

हेलिकॉप्टर से कुछ पैराशूट छोड़ दिये गये थे।

साथ ही माइक पर एक तेज आवाज़ बस्ती के कोने-कोने में फैलने लगी। यह आवाज़ हैलीकॉप्टर से ही आ रही थी।

"पूरी बस्ती को कबीलों के खूँखार इंसानों ने घेर लिया है, दिग्राज के वह भील आधुनिक शस्त्रों से लेस हैं। तुम लोग किसी भी मार्ग से नहीं बच सकते। अपने हथियारों को गिराकर आत्म समर्पण कर दो...अन्यथा हमारा एक संकेत तुम सबको भून देगा।"

यह आवाज़ सीक्रेट ब्रांच के चीफ पवन की थी, जो रह-रहकर हैलीकॉप्टर पर लगे माइक पर गूँज रही थी, हैलीकॉप्टर बस्ती के ठीक ऊपर चकरा रहा था। पैराशूटों से उतरने वाले इंसान बस्ती के चारों तरफ गोल दायरे में फैले मकानों पर उतर गये थे। वह संख्या में केवल आठ थे, फिर भी उनमें से एक-एक सैकड़ों पर भारी पड़ सकता था।

खातून की आत्मा हर तरफ से आने वाली मुसीबतों के कारण धरती के गर्भ में समा गयीं थी। अब मंच पर केवल उल्लू की प्रतिमा थी। अब उसकी अंगारों के समान चमकने वाली आँखों में स्याहपन था। अँधेरा प्रगाड़ हो गया। सभी मशालें बुझ गईं। बस्ती के चारों तरफ शोर गुल पैदा हो रहा था। न जाने क्यों बाहर से घेरा डालने वाले इंसानों ने अभी तक बस्ती में कदम नहीं रखा था। शायद उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया था।

मकानों की छतों पर लेटे व्यक्तियों द्वारा आठ कोनों से लगातार गोलियों की वर्षा हो रही थी।

मैदान में भगदड़ और चीखों का शोर था।

वातावरण में मौत का कोहराम छाया था।

ऊपर से फायरिंग होते देख जीवित इंसानों ने बचाव के स्थान खोज लिये थे। अब मैदान से उठने वाली चिंगारियाँ शांत हो गयीं थी। शायद उन्होंने आत्म-समर्पण करने का फैसला कर लिया था।

और काफी देर वार्निंग देने के बाद हैलीकॉप्टर ने जब सर्च लाईट का प्रकाश मैदान में फेंका तो एक और ही तिलस्म नज़र आया। मैदान में वही व्यक्ति पड़े थे जो मर चुके थे या ज्यादा घायल हो गये थे। जीवित इंसानों का कुछ भी पता नहीं था।

हैलीकॉप्टर की पायलट सीट पर स्वयं फाइव टू बैठा था। मैदान के उस दृश्य को देखते ही उसका माथा ठनका। उसने तुरन्त गैस मास्क चढ़ाया और हैलीकॉप्टर को मैदान में उतार दिया।

इस बात का एहसास मदन को भी हुआ की वातावरण में किसी प्रकार की गैस छोड़ दी गयीं है। शायद वह जहरीली गैस थी। उसने मकान से नीचे छलाँग लगा दी। भागता हुआ हैलीकॉप्टर के निकट पहुँचा।

"सर... जहरीली गैस--।"

“तुम गैस मास्क चढ़ाकर पूरे मैदान को छान मारो, और हाँ मकानों में प्रविष्ट होने की आवश्यकता नहीं। शायद अभी यहाँ भयंकर खतरा है। मुझे ऐसा लगता है मकानों में ही-गुप्त रास्ते हैं, जिनसे वह भाग रहे हैं और यहाँ जहरीली गैस छोड़ दी गयीं है.... गो ऑन...।”

मदन ने गैस मास्क चढ़ाया और शक्तिशाली टोर्च लेकर मैदान में पड़े इंसानों को टटोलने लगा। वह प्रत्येक इंसान के चेहरे को ध्यानपूर्वक टटोलता, उसके पास एक छोटी सीखनुमा वस्तु थी जिससे वह किसी तरल पदार्थ की बूँदे प्रत्येक के चेहरे पर टपका रहा था। मेकफ के पास पहुँचते ही वह चौंक पड़ा।

पास ही ब्लू ब्लड के सीने में लम्बे फल का चाकू घूँसा था, जिससे ढेर सारा रक्त फैल गया था। खून से मेकफ भी पूरी तरह भीग रहा था।

वह लम्बा लेटा हुआ धीरे-धीरे साँस ले रहा था।

“मेकफ...।” मदन ने उसे झंझोड़ा।

“अ...आ ...म...मैं।”

“ओ तुम फ़िक्र मत करो... और लोग कहाँ हैं?”

“कमलकांत...” मेकफ बड़बड़ाया।

उसने ऊँगली से एक तरफ संकेत किया जहाँ दो व्यक्ति लम्बे लेटे थे। एक का शरीर धीरे-धीरे हरकत कर रहा था। दूसरा पूरी तरह चेतना गँवा चुका था। उधर मेकफ ने भी चेतना गँवा दी।

मदन की टोर्च का प्रकाश उन दोनों के शरीर पर रेंग गया।

दूसरा प्रकाश पड़ते ही एकदम पलट गया...उसके हाथ में छोटी-सी गन दबी थी... आँखें बंद होती जा रही थीं; होंठ कुछ फैले थे।

जान पड़ता जैसे मरने से पूर्व होंठों पर हिंसक मुस्कान आ गयीं हो।

“हु... आर.. यू.. “ उसने लड़खड़ाते स्वर में पूछा।

मदन उसे तो नहीं पहचान पाया किंतु कमल को वह पहली ही नज़र में पहचान गया। कमल बेहोश स्थिति में पड़ा था।

“शायद तुम एक एजेंट हो।” मदन ने कहा--”हमें सूचना मिल चुकी थी....।”

“मगर तुम।”

“एजेंटऑफ़ इंडियन सीक्रेट ब्रांच... “

“ओह...मेरा सिर अचानक भारी हो गया है... शायद कोई जहरीली गैस...।”

वह रमेश था जो मेकफ से लगभग बीस कदम दूर कमल के साथ लेट गया था। फायरिंग के कारण उसने उठाना उचित नहीं समझा। इस वक्त गैस का प्रभाव उसे चेतना शून्य बनाता जा रहा था।

“ठहरो- मैं अभी इसको व्यवस्था करता हूँ।” इतना कहकर मदन ने सर्वप्रथम कमल को कंधे पर लादा और भागता चला गया। रमेश सँभाल कर उठा और दोनों हाथों से सिर पकड़कर उसी तरफ बढ़ने लगा, जहाँ हैलीकॉप्टर खड़ा था।

अब तक माथुर और कपिल फोर्टीन को हैलीकॉप्टर तक पहुँचा चुके थे। उन सभी ने गैस

मास्क पहन लिये थे। फोर्टीन चेतना शून्य हो गया था।

मदन ने अजय और चौहान को वहाँ भेजा जहाँ मेकफ बेहोश हो चुका था और रमेश भी लड़खड़ा कर मंच के पास गिर गया था। बेहोश इंसानों को हैलीकॉप्टर पे पहुँचायाजा रहा था। जो मर चुके थे उन्हें छोड़ दिया जाता।

फाइव टू अपने एजेंट्स को आदेश देता हुआ उल्लू की प्रतिमा की तरफ बढ़ गया। इस समय हैलीकॉप्टर के ऊपर चारों तरफ पड़ने वाली सर्चलाइट से पूरी बस्ती में प्रकाश हो गया था।

उसने सर्वप्रथम मंच पर पड़े इंसान को टटोला। उसके शरीर में हल्का सा प्राण बाकी था। वह सबसे बड़ा पुजारी था जिसको हमीद ने आग के गोले की तरफ उछाल दिया था। पुजारी ने आग की लपटों से घिरते ही अपने वस्त्र उतारने शुरू कर दिये थे, किंतु फिर भी वह इतना कामयाब न हो सका कि मंच से भाग सके।

फाइव टू ने उसे हिलाया।

उसका चेहरा आग से झुलस जाने के कारण अत्यन्त भयानक हो चुका था। आँखें तो पूरी तरह जल चुकी थी- शायद उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। किंतु हाथ धीरे-धीरे हिल रहे थे।

“क्या तुम होश में हो…?” फाइव टू ने उसे झिंझोड़ा।

“म…मैं..मुझे कुछ दिखाई नहीं देता….आह…मैं..”

“कौन हो तुम… ?”

“ड… डॉक्टर लियो….।”

“व्हाट….।” फाइव टू एकदम चौंक गया। वह डॉक्टर लियो जिसके पीछे जासूसों की टीम हाथ धोकर पड़ी थी, वही वैज्ञानिक इस समय विचित्र स्थिति में दम तोड़ रहा था।

“मैं मर रहा हूँ…. अब नहीं बचूँगा…लेकिन तुम लोग उसे बचा लो… नहीं तो वह….।”

“कौन…किसको बचा लें डॉक्टर…।”

“वह पागल है… यह देखो… प्रतिमा की दोनों आँखों में दो जख्म होंगे …. तुम उन्हें दबाओ तुम्हें सारा रहस्य मालूम हो जायेगा। मगर इतना ध्यान रखना…खजाने के पागलपन ने उसे इंसान से हैवान बना दिया है.. उसे मारना मत...तुम देखोगे, उसके सीने में कितना कोमल दिल है। आह…. मेरी बात….।”

डॉक्टर लियो की गर्दन एक तरफ लुढ़क गयी।

फाइव टू ने उसकी नब्ज टटोली और फिर ठंडी साँस खींची। डॉक्टर लियो पूरा रहस्य बताये बिना हमेशा के लिये शांत हो गया था। वह पुजारी, जिससे दिग्राज काँपता था , दयनीय स्थिति में मर गया।

मगर खातून की आत्मा….।

एक रहस्य बड़ी तेजी से फाइव टू के दिमाग में झनझना गया।वह उठ खड़ा हुआ। मंच से नीचे देखा - एक हब्शी जल जाने से और भी काला पड़ गया था। उसकी जीभ बाहर निकल

गयीं थी।

शरीर पर जला हुआ माँस चिपका था।

उसके निकट ही दो इंसान और मृत स्थिति में पड़े थे। फाइव टू की निगाह उन पर मंडराती हुई प्रतिमा पर जम गयी। उल्लू की वह भयानक करामाती प्रतिमा अब खामोश खड़ी थी।

उसका कोई भी आंतक अब उस बस्ती में नहीं था।

फाइव टू ने दोनों हाथ उठाये... वह प्रतिमा लगभग दस फ़ीट ऊँची थी। किसी तरह फाइव टू ऊपर चढ़ गया। उसने दोनों आँखों में अपने हाथ डाले। वास्तव में अंदर दो बटन थे। फाइव टू फुर्ती के साथ नीचे उतर गया। वह मंच पर खड़ा चकित निगाहों से प्रतिमा को दो भागों में विभाजित होते देख रहा था।

बीचमें चौकौर स्थान बन गया, जिससे कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरती दिखाई दे रही थीं। प्रतिमा के बीच पड़ने वाली दरार लगभग चार फिट फ़ैल गयीं थी।

फाइव टू ने नीचे झाँका।

अँधेरा काफी गहन था। कुछ दूर तक सीढ़ियाँ नजर आ रही थी, उसके बाद वह अंधकार में खो गयीं थी। न जाने क्या सोचकर फाइव टू वापिस मुड़ा - वह तेजी के साथ उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ हैलीकॉप्टर खड़ा था।

उसने भर्राये स्वर में नये आदेश जारी किये।

“घायलों को सुरक्षित भीगूं कबीले में पहुँचा दो- यह काम माथुर और कपिल करेंगे... बस्ती के चारों तरफ अब भी विद्युत तारों का जाल बिछा होगा .... अतःहैलकॉप्टर के जरिये उड़ान भरें... मैं ट्रांसमीटर से अगले आदेश दूँगा। पास ही घोड़ों की अस्तबल होनी चाहिये, मगर अब मकानों के दायरे में प्रविष्ट होना खतरनाक है- शायद घोड़े भी ऐसे ही किसी मकान में खड़े किये गये थे। जहाँ बाहर से दीवारों का घेरा है। यह भी हो सकता है कि गैस के प्रभाव से वह बेहोश हो गये। हाँ...इन्हे सुरक्षित पहुँचाते ही मुझे ट्रांसमीटर पर कॉल करें... बाकी सब मेरे साथ आयें।”

इन आदेशों का पालन तुरन्त हुआ।

मदन... अजय.... चौहान... और जौली हरकत में आ गये। उन्होंने अपना आवश्यक सामान सँभाला और फाइव टू के साथ मंच तक पहुँच गये। सीक्रेट ब्राँच के यह एजेंटप्रत्येक कार्य में दक्ष थे।

हैलीकॉप्टर का इंजिन जाग गया।

दूसरी पार्टी सावधानी से सीढ़ियाँ उतरने लगी। यह अनजाना मार्ग था,आगे मौत के मुँह में कदम रखने वाला फाइव टू था जिसे समस्त एजेंटपवन समझते थे।

राजेश की अनुपस्थिति में वह अनेक रूपों में कार्य करता था।

एक लम्बे अरसे से वह चीफ पवन का रोल करता आ रहा था। इस बार उसे स्वयं मैदान में उतरना पड़ा। राजेश के बारे में वह अनजान था।

वह ऑपरेशन सचमुच कंपा देने वाला था।

राजेश के आदेश पर ही उसके दल दिग्राज की ख़ाक छानते रहे और तब फाइव टू ने भींगू

कबीले के स्थानीय लिबास में वहाँ प्रवेश किया था।कबीले के सरदार को कुछ चमत्कार दिखाने के बाद उसने बताया कि वह दुनिया का प्रसिद्ध जादूगर है और दिग्राज में कुछ पापियों का खात्मा करने आया है। कबीले के लोग उससे प्रभावित हो गये और तब उसने अपना अड्डा ही वहाँ जमा लिया। कबीले का सरदार कुछ अंग्रजी भाषा का ज्ञाता भी था। अतः उसे आधुनिक शस्त्रों का पूरा-पूरा ज्ञान था। वह स्वयं उन खूँखार पुजारियों से टकराने का उचित अवसर खोज रहा था।दो एक बार उसके आदमियों ने पुजारियों की बस्ती में भी घुसना चाहा... मगर बस्ती में घुसने से पहले ही वह चमकीली तारों में उलझ कर मर गये।

फाइव टू ने अपने ढंग से कार्य शुरू किया।

यह उसके लिये अच्छी ही बात थी किभींगू कबीले का सरदार खातून के पुजारियों के बारे में बहुत कुछ जानता था। उसका कहना था कि उन्होंने यहाँ कि जनता को प्रेत लीला और आत्माओं का चक्कर दिखाकर भयभीत कर दिया है। कई कबीलों में आग भी लगाई।

उसके एजेंटवहाँ स्थाई लिबास में रहने लगे।

हैलीकॉप्टर उन्होंने रात्रि के समय एक छोटे मैदान में उतार कर छिपा दिया था। उस रात वह पुजारियों की बस्ती में प्रेत लीला देख चुके थे। उन्हें कुछ खतरे का आभास हुआ और तब उन्होंने अचानक बस्ती पर हमला बोलने की योजना बना ली थी।

लगभग दो घंटे बाद वहाँ शानदार जश्न की तैयारियाँ होने लगी। मशालें जल उठी और उन प्रेतों ने अपनी वह पोशाक उतार कर दूसरी पोशाकें पहनली थीं।

फाइव टू स्वयं एक ऊँची चट्टान पर लेटा हुआ बस्ती का दृश्य देखता रहा। दूरबीन से उजाले में सब कुछ स्पष्ट नजर आने लगा था।

बस्ती पर घेरा डाल दिया गया।

फाइव टूने सख्त हिदायत दी थी कि उन चमकीले तारों का दायरा कोई भी इंसान पार न करें- बस्ती में दाखिल होने का रास्ता न था। हैलीकॉप्टर द्वारा वहाँ पहुँचा जाये।

योजना बनते देर न लगी।

वह ऐसे संयोग थे जो बंदियों के भाग्य के लिये अच्छे साबित हुए अन्यथा वह किसी भी कीमत पर बच नहीं सकते थे।

यह सब कुछ ही समय में हो गया था।

जब हेलीकॉप्टर ने काफी ऊँची उड़ान भरी तभी बस्ती में धमाके होने लगे। जिससे स्पष्ट आभास हुआ कि वहाँ कुछ लोग वापस में भिड़ गये हैं। दूरबीन से वह दो एक बंदियों को पहले ही देख चुका था। उसने ऐसे समय चूकना उचित नहीं समझा और तुरन्त हैलीकॉप्टर को झुका दिया।

जबकि वह नहीं जानता था कि बस्ती में आतंक मचाने वाले उसके जाने पहचाने चेहरे निकलेंगे। यह हर्ष की बात थी कि वह कुछ और इंसानों को पा चुका था।

इन सब बातों के बावजूद भी वह रहस्य की जड़ तक नहीं पहुँच पाया और अब वह लोग एक अनजानी राह पर उतरने जा रहे थे। एक ऐसा अन्धकूप, जिसके बारे में उन्हें कोई ज्ञान नहीं था।

फाइव टू टॉर्च जलाये सीढ़ियाँ तय करता जा रहा था।

कुछ देर में ही उसके पाँव जमीन से टिक गये। टॉर्च के प्रकाश में निरीक्षण किया। वह चौकीदार का कमरा था। जिसकी दीवारें काँच के समान पारदर्शक थीं। उस कमरे में अनेकों यंत्र लगे थे जो इस समय शांत पड़े थे। शीशे की एक दीवार टूटी पड़ी थी।

फाइव टू ने हाथों पर दस्ताने चढ़ा लिए। रबड़ के दस्ताने पहनने के बाद वह यंत्रों को टटोलने लगा। उसने एक बड़े से गोलाकार ड्रम पर हाथ रखा- ड्रम का ढक्कन हटाते ही तेज आग की लपट उठी। फाइव टू ने उसे तुरंत बंद कर दिया।

“फॉस्फोरस का भारी स्टॉक उफ़- यह लोग कितने भयानक थे-”

“क्या बात है सर?” मदन ने पास जाकर कहा।

आग और शोलों की करामात फॉस्फोरस और पेट्रोल का समिश्रण, शायद वह किसी तीव्र गति वाली गनों से फेंका जाता था, मगर अब वहाँ कुछ भी नहीं है।

उसने टूटी दीवार पर प्रकाश डाला।

दूसरी तरफ चौड़ी सुरंग थी।

“आओ।”

फाइव टू उस टूटी दीवार से बाहर निकल गया। उनके पीछे अन्य लोग भी बाहर निकल गये।

सुंरग काफी चौड़ी थी।

उसमें अनेकों छोटी बड़ी दरारें पड़ी थीं। कुछ दूर निकलने के बाद दो तीन बेढब कमरे नजर आये। वह सतर्कता पूर्वक बढ़ते गये, टॉर्च के प्रकाश में वह सभी कमरों का निरीक्षण करते रहे। कमरों में अच्छे खासे बिस्तर पड़े थे। बहुत सी अंग्रेजी शराब की बोतलें भी बरामद हुई।

एक कमरे में हल्की कराहट उत्पन्न हुई।

फाइव टू के कदम रुक गये, उसने लकड़ी के दरवाजे को धक्का दिया। कमरे में अँधेरा था। कराहना का स्वर बराबर जारी था। फाइव टू ने प्रकाश डाला। उसे एक लड़की रस्सी से जकड़ी नज़र आयी।

लड़की का शरीर नग्न था।

तुरन्त फाइव टू ने टॉर्च बुझाई और उसके समीप पहुँच गया। उसने मुड़कर दूसरी तरफ फेंका एक कपड़ा उसे पड़ा हुआ नजर आया। उसने युवती का शरीर कपड़े से ढक दिया।

जोली को उसकी तरफ संकेत करके वह बाहर निकल गया।

उसके बाद सुरंग के रहस्य खुलते चले गये। वहाँ उसी प्रकार बहुत सी लड़कियाँ कैद थीं जो निश्चित रूप से दिग्राज के अन्य कबीलों से अपहरण की गईं थी।

आगे चलकर सुरंगों के रास्ते खुलने लगे।

ज़मीन भी कुछ गीली होने लगी थीं। उस गीली ज़मीन पर अनेकों पाँवों के निशान नजर आ रहे थे, जो ताज़े ही बने थे। वह निशान विभिन्न छोटी सुरंगों से आते हुए एक बड़ी सुरंग की तरफ चले गये थे।

"लगता है वह लोग निकल गये हैं, यह रास्ते शायद उनके मकानों में खुलते होंगे। हमें सामने वाली सुरंग में चलना चाहिये, ठहरो...। मेरे साथ मदन चलेगा। तुम लोग कैद हुई लड़कियों को आज़ाद करके किसी एक कमरे में एकत्रित कर लो।"

फाईव टू मदन को साथ लेकर चौड़ी सुरंग में तेजी के साथ बढ़ने लगा। कुछ दूर निकलने के बाद नमीका स्थान जल ने ले लिया। जल बढ़ता चला गया और अन्त में उन्हें रुक जाना पड़ा।

इसका कारण ठंडी हवा के झौंके थे।

सामने शक्तिशाली टॉर्च के प्रकाश में ढलुवाँ उतरती सुरंग का किनारा नजर आ रहा था, जो एक चौड़ी खोह थी। वहाँतक पहुँचने के लिये आवश्यक था कि उन्हें तैर कर जाना पड़ता।

यह काम फाईव टू ने अकेले किया। टॉर्च उसने मदन को थमा दी थी। खोह से उस पार उतरते ही उसे उधर सागर का किनारा नजर आया। एक टूटी हुई पनडुब्बी भी खोह के किनारे खड़ी थी।

इसी से उसने अनुमान लगा लिया कि या तो वह लोग पनडुब्बी से निकल भागे हैं अथवा उनके पास कोई जलपोत इत्यादि है। फिलहाल दूर तक सागर का जल शांत नजर आ रहा था। ज्यादा दूर तक फाइव टू नहीं गया, वह अपनी खोज का परिणाम निकाल कर वापस आ गया।

मदन ने प्रश्नवाचक निगाहों से देखा।

"वह लोग निकल गये हैं। इस वक्त उनका पीछा नहीं किया जा सकता। हमे वापस लौटना चाहिये कम ऑन।"

"लेकिन सर इतनी जल्दी वह कैसे निकल गये।"

"उन्हें काफी अवसर मिल गया था। और फिर वह अब तो मुश्किल से तीस रहे होंगे, मेरे ख्याल से कुछ मकानों में ही बेहोश हो गये होंगे, फिलहाल जो सुरंगों तक पहुँच गया। जल्दी में वही निकल पाया। शायद खातून की आत्मा डॉक्टर लियो के अन्त से घबरा गयीं है। डॉक्टर लियो इस भयंकर टोली का प्रमुख अंग था। वैज्ञानिक चमत्कार सब उसी के दिमाग की देन हैं। "

"मगर खातून की आत्मा है कौन-?"

"बहुत से रहस्य अंधकार में हैं। आओ आज की रात हम पूरी तरह सफल नहीं हो पाये। निश्चित रूप से वह वसीयत प्राप्त हो चुकी है अन्यथा यह लोग इस प्रकार अपने अड्डे को छोड़कर नहीं जा सकते थे -।"

"वसीयत-।"

"न समझो तो अच्छा है।" फाईव टू ने ठंडी साँस खींच- "वैसे इतना जान लो कि वह कर्नल विनोद की वसीयत है। इस गोरख धन्धे को अभी तक मेरा दिमाग भी नहीं समझ पाया है।"

पहली बार मदन ने पवन के मुँह से निराशाजनक शब्द सुने थे।

ऐसा उसके जीवन का पहला अनुभव था, जब सीक्रेट ब्राँच का चीफ पवन स्वयं निराश हो जाये - यह पहला अवसर था जब मदन अपने चीफ को इतने करीब से देख रहा था। जबकि वह नहीं जानता था कि असली चीफ राजेश है।

वह लोग वापस मुड़ गये।

फाईव टू का दिमाग बुरी तरह चकरा रहा था। वह अपनी टोली को इस प्रकार खुलेआम कन्ट्रोल कर रहा था, जिसे वह बड़ी कठिनाई से कर पा रहा था। उसे इस समय राजेश की अनुपस्थिति बुरी तरह खल रही थी।

बेचारा इन मामलों में पूरी तरह वाकिफ भी नहीं था।

उसके जितना विवेकशाली तो मदन था। मदन लगातार राजेश के साथ रहने से काफी बुद्धिमान हो चुका था।

फाईव टू सोच रहा था कहीं मदन ने इसी प्रकार के दो चार प्रश्न और कर दिये तो वह गड़बड़ा जायेगा। अतः इस वक्त वह टाल जाना चाहता था।

उसे राजेश की चिन्ता खाये जा रही थी।

दिग्राज के अड्डे को फतह करने के बाद भी वह केस की कड़ियों को नहीं खोल पाया था। अजीब कशमकश के बीच वह वापस लौट पड़ा।

□□□

स्टीमर को एक किनारे लगाकर रोक दिया गया था। वह लोग इस समय सिंघराज की भूमि से टकरा चुके थे। स्टीमर से बोटें पानी में उतार दी गयीं और जेवराक व राजेश की टोली ने बोट द्वारा आगे की यात्रा जारी कर दी।

आवश्यक सामान भी साथ ले लिया गया था।

दो ऊँची मीनारनुमा पर्वत मालाओं के बीच पानी की नहर सी चली गयी थी। जेवराक का कथन था कि वही एक मार्ग ऐसा है, जिससे सिंघराज में प्रवेश किया जा सकता है।

रात पूरी तरह घिर आई थी।

वह टापू शांत था। अलबत्ता सागर की लहरें किनारों से टकरा कर शोर मचा रही थी।

अग्रिम बोट में राजेश और जेवराक थे। उनके पीछे कतार सीबंधी आ रही थी। वह लोग मीनारनुमा पहाड़ी के बीच नहर में बढ़ रहे थे। अनजाने टापू की यह यात्रा काफी रोमाँचकारी लग रही थी।

वह एक ऐसे देश में जा रहे थे, जहाँ से कोई वापिस नहीं लौट पाया था। नहर काफी दूर तक चली गयी थी।

आगे चल कर रास्ता कुछ संकीर्ण होने लगा।

“कितनी दूर चलना पड़ेगा?” राजेश ने पूछा।

“क्या अनुमान लगाया जा सकता है।” जेवराक ने अनभिज्ञता प्रकट की।

जेम्सन जो कि अब तक शांत था बोट का चप्पू रोक कर बोला।

“बॉस! आखिर हम लोग दिन के उजाले में भी तो जा सकते थे।”

“चप्पू मत रोको।” राजेश ने बुरा सा मुँह बनाया।

“आप तो कमलकांत बॉस की खोज में निकले थे मगर मुझे लगता है कि अभी बॉस मरे नहीं है।”

“क्या मतलब?”

“यह नर्क लोक है, जहाँ आदमी मरने के बाद ही आ सकता है। म-मेरी समझ में नहीं आता कमल बॉस अगर मर भी जाते तो उन्हें स्वर्ग मिलनी चाहिये, यह नर्क लोक-।”

“ए नर्क लोक की औलाद! तुम्हारा चप्पू वाला साथी तुम्हें घूर रहा है।” राजेश ने फटकारा।

जेम्सन ने इस प्रकार मुँह बनाया जैसे कड़वी दवा निगल रहा हो, उसने बराबर में बैठे नीग्रो को देखा। जो जेम्सन के हाथ रुक जाने के कारण उसे घूरने लगा था।

“उल्लू का पट्ठा है।” जेम्सन हिन्दी में बड़बड़ाया। नीग्रो अगर उसकी बात का अर्थ समझता तो निश्चित रूप से उसे पानी में उछाल देता।

जेम्सन ने पुनः चप्पू सँभाल लिया।

कुछ देर में ही उनकी बोट एक ऐसे स्थान पर पहुँची जहाँ कोहरा सा छा गया था। ऊपर चाँद का प्रकाश पड़ने के कारण कोहरे की परतें दोनों ओर की पहाड़ियों तक उड़ती चली गयीं थी।

“अलिफ़ लैला का घर है बॉस। यह धुँआ कैसा है? हम किसी जादुई संसार…”

“चुप रहो सुअर!” राजेश ने उसे डाँट दिया और फिर उठ खड़ा हुआ। उसने शक्तिशाली टॉर्च जलाकर उस कोहरे का निरीक्षण किया।

“कोहरा है?” राजेश बड़बड़ाया।

“मगर मौत का। “ जेम्सन ने फिर टाँग अड़ाई- “वापस लौट चलिए बॉस! मुझे डबल सर्दी लग रही है।”

राजेश ने पीछे मुड़कर देखा, उसके अन्य साथी भी बढ़े आ रहे थे। चप्पुओं की आवाज़ मौन भंग कर रही थी।

सहसा उनके सामने पानीबड़े जोरों के साथ उछला।पानीके कुछ छीटें उनकी बोट पर पड़े।

“शार्क- ओह गॉड।” जेवराक ने जल में छलाँग लगा दी वह किनारे की ओर तेजी के साथ तैरने लगा। उसके हाथ में खुला चाकू चमक रहा था।

राजेश संभला, उसने तुरन्त गैस सिलेण्डर चढ़ाया और एन्टीवाटरगन सँभाल ली। बौखला कर जेम्सन ने भी अपना सिलेण्डर चढ़ा लिया। जिस तरफ पानी उछला था, राजेश ने गन का रुख उसी तरफ मोड़कर ट्रिगर दबा दिया।

लेकिन परिणाम विपरीत हुआ।

बोट न जाने कैसे एकदम उछल गयी। राजेश ने उछलती बोट के साथ ही जेम्सन की कलाई थाम ली थी। वह एक लम्बा गोता लगाकर तेजी के साथ तैरने लगा। पानी में किसी की डकार सुनाई दी।

राजेश इससे पहले ही किसी सुरक्षित किनारे पर पहुँच जाना चाहता था। इतनी जल्दी

खतरा आ जायेगा इसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

पानी में काफी तेज़ हलचल पैदा हो गयी।

राजेश का एक हाथ जेम्सन की कलाई थामे था। कुछ क्षण बाद ही वह पानी में ही किसी गोल सुराख में प्रविष्ट हो गया...उस समय उसने इसकी ज़रा भी परवाह नहीं की कि यह गोल सुराख भी किसी जल जीव का हो सकता है। उसे सिर्फ एक काला धब्बा नज़र आया था।

वही उपयुक्त स्थान दिखाई दिया।

जेम्सन को भी उसने उसी में खींच लिया। जेम्सन स्वयं भी हाथ-पाँव चला रहा था। दोनों तैरते हुए सुराख में बढ़ते चले गये, जो क्रमशः चौड़ा होता गया था। कुछ दूर तैरने के बाद राजेश ने पानी की सतह की ओर अपने शरीर को झटका दिया। वह दोनों सतह पर आ गये। अँधेरे की गहन पर्तों ने उन्हें घेर लिया था... दूर तक अँधेरा ही अँधेरा नजर आ रहा था।

जेम्सन के आधे होश उड़ चुके थे।

राजेश उसे किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर अपने साथियों की खबर लेना चाहता था।

“विपरीत दिशा में तैरते चले जाओ।” गैस सिलेन्डर का फेस हटाकर उसने कहा। दोनों पानी की उस अँधेरी खोह में तैरने लगे। आगे राजेश एन्टीवाटर गन सँभाले तैर रहा था। उसकी सभी इन्द्रियाँ सजग थीं।

अचानक वह चौंक पड़ा... उसके नथुनों में प्रविष्ट होने वाली गंध विचित्र थी। जैसे माँस सड़ जाने की दुर्गंध आती है। निश्चित रूप से वह गैस जहरीली थी।

“सिलेंडर फेस चढ़ा लो।”

दोनों ने गैस सिलेंडर के बड़े कैप का हिस्सा चेहरे पर खींच लिया। राजेश को अपने साथियों की चिन्ता थी। जाने उन लोगों के साथ क्या गुजरी थी। फिलहाल इस समय उसे भयंकर खतरे की गंध अनुभव हो रही थी। उसका अनुमान था कि यदि वह अपने साथियों की सहायता करने गया तो वह जेम्सन को भी नहीं बचा पायेगा।

उसे जेवराक पर भरोसा था।

जेवराक खतरों में पला इंसान था.... जिसने एडवेंचर में ही अपना जीवन गुजारा था। राजेश ने उन लोगों को जेवराक पर छोड़ दिया... उसने अपने मन का ढाढ़स बंधाया और तेजी के साथ तैरने लगा।

वह अँधेरे पानी में तैरता जा रहा था। कुछ मिनट तैरने के बाद उसे ऐसा लगा जैसे पानी अपने बहाव के साथ खींचने लगा है। साथ ही वह खोह बारीक होती जा रही है। न जाने क्यों उसका मन शंकित हो उठा।

मगर भाग्य शायद उसका साथ छोड़ चुका था।

उसके शरीर को पानी का तेज झटका लगा... प्रथम इसके कि वह कुछ समझकर रुक पाता पानी ने उसे किसी अनजानी दिशा में उछाल दिया। उस समय वह जेम्सन का भी

हाथ छोड़ चुका था।

राजेश सँभला।

सँभलकर हाथ-पाँव फैलाये... किंतु व्यर्थ...वह पानी के साथ ऐसा उछला कि दोबारा सँभल नहीं सका। तीव्र पानी के वेग के साथ उसने अपने को गहरी खाई में उतरता महसूस किया।

भयानक तेजी के साथ उसका शरीर किसी झुंड के समान गहराइयों में उतरता जा रहा था। उसके कानों में पानी की धारों का तेज़ शोर टकराया। ऐसा जान पड़ा जैसे किसी झरने के बीच उसका शरीर लुढ़क रहा है।

और इसी संघर्ष में जब उसका शरीर छपाक के साथ टकराया तो उसका सिर किसी पथरीले भाग की चोट से नहीं बच सका। चारों तरफ से प्रहार कुछ ऐसे थे कि वह अपनी चेतना गँवा बैठा।

न जाने जेम्सन के साथ क्या हुआ।

न जाने उसके साथियों के साथ क्या गुजरी।

शायद जेम्सन भी उसी की तरह कहीं चेतना शून्य हो गया होगा।

और जब उसे होश आया तो उसके हाथ पाँव रस्सियों से जकड़े थे। सिर पे भयानक पीड़ा थी। कनपट्टियों पर धमक और पानी का शोर अब भी उमड़ रहा था। उसके कान एक तरह से बंद थे।

आँखें खोलकर देखा... वह किसी का बंदी था।

एक कोने में उसे जेम्सन लुढ़का नजर आया। शायद वह भी बेहोश था। उसको भी कसकर रस्सियों से जकड़ दिया गया था।

क्या वह सिंघराज की सीमा में कैद है?

यह प्रश्न बिजली के समान उसके दिमाग में कौंध गया। पुराने बातें धीरे-धीरे याद आती जा रही थी और तब उसकी जिज्ञासा यह जानने के लिये बलवती हो गयीं कि वह किसकी कैद में है? गनीमत थी कि उसकी रस्सियाँ किसी वस्तु से नहीं बंधी थी।

उसने जेम्सन को देखा और फिर उस रौशनदान को जिससे बाहर का प्रकाश अन्दर आ रहा था। बाहर दिन का उजाला है इस बात का अनुमान उसने प्रकाश से ही लगा लिया। वह लुढ़कता हुआ जेम्सन के करीब पहुँच गया।

जेम्सन अभी तक बेहोश था।

"जेम्सन!" उसने आवाज़ दी साथ ही अपना शरीर उससे टकराया। जेम्सन की चेतना नहीं लौटी। राजेश ने गहरी साँस खींची। वह अपने बंधनों को खोलने की योजना बना रहा था।

उसके शरीर पर अंडरवियर के अलावा कोई कपड़ा नहीं था। यदि उन लोगों ने लिबास छोड़ दिया होता तो वह कुछ न कुछ उपाय सोच ही लेता। यूँ उसके नाखूनों में ब्लेड के छोटे-छोटे टुकड़े भी लगे रहते थे किंतु हाथों को अलग-अलग कसे जाने से वह उनका प्रयोग भी नहीं कर सकता था।

तेजी से उसका दिमाग मुक्ति पाने की योजना बनाने लगा।

जेम्सन यदि होश में आ जाता तो उसकी यह योजना सफल हो जाती किंतु जेम्सन गहरी अचेतनता में डूबा था।

राजेश उसे होश में लाने की योजना बनाने लगा लेकिन वह योजना बना भी न पाया था कि कमरे का दरवाजा खुला। दरवाजे में दो भीमकाय शरीर के इंसान खड़े थे।

उनके शरीर पर प्राचीन जंगी लिबास था।

दोनों ने भाले सख्ती के साथ पकड़ रखे थे। शक्ल सूरत से उनका रंग तांबे के समान था। आँखें एकदम भूरी और बिल्ली के समान चमकीली, राजेश ने उन्हें देखते ही पलके झपकाई।

उन्होंने विचित्र भाषा में उसे कोई श्लोक सा सुनाया जिसे राजेश नहीं समझ पाया।

“प्यारे भाईयों तुममें से कुत्ता कौन है और बिल्ली कौन-ऐसा लगता है जैसे इन दोनों की लड़ाई हो रही है। बस गुर्राहट और शामिल हो जाये तो और भी मजा आ जायेगा।”

राजेश ने चेहरे पर अनेक मूर्खतापूर्ण कोण बदले थे और फिर दाँत निकाल दिए।

उन दोनों ने एक दूसरे को देखा फिर एक ने झुककर राजेश को कंधे पर लादकर पटक दिया।

“अरे बाप रे?” राजेश चित गिरते ही गड़बड़ा गया।

उसके चेहरे पर इस तरह का पीलापन छा गया जैसे सचमुच वह डर गया हो। यह दूसरी बात थी कि वह मन ही मन दोनों क गाली दे रहा था।

दूसरे व्यक्ति ने ताली बजायी।

दरवाजे में दो गुलाम सरीखे दाखिल हुये। वह दोनों ही तन्दुरस्त गठीले शरीर के पहलवान लगते थे। प्राचीन सेना की पोशाक वाले ने कुछ कहा। तुरन्त एक पहलवान ने राजेश को कन्धे पर लादा और बाहर ले गया। दूसरे ने जेम्सन को लाद लिया।

दोनों को उस पुराने ढंग के मकान से बाहर निकाला गया। चार घोड़ों से लदी एक गाड़ी सड़क पर खड़ी थी। सड़कें पत्थरों को कूट-कूट कर बनायी गयीं थी। दोनों बंदियों को गाड़ी में डाल दिया गया।

इस रथ में वह सैनिक आगे बैठ गये। गाड़ी के पर्दे खींच दिए गये। राजेश और जेम्सन के पास ही दोनों पहलवान बैठे थे। घोड़ों की रासें खींची गयीं.... चारों घोड़े सरपट सड़क पर भागने लगे, उनकी टापों से हल्की धूल उड़ रही थी।

राजेश सिर्फ इतना देख पाया कि वह कोई पुराने ढंग की नगरी है, जहाँ चारों तरफ हरियाली और ऊँचे-नीचे पहाड़ हैं। उसे लगा जैसे सचमुच वह सिंघराज के खतरनाक लोगों के बीच में फँस गया है।

यह लोग न जाने उन्हें कहाँ ले जा रहे थे।

राजेश ने अपने को किस्मत के भरोसे छोड़ दिया। इसके अलावा उसके पास चारा भी क्या था।

रथ तेजी के साथ विभिन्न सड़कों पर दौड़ता रहा।

वहाँ अन्य घुड़सवार, सैकड़ों पैदल व हर प्रकार के इंसान मंडरा रहे थे। जिनमें

स्त्री,युवक, बच्चे और बूढ़े शामिल थे।

वह सिंघराज की भूमि थी।

सिंघराज की लड़कियों की टोलियाँ घोड़ों पर इधर उधर दौड़ रही थी।

सचमुच बेमिसाल रूप था उनके अन्दर....।

सिंघराज को यदि अप्सराओं का देश समझा जाये तो ज्यादा बेहतर है। लोग अपने-अपने कामों में लगे थे।

□□□

एक अँधेरी रात में जबकि अफ्रीका द्वीप का वह टापू स्याह धब्बे में बदल गया था। बिना किसी आवाज़ को पैदा किये फ़ेंटाशिया का हैलीकॉप्टर सिंघराज की सरजमीन के ऊपर मंडराने लगा था।

हैलीकॉप्टर का संचालन थांगसी कर रहा था। फ़ेंटाशिया का विश्वास पात्र एजेंट था थांगसी जो उस केस में कुछ रहस्यों तक पहुँच गया थ। उसके अलावा हैलीकॉप्टर मेंफ़ेंटाशिया और रंजीत मौजूद थे।

“हम लोग पैराशूटों से उतर रहे हैं। ध्यान रहे यदि किसी प्रकार के खतरे ने हमें घेर लिया तो तुम सिंघराज का इतिहास ही समाप्त कर दोगे। हम दोनों को तुम टेलीविज़न पर आसानी से देख सकते हो।”

“मैं सब समझ गया मादाम? आप निश्चिंत रहे, मैं हर समय आपके साथ हूँ।”

फ्रेंटाशिया ने रेडीमेड फेस मेकअप झिल्ली रंजीत को पकड़ा दी। उसे पहनते ही वह रेड इंडियन नजर आने लगा। अपने को रेड इंडियन बनाने के लिये उसने कानों पर पीतल के कुण्डल और चढ़ा लिए। बालों को बिखरा दिया। रंजीत अब पूरी तरह बदल चुका था।

आवश्यक सामान पीठ पर बाँधने के बाद वह पूरी तरह तैयार हो गया।

फ़ेंटाशिया भी पैराशूट बाँध चुकी थी।

और फिर अँधेरी रात में वह दोनों साहसी हेलीकॉप्टर से कूद गये। चाहते तो हैलीकॉप्टर को नीचे उतार सकते थे। किंतु ऐसा उन्होंने जानबूझ कर नहीं किया। वह ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहते थे जिससे वह खतरे में फँस जाएं। हैलीकॉप्टर से कूदते समय फ़ेंटाशिया ने एक रस्सी का किनारा रंजीत को थमा दिया था ताकि अँधेरी रात्रि में भटक कर वह जुदा न हो जाएं। थांगसी ने हैलीकॉप्टर तीर के समान एक निश्चित दिशा में अग्रसर कर दिया।

उधर पैराशूट खुलते ही वह वायुमण्डल में तैरने लगे।

सिंघराज में अंधकार फैला था।

इक्का-दुक्का मकान रौशन था।

शायद वह लोग किसी आबादी के ऊपर तैर रहे थे। कुछ देर में उन लोगों के शरीर धरातल से टकरा गये। रस्सी के सहारे वह आसानी से बिना प्रकाश जलाये मिल गये। उनके चारों तरफ समतल धरातल फैला था। निकट ही मकानों का क्रम शुरू हो गया था।

“कम ऑन...फ्रेंटाशिया ने कहा और सबसे नजदीक वाले मकान की तरफ अग्रसर हो गयी। वह मकान अन्य मकानों से कुछ अलग बना था। मकान की किसी खिड़की से प्रकाश

छन-छन कर बाहर आ रहा था।"

वह दोनों दबे कदम मकान के पहले भाग तक पहुँच गये। खिड़की काफी ऊँची थी। फ़ेंटाशिया ने रंजीत को सचेत किया, रंजीत कुछ झुककर बैठ गया। फ्रेंटाशिया ने दोनों पैर उसके कन्धे पर जमाये और उसके बाद रंजीत सीधा खड़ा हो गया। धीरे-धीरे फ़ेंटाशिया भी सीधी हो गयी। अब उसका चेहरा ठीक खिड़की के सामने था। उसने खिड़की की दरार से अन्दर झाँक कर देखा।

केवल एक बिस्तरा नजर आया, जिस पर एक जोड़ा आराम की नींद सो रहा था।

कदाचित वह पति-पत्नी थे। नौजवान का चेहरा देखते ही फ्रेंटाशिया की आँखों में चमक आ गयी। उसने धीरे से खिड़की के पटों को खोल दिया। उस कमरे में उन दोनों के अलावा कोई नहीं था। दरवाजे अन्दर से बंद कर दिए थे। फ्रेंटाशिया ने दोनों हाथों से खिड़की की चौखट को थामा और शरीर को हल्का सा झटका देकर ऊपर चढ़ गयी।

कुछ पल तक वह खिड़की पर बैठी हुई अंदर की आहट लेती रही और फिर उसने अपना शरीर दूसरी तरफ उतार दिया। कमरे में दीपक जल रहा था..... जिसकी रौशनी पर्याप्त थी।

सर्वप्रथम फ़ेंटाशिया ने उसकी सैनिक वर्दी उतारी- वर्दी से जान पड़ता था वह सिंघाराज फ़ौज का कोई अफसर है। तलवारों वाली बेल्ट को उठाया। उन वस्तुओं को उसने खिड़की से नीचे फेंक दिया।

उस समय हल्की सी आहट हुई।

अचानक युवक की आँख खुल गयी। वह उछलकर खड़ा हो गया। तुरन्त उसका हाथ दीवार पर टंगी तलवार पर पहुँचा और बड़ी फुर्ती के साथ वह घूम गया, फ्रेंटाशिया से वह सब कुछ छिपा नहीं था... एक पल के लिये उसके चेहरे पर तनाव आ गया।

युवक ने विचित्र भाषा में उससे कुछ पूछा।

संसार भर की लगभग सभी भाषाओं की ज्ञात फ्रेंटाशिया का यह सौभाग्य था कि वह सिंघराज की भाषा जानती थी।

सिंघराज भूतियालैंड का नजदीकी टापू था। आये दिन वहाँ के लोग जहाजों को लूटा करते थे। अतः स्वाभाविक था कि वह उस भाषा को जानती थी, उसने दो एक लूटेरों को एक बार कैद भी कर लिया था। चूँकि सिंघराज से आज तक उसका कोई मतलब नहीं पड़ा था अतः उस ओर जाने की योजना उसने कभी नहीं बनाई।

"तलवार फेंक दो....।" फ्रेंटाशिया ने उसी भाषा में कहा।

"ओह....।" उसकी आँखों में क्रोध भड़कने लगा। कौन हो तुम और यहाँ कैसे आई हो?

फ़ेंटाशिया मुस्कराई। युवक कुछ नहीं समझ पाया। शायद वह किसी नारी पर हथियार नहीं उठाना चाहता था इसलिए उसने अभी तक फ़ेंटाशिया पर हमला नहीं किया था।

"मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।"

"क्या... ?" युवक चौंका।

"मेरी आँखों में देखो सब कुछ तुम्हें मालूम हो जायेगा।"

आँखों का टकराव हुआ और फिर युवक नजरें न हटा सका, फ्रेंटाशिया की आँखों में उसे

दूसरा ही संसार तैरता नजर आया। तलवार हाथों से छूट गयी। वह मंथर गति से आगे बढ़ने लगा।

"तुम यहाँ किस पद पर हो... ?"

"पिकोट...।"

"हूँ....नाम क्या है?"

"मेरोघी।"

"तुम्हारी ड्यूटी कहाँ रहती है?"

"बड़े पिकोटा के महल में.... मैं उनका अंगरक्षक हूँ....।"

"शाबाश... वह तुम्हारी पत्नी है।"

"हाँ....।"

"नाम....?"

"सेरिमा।"

"यह फूल सूँघों......।" फ्रेंटाशिया ने बालों में उलझा एक कृत्रिम फूल उसे पकड़ा दिया जिसे सूँघते ही वह चेतना शून्य हो गया।

सोती हुई नारी को भी उसने बेहोश कर दिया। उसने तुरन्त अपने शरीर पर उसके कपड़े डाले और उसे चादर से लपेट कर डाल दिया। उसके बाद उसने तुरन्त पीठ पर चिपका बैग खोला। सर्वप्रथम उसने खिड़की के जरिये रस्सी नीचे फेंक दी।

"ऊपर आ जाओ, वह वस्त्र भी ले आना।" कुछ ऊँचे स्वर में फ्रेंटाशिया ने कहा।

रस्सी को उसने अन्दर बाँध दिया। कुछ क्षण बाद रंजीत भी कमरे में था। कमरे की खिड़की बंद कर दी गयी।

"बैठो।" फ्रेंटाशिया ने कुर्सी की तरफ संकेत किया।

रंजीत चकित दृष्टि से कमरे के हालात देखता हुआ बैठ गया। फ्रेंटाशिया ने अपने थैले से छोटा मेकअप बॉक्स निकाला। वह आधुनिक मेकअप बॉक्स सभी साधनों से परिपूर्ण था।

फ़्रेंटाशिया नेएक लेंस के जरिये बेहोश युवक के चेहरे का निरीक्षण किया। साथ ही उसके चेहरे के उभारों को देखती उसके बाद रंजीत के फेस पर प्लास्टिक चिपकाने लगती। लगभग आधे घंटे बाद वह कुछ हद तक रंजीतकी शक्ल उस युवक से नब्बे प्रतिशत मिलाने में सफल हो गयी।

"अब तुम्हारा नाम मेरोघी है।"

"मेरोघी ....।"

"यस... तुम्हें यहाँ भाषा का ज्ञान नहीं है, आवश्यक शब्द मैं समझा दूँगी, अगर जल्दी ही कोई उत्पात न हुआ तो बहुत कुछ यहाँ की भाषा सीख लोगे। याद रहे तुम यहाँ के पिकोटा हो... मैं सुबह ही यहाँ बड़े पिकोटा तक सूचना दूँगी कि तुम बीमार हो गये हो-चार पाँच दिन की छुट्टी मिल जायेगी। इस बीच हम काफी हद तक यहाँ के वातावरण को समझ सकेंगे। "

"मैं सुबह सब कुछ देख लूँगी। शायद हम लोग सिंघराज राजधानी में हैं।"

"क्या यहाँ और भी आबादी है।"

"पूरा देश है रंजीत खैर फ़िलहाल तुम आराम से इसके कपड़े पहन कर लेट जाओ - मैं इस मकान की तलाशी लेती हूँ। मेरे ख्याल से यहाँ दोनों के अलावा कोई नहीं है।" इतना कहकर फ़ेंटाशिया ने सामान सँभाला और कमरे का दरवाजा खोलकर बाहर चली गयी। रंजीत ने बेहोश पड़े इंसान की पोशाक पहनी और आराम से बिस्तर पर लेटने जा रहा था। तभी वह मुस्कराया उसकी निगाह कमरे की एक मेज पर जम गयी।

उचक कर वह मेज के समीप पहुँच गया। कुछ अंगूर मुँह में रखने के बाद उसने केले का छिलका उतारा और उसको दाँतों से काटता हुआ कमरे की दीवारों को घूरने लगा। उसके होंठों पर अजीब सी मुस्कान छिटक उठी।

एक केला सम्पात करने के बाद वह दूसरा उठाने जा रहा था कि तभी फ़ेंटाशिया दाखिल हुई। उसने चुपके से केले को वहीं रख दिया।

"मकान खाली हैं - इन दोनों को बक्सों में बंद कर दो।" मगर ठहरो - मुझे भी अपना चेहरा बदलना पड़ेगा- इतने तुम इन्हें बराबर वाले कमरे में पहुँच कर आओ। वहाँ दो तीन बक्से रखे हैं-इन्हें उन्हीं में बंद कर देना- यह दोनों अब कुछ दिन आराम करेंगे। तुम पहले मेरोघी को ले जाओ।"

रंजीत ने मेरोघी को कन्धे पर लाद दिया और निकल गया। उधर मादाम फ्रेंटाशिया सेरिमा के सामने मेकअप का सामान खोले बैठी थी। इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह मेकअप कला में दक्ष थी। इसलिए लोगों ने उसने कई चेहरे देखे थे।

अब वह मेकअप से निपट गई, तब रंजीत ने सेरिमा को दूसरे कमरे में पहुँचा दिया।

"अजीब संयोग है मादाम....मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि जीवन में मुझे इतने खेल खेलने पड़ेंगे।"

न जाने क्यों मादाम मुस्कराई।

यह संयोग ही था कि इस समय वह रंजीत की पत्नी का रोल कर रही थी। यह संयोग ही था कि रंजीत की शक्ल विनोद से मिलती थी।

"क्यों मादाम... आपने आज तक मुझे यह नहीं बताया मेरी शक्ल इतनी महत्वपूर्ण क्यों है जो इस कदर दिलस्चस्पी का कारण बन गयी है।"

मादाम हँसी....।

"लेट जाओ... मैं तुम्हें इत्मीनान से बता दूँगी। इसमें परेशान होने की बात नहीं?" कुछ तेज शब्दों में वह बोली।

"आप ऊपर लेट जाइये। मैं नीचे सो जाऊँगा।"

"संयोग बड़ा विचित्र है रंजीत... हमें इस कमरे में रात गुजारनी है वह भी साथ में लेटकर...नींद नहीं आयेगी इसलिए मैं तुम्हें तुम्हारे जीवन की कहानी सुनाऊँगी चलो लेटो...दूसरी तरफ करवट बदल लेना।"

रंजीत ने बिस्तर सँभाला।

फ्रेंटाशिया उसके बराबर में लेट गयी। रंजीत ने करवट लेकर दूसरी तरफ मुँह घुमा

लिया। फ्रेंटाशिया ने विचित्र नेत्रों से उसे देखा।

"तुमने कर्नल विनोद की शक्ल देखी है। वही विनोद जो अब अपने को सम्राट मानिक बता रहा है। उसकी शक्ल तुमसे क्यों मिलती है। इस बारे में सोचा?"

"सोचता बहुत हूँ मगर हल नहीं होता।"

"मैं बताती हूँ काफी अरसे पहले तुमने वीरानगढ़ के राजवंश खानदान में राजकुमार के रूप में जन्म लिया... तुम जुड़वाँ पैदा हुए थे। बचपन में ही राजा चंद्रसिंह के दुश्मन तुम्हें उठाकर ले गये, भाग्य ने तुम्हारा साथ दिया तुम्हें वह लोग मार नहीं सके। जानते हो दूसरा कुमार कौन था? जिसे राजा साहब ने इस डर से अपने मित्र धनंजय को सौंप दिया था कि कहीं वह कुमार भी शत्रुओं की साजिश का शिकार न हो। पता है, कौन था वह कुमार...?"

"मैं नहीं जानता।"

"वह विनोद कुमार था, जो लंदन भेज दिया गया था और एक होनहार जासूस बनकर भारत लौटा। लेकिन उसके चाचा धनंजय की मृत्यु हो जाने से वह अपने असली परिवार के बारे में नहीं जान सका। उसने गुप्तचर विभाग में इंस्पेक्टर का पद सँभाला और अनेक केसों में ख्याति पाने के बाद उसे कर्नल की उपाधि मिली। वही कर्नल विनोद जिसे तुमने सम्राट मानिक के रूप में देखा है। तुम दोनों की बाँईं जाँघ पर राजवंशी मोहर है।"

"इसका मतलब विनोद मेरा भाई है।" रंजीत चौंककर कर बैठ गया।

उस समय आपने क्यों नहीं बताया मादाम जब मैं उसके खून का प्यासा हो रहा था। उफ्फ कुदरत इंसानों की ज़िन्दगी के साथ क्या-क्या खेल खेल देती है। मगर वह सम्राट मानिक ...?"

"आराम करो, अभी बहुत रहस्य बाकी हैं। विनोद की याददाश्त जा चुकी है। इस वक्त हमारा ध्येय सिर्फ इतना है कि उसके प्राणों को बचाया जा सके, काश! वह इंसान याददाश्त न गँवाता तो आज इतनी भयंकर स्थिति नहीं आ सकती थी। मैं अपराधिनी जरूर हूँ लेकिन उसकी इज्जत करती हूँ उसने मेरे साथ बहुत से एहसान किये है। कभी यह न चाहा कि मैं कानून के फंदे तक पहुँचू,यदि इन खतरनाक लोगों का अंत न हुआ तो मेरा टापू भी किसी खतरे में फँस सकता है बहुत सी बातों के कारण मुझे इस केस में अपना हाथ डालना पड़ा... यह समय बतायेगा।

"लेकिन सिंघराज में हम लोग क्या करेंगे?"

"इस षड्यंत्र का मुख्य अड्डा सिंघराज है। दिग्राज के दर्रे में तबाही हो चुकी है। वहाँ से उनका दल भाग निकला है।"

रंजीत मौन हो गया।

उसकी आँखों के आगे अपने भाई का चेहरा मँडराने लगा वह क्षण याद आए जब स्वयं वह सम्राट मानिक का अभिनय करता हुआ प्रेत महल में घूँसा था। और वहीं तीसरी आग का शिकार हुआ।

काश..... वह एक बार और अपने भाई से मिल जाता... वह सोच भी नहीं सकता था कि उसका जीवन इतने भयानक मोड़ो पर आ जायेगा।

उसकी आत्मा से आवाज़ उठी।

विनोद को वह बचायेगा।अपने भाई के लिये वह खुद ही गर्दन कटवा सकता है। वह उसके लिये कुछ भी करेगा।

विनोद...?

रंजीत...?

एक खून के दो टुकड़े...संयोग ने उन्हें काफी समय बाद सामने ला फेंका था। रंजीत की पलकों पर दो तीन अश्रु बिन्दु आ गये। राजकुमार होते हुए भी उसे इतना दर्द पीना पड़ा... अपने खानदान से जुदा रहा।

भाई के रक्त का प्यासा बन बैठा।

□□□

हमीद अपने सामने बैठी शक्ल को कनखियों से निहार रहा था। उसको दिल चाह रहा था कि खूब हँसे -परिस्थितियों ने उसे हँसने से रोक रखा था।

इस समय वह जिस पनडुब्बी में बैठा था। उनका संचालन करने वाला ग्राडील कासिम था। कासिम को वह हजारों इंसानों में पहचान सकता था। उसका डील-डौल और चेहरे की बनावट लाख मेकअप होने के बाद भी नहीं छिप सकती थी। यूँ उसकी शक्ल पर भी तांबे का रंग चढ़ा था।

उस समय जब उसने हैलीकॉप्टर से पवन का भर्राया स्वर माइक पर सुना था। तभी वह उन लोगों को मकानों में प्रविष्ट होते देख चुका था। हमीद भी उन्हीं में शामिल हो गया। जल्दी-जल्दी में उसे कोई नहीं देख पाया। उसने अपना नकाब भी नोच फेंका था। उसके चेहरे पर भी ताम्बे का रंग चढ़ा था। अतः वह उन्हीं लोगों में मिल गया।

और तब वह मकानों के गुप्त भागों से सुरंग में उतर गया। वहीं से जल्दी-जल्दी खातून की आत्मा का आदेश सुरंग के प्रत्येक कोने में सुनाई दिया था और चौड़ी सुरंग के किनारे खड़ी पनडुब्बियों में यात्रा शुरू हो गयी।

न जाने कौन किस पनडुब्बी में बैठा।

फ़िलहाल हमीद जिस पनडुब्बी में बैठा था। उसमें सात आदमी थे - और उसका संचालन कासिम कर रहा था। कासिम की उपस्थिति से उसे ज्ञात हो चुका था कि विनोद इस छोटी सी सेना का सम्राट है। यह कथन वह खातून की प्रतिमा से सुन चुका था।

शायद कासिम के दिमाग का भी ऑपरेशन विनोद के साथ ही हुआ था इसलिए वह एक नये रूप में कार्य कर रहा था।

प्रेतमहल में हमीद ने उसे विनोद और मीनाक्षी के अंगरक्षक के रूप में देखा था। उसी रात प्रेतमहल के किसी गुप्त द्वार से वह पूरा दल निकल भागा था। और हमीद फ्रेंटाशिया के साथ प्रेत महल की भूलभुलैयाँसुरंगो में फँस गया।

पनडुब्बी किसी अनजान दिशा में अग्रसर हो रही थी। उन सभी पनडुब्बियों को जंजीर से जोड़ागया था। वह उसी दिशा में अग्रसर हो रही थी। जिस पर अगली पनडुब्बी बढ़ रही थी।

पनडुब्बियों के अन्दर हल्का सा प्रकाश था।

पनडुब्बियों में एक छोटा साकंट्रोल रूम और दूसरा बैठने योग्य कमरा था। आकार में वह बहुत छोटी थी। कासिम का सीना गर्व से कुछ अधिक फूल गया था। वह कंट्रोलर को न जाने क्या-क्या आदेश दे रहा था।

अचानक तीन इंसान सो गये। वह हमीद के बराबर बैठे थे। न जाने क्यों हमीद को शरारत सूझ गयी।

“सर--?” अचानक हमीद ने कहा-”यह तीनों सो रहे हैं। उन्हें खबर नहीं है कि हमारी सेना कितने बड़े खतरे में बढ़ रही है?”

“क्यों बे साले--?” कासिम दहाड़ा-”यह किया वह समझ लिया है यानि कि शयानागर इत्तो अकल नाही कि हमारे कश्ती मैदाने जंग में है। “

“चुप बे मोटे सोने दे..” हमीद ने मुँह हाथ पर रख कर कुछ ऊँघते स्वर में कहा, ऐसा जान पड़ा जैसे सोने वालों में से किसी ने यह शब्द कहें हों।

“किया कहे? अबे ओ कुत्तों के पिल्लों!” कासिम ने क्रोध से नथुने फुला कर कहा। साथ ही उसने अपना हाथ हवा में लहराया।

मस्त हाथी के समान झूमता हुआ वह उन तीनों के समीप पहुँचा।

सहसा हमीद चौंका वह कुछ और करने जा रहा था निश्चित रूप से वह कासिम द्वारा उन तीनों का सफाया करवा देता। मगर ऐसा हो नहीं सका, कासिम भी अपने स्थान पर खड़ा-खड़ा ऊँघने लगा।

“अगे....अगे.... आऊँ.... गू.... ग़ाँव?”

वह लहराया, बड़ी कठिनाई से वह एक सीट को सँभाल कर उस पर लुढ़क गया। हमीद ने स्वयं ऐसा महसूस किया जैसे नींद उस पर भी हावी होती जा रही है। उसने बुझे-बुझे नेत्रों से पनडुब्बी में बैठे इंसानों को देखा। वह भी अपने स्थानों पर बैठे ऊँघ रहे थे।

इससे पूर्व कि हमीद कुछ सोच पाता, उसकी पलकें बंद होने लगी। चाहकर भी वह अपने ऊपर हावी होने वाली नींद को नहीं भगा सका।

पनडुब्बी की दीवारें बंद थीं।

वह एक निश्चित रफ्तार से एक दिशा में बढ़ रही थी जबकि पनडुब्बी में बैठे सभी इंसान सो चुके थे। हमीद भी अपनी सीट पर लुढ़क गया।

नींद के प्रभाव से वह अपने को नहीं बचा सका।

और जब उसकी नींद टूटी तो उसके नेत्र विस्मय से फ़ैल गये। उसकी आँखों के आगे विचित्र दृश्य था।

□□□

एक भरे दरबार में राजेश रस्सियों से जकड़ा खड़ा था। जेम्सन को भी होश में लाया जा चुका था। वह दोनों इस समय बंदी के रूप में खड़े थे।

उनके आगे पीछे चार भालों वाले रेड इंडियन थे। और बीच में काफी फासला छोड़कर दोनों तरफ प्राचीन सेना के वस्त्रों में लिपटे खूँखार शक्ल के रेड इंडियन बैठे थे, सामने ऊँचा सिंहासन था, जो अभी तक खाली था। राजेश को अब पूरा यकीन हो चुका था कि उसे

सिंघराज के राजा मांडूक के सामने लाया गया है।

उसका यह यकीन गलत भी नहीं था।

कुछ क्षण बाद विचित्र सा शोर दरबार में उठा। और पूरे दरबारी उठ खड़े हुए सिंहासन के पीछे नजर आने वाले दरवाजे का पर्दा खिंचा और लम्बे कद का मांडूक दरबार में उपस्थित हुआ।

उसकी शक्ल बड़ी खौफनाक थी।

आँखों में जैसे अंगार दहक रहे थे। बाल लम्बे और सुनहरे थे। वह शरीर पर ढीली सी पोशाक डाले हुए था। उम्र करीब चालीस पैंतालीस के करीब जान पड़ती थी।

गठी हुई देह बताती थी कि वह काफी शक्तिशाली इंसान है। उसके दायें- बायें दो अंगरक्षक मौजूद थे। दरबारियों ने सिर झुका कर अभिवादन किया। मांडूक ने जवाब में हाथ उठाकर उन्हें बैठने का संकेत किया।

मांडूक खूँखार नेत्रों से राजेश और जेम्सन को घूर रहा था।

जेम्सन के पैरों के नीचे से जैसे जमीन निकली जा रही थी। उसके चेहरे पर हवाईयाँउड़ने लगी थीं। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कौन से दानव देश में फँस गया है।

मांडूक सिंहासन पर बैठ चुका था।

सिंहासन के नीचे पहली सीट पर बैठा इंसान खड़ा हुआ और उसने सिंघराज की भाषा में कोई फरमान पढ़ा। उसके बाद उसने दोनों बंदियों की ओर संकेत किया।

“तुम दोनों पर जो आरोप लगाये गये हैं, क्या वह सब ठीक हैं। “ अचानक मांडूक ने विन्दहोक की भाषा में कहा।

राजेश ने ठण्डी साँस खींची, उसके चेहरे पर भोलापन छा गया।

“आरोप... हाय, यह आप क्या कह रहे हैं महाराज? कैसा आरोप?”

मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि यह कौन सा देश है, क्यों जित्तू.. हमारी नानी सिर थामकर रो रही होगी। उस बुढ़िया बेचारी का क्या होगा?”

“म… मर जायेगी।” कुछ न समझ सकने के कारण जेम्सन जल्दी में यही शब्द कह गया।

“क्या बकवास है?” मांडूक ने सिंहासन के हत्थे पर हाथ मारा।

“अरे.. बाप रे ! मैं दिल का मरीज हूँ राजा साहब, हार्ट अटैक हो सकता है। मेरी नानी भी दिल की मरीज है। सोते हुए नानाजी के सपने देखती है। राजा साहब आप चाहे कहीं के राजा हो। मगर ऊपर वाले की नजर में मैं अपनी जगह राजा हूँ और आप अपनी जगह। अगर आपने मुझे मार दिया तो मेरी नानी भी गम में मर जायेगी। जानते हैं आप तब क्या होगा।”

“क्या होगा ?”

“बताओ जित्तू क्या होगा?”

“मैं क्या बताऊँ मरने के बाद प्रेत बन जाओगे नानी चुड़ैल बन जायेगी, मेरी नानी भी

बन गयीं थी।”

“क्या तुम दोनों पागल हो?” मांडूक ने पूछा।

“नहीं... जित्तू कभी गलत नहीं कहता...मैं प्रेत बन जाऊँगा...प्रेत न बना तो दूसरे जन्म में राजा बनूँगा और आप मेरे बंदी। देखिए राजा साहब मेरे ऊपर कोई आरोप लगाने से पहले सोच समझ लीजिए।”

राजा मांडूक ने अपने आदमियों से कुछ कहा। शायद वह लोग विन्दहोक की भाषा नहीं जानते थे। अकेला मांडूक ही ऐसा था जो कुछ अफ्रीकी देशों कीभाषाएंजान गया था।

“पागल आदमी मांडूक ने कहा - सिंघराज के कानून में यहाँ आने वाला हर अजनबी मौत के घाट उतारा जाता है। तुम दोनों चाहे भूल से ही यहाँ आये हो... कानून अपनी जगह होता है। लेकिन एक अवसर तुम्हें अवश्य दिया जायेगा। यदि तुम सचमुच बेगुनाह साबित हुए तो तुम्हें यहाँ रहने की आज्ञा दी जायेगी। लेकिन तुम अपने देश वापिस नहीं जा सकोगे।”

“म.. मुझे आपकी हर आज्ञा मंजूर है।”

मांडूक ने सिपाहियों को संकेत किया और उसके बाद राजेश और जेम्सन को बंदी गृह पहुँचा दिया गया। तीन दिन तक वह वहीं कैदी के रूप में पड़े रहे चौथे दिन उसे बंदी गृह से निकाला गया, उसने सोचा शायद यह उसका साथ दे रहे हैं।

जबकि वास्तविकता ठीक इसके विपरीत थी।

उसके ऊपर राहु मंडरा रहे थे।

उन दोनों को अलग-अलग रथों में बैठा दिया गया। और रथ सड़क पर धूल उड़ाते हुए तेजी के साथ एक दिशा में बढ़ने लगे।

राजेश उस समय चौंका जब रथ आबादी से बाहर निकल गये।

□□□

विस्मय से फैले नेत्र उस जनसमूह को निहारते रहे जो उसके चारों तरफ उल्लासपूर्ण नारे लगा रहे थे। एक बड़े मैदान के चारों तरफ रेड इंडियनोंकी भीड़ लगी थी और मैदान में तुरही की आवाज़ बुलन्द हो रही थी।

उस दृश्य को देखकर हमीद का मस्तिष्क तेजी के साथ घूमने लगा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था वह कहाँ फँस गया है।

उसने अपनी स्थिति देखी, मैदान के बीच अनेकों स्तम्भ खड़े थे और उन पर जंजीरों द्वारा बंधे थे अनेक इंसान, जिनमें से एक यह भी था। बाँईं तरफ हाथी का शरीर रखने वाला कासिम था, जो इस वक्त अपनी असली सूरत में मौजूद था, दाँईं तरफ राजेश और जेम्सन, वह केवल इन्हीं चेहरों को स्पष्ट देख पा रहा था बाकी चेहरे खम्भों की आड़ में हो गये थे।

आकाश पर सूर्य पश्चिम की ओर अग्रसर हो रहा था।

□□□

जंजीरों में जकड़े लोग कुछ होश में आ चुके थे और कुछ अभी बेहोश थे। उन स्तम्भों के

चारों तरफ कुछ घुड़सवार सैनिक तलवार और भाले लिये मंडरा रहे थे।

वातावरण काफी कोलाहल पूर्ण था।

हमीद की निगाह घूम फिरकर राजेश पर जम गई, जिसके शरीर पर जाँघियेके अलावा कोई वस्त्र नहीं था। एक बार उन दोनों की निगाहें टकराई। उन दोनों ने जैसे मूक भाषा में पूछा कि वह यहाँ क्यों बाँधे गये हैं?" उस कोलाहल के बीच उनकी आवाज़ एक दूसरे तक नहीं पहुँच सकती थी। यूँ तो स्तम्भों के बीच फासला भी काफी था।

अभी-अभी कासिम की आँख खुली थी, उसका मुँह एक बार खुला और फिर शायद उसे यह ध्यान ही नहीं रहा कि खुले मुँह को बंद भी करना है। उसका हाथियों जैसा शरीर भी जंजीरों से बँधा था। उसने अपने स्थूल शरीर को हिलाना चाहा किंतु जंजीरों ने उसके होश फाख्ता कर दिये।

हमीद उस समय स्थिति को समझने की कोशिश कर रहा था, यही हालत राजेशकी थी।

अचानक एक रथ धूल उड़ाता हुआ मैदान में प्रविष्ट हुआ। उस रथ पर दो इंसान विराजमान थे।दोनों ही प्राचीन सैनानी लिबास में थे।

रथ खम्बों के समीप रुक गया।

अब उसका दृश्य स्पष्ट हो चला।

उस दृश्य को देखते ही हमीद को पैरों तले जमीन सरकती महसूस हुई। रथ के पिछले भाग में बड़ा-सा ताबूत रखा था। ताबूत को दो आदमी उतारने लगे। ताबूत खम्भों के निकट ही रख दिया गया।

उन दोनों इंसानों ने रथ से उतरकर एक बार बंदियों का निरीक्षण किया और फिर सामने नजर आने वाली ऊँची कुर्सियों की तरफ बढ़ गये। स्टेडियम नुमा इस मैदान में आने वालों का ताँता लगा था। धीरे-धीरे सामने की ऊँची कुर्सियाँ भी भरने लगीं। कुछ क्षण बाद ही केवल तीन कुर्सियाँ खाली रह गईं।

वह काफी ऊँचा सिंहासन था जिसके ऊपर उल्लू की प्रतिमा नहीं थी। अधिक देर इन्तजार नहीं करना पड़ा। तुरही की आवाज़ बुलन्द हुई। मैदान में उठने वाला शोर दबता चला गया और धीरे-धीरे जन समूह शांत हो गया। मैदान में एकदम सन्नाटा छा गया।

सामने मैदान तक आने वाली सड़क पर आठ घुड़सवारों के मध्य एक बंद रथ चला आ रहा था। रथ के चारों तरफ सुनहरे पर्दे पड़े थे।

रथ को हाँकने वाले नौजवान नीचे बैठे थे।

जनसमूह स्वागत के लिये खड़ा हो गया। कुछ नारे भी लगाये गये और फिर रथ मैदान के बीचों बीच रुक गया। घुड़सवार रक्षक नीचे उतर गये। किसी ने रथ का पिछला पर्दा खोला और उनमें से दो इंसान नीचे उतर पड़े।

एक भारी शरीर का गाँठा व्यक्ति...।

और दूसरी झीने लिबास में लिपटी युवती थी।

चकित कर देने वाली बात यह थी कि युवती के कन्धे पर उल्लू विराजमान था। यह वही उल्लू था जो इंसानों की जुबान में फर्राटे के साथ बात कर लेता था।

यह वही उल्लू जिसने दिग्राज से लेकर भारत तक अनेकों खूनी आतंक मचाये थे। इस वक्त वह बड़ी शान के साथ युवती के कन्धे पर बैठा था। कभी-कभी वह आँखें बंद कर लेता था।

शायद दिन के उजाले में देखने से असमर्थ था। उल्लू की गर्दन में फँसी सुनहरी जंजीर का दूसरा कोना युवती ने थाम लिया था।

युवती का पूरा जिस्म ऐसे महीन लिबास से ढका था कि उसका चेहरा पहचानने में नहीं आ रहा था। वह दोनों इंसान बंदियों को उचटती निगाह से देखते हुए सिंहासन की तरफ बढ़ गये।

बीच की कुर्सी पर उल्लू को बिठा दिया गया, बायें दायें ये दोनों इंसान बैठ गये। मैदान के चारों तरफ दर्शक अपने स्थानों पर बैठ गये। वातावरण में एकदम शांति छा गयी।

दर्शकों को सिंहासन से उठने वाली आवाज़ें साफ सुनाई दी। इसके लिये मैदान में चार विचित्र प्रकार के बड़े-बड़े भोपूँ लटकाये गये थे। उनका सम्पर्क सिंहासन के करीब खड़े व्यक्ति के पास था।

अचानक सिंहासन के नीचे खड़े चार सेनानी ताबूत के निकट आये। ताबूत को खोला गया और उसके अन्दर से जिस सूरत को बाहर खींचा गया। उसे देखते ही हमीद की रगों में सनसनी दौड़ गयी।

वह सम्राट मानिक उर्फ़ कर्नल विनोद था।

उसका शरीर भी जंजीरों सहित एक स्तम्भ से बाँध दिया गया। विनोद अभी बेहोश था अतः उसकी गर्दन एक तरफ झुक गयी। दो इंसानों ने उसके चेहरे पर जल के छीटें मारे। कुछ क्षण बाद ही उसकी गर्दन हिलने लगी और धीरे-धीरे उसने आँखें भी खोल दीं।

वह चारों तरफ खड़ी भीड़ को चकित निगाहों से घूरने लगा। फिर उसके ललाट की रगें तनती चली गईं। आँखों में खून उतरने लगा। उसने अपने बँधे शरीर को झटका दिया। मगर कसी जंजीरों को देखते ही वह तिलमिला कर रह गया।

फिर उसकी निगाहें सामने सिंहासन पर गईं।

उसकी आँखों में सूनापन छा गया।

सिंघराज का बड़ा पिकोटा (सेनापति) अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और उसने भोपूँ पर कुछ कहना शुरू कर दिया। वह सिंघराज की भाषा में न जाने क्या बड़बड़ाता रहा।

उसका भाषण काफी लम्बा चौड़ा था।

जब उसका भाषण समाप्त हुआ तो मैदान में नारे गूँज उठे। लोगों के भाले और तलवारें हवा में उठने लगीं।

सेनापति ने जनता को शांत रहने का इशारा किया और फिर राजा मांडूक के सामने तीन बार झुककरकोर्निश की।

मांडूक अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ।

उसने भी बेढंगे टाइप के माइक पर कुछ कहा। दर्शक शान्तिपूर्वक उसकी बात सुनते रहे। वह बार-बार सामने खड़े बंदियों की ओर इशारा कर रहा था। मुख्यतः उसका इशारा

विनोद की तरफ था।

अचानक विनोद ने चीखकर कुछ कहा। उसकी दोनों मुठ्ठियाँभिंच गई, उसी समय एक घुड़सवार ने अपना हन्टर उसके सीने पर जड़ दिया।

विनोद ने उसे खूँखार नेत्रों से देखा और फिर शान्त हो गया।

हमीद की समझ में यह खेल बिल्कुल नहीं आ रहा था।

मांडूक ठहाका मार कर अपने सिंहासन पर बैठ गया। उस के बाद उल्लू पंख फड़फड़ाने लगा। शायद वह भी कुछ कहना चाहता था। सेनापति उसके निकट जाकर खड़ा हो गया। उल्लू एक बार खंखारा, शायद हैलो...हैलो कर रहा था।

फिर उसने शुद्ध अंग्रेजी में कहना शुरू किया।

"मेरे अजीज मेहमानों... शायद आप लोगों की समझ में अभी तक कुछ भी नहीं आया है। मैं समय से पहले आपको सब कुछ बता देना आवश्यक समझता हूँ। एक सदी पूर्व इस धरती पर रक्तपात हुआ था और वह रक्तपात सम्राट मानिक द्वारा हुआ। हमारे देश की राजकुमारी का अपहरण कर लिया गया। सिर्फ इतना ही नहीं, सिंघराज के खजाने को गायब करने वाला सम्राट मानिक ही था और हमारे देश के उस इतिहास में वह गाथा अमर होकर रह गयी। दशकों बाद आज फिर सिंघराज में आग भड़क उठी है। एक लम्बे समय बाद इस देश के प्रतिशोध का समय आया है और अब सर्वप्रथम हमारे इस हर्ष पूर्ण जश्न की शुरुआत सम्राट मानिक से शुरू होगी। आप सभी लोग पहले अपनी आँखों से मानिक का तमाशा देखेंगे। "

यह शेर से अधिक शक्तिशाली है। इसकी भुजाओ ने बड़े-बड़े सूरमाओं के मस्तक तोड़े हैं। पिछले जन्म में यह जितना शक्तिशाली था। आज उससे भी बढ़ चढ़ कर है। यह इसका भाग्य है कि पवित्र सिंघराज की धरती पर यह फिर अपना दम तोड़ेगा और हमारे इतिहास में यह गाथा भी अमर हो जायेगी। बधाई है हमारे देश की परमपूजनीय राजकुमारी को जिसने अपने दूसरे जन्म में इस देश की मिट्टी को उजला किया। आज पूरी रात यहाँ जश्न मनाया जायेगा। इसी मैदान में यह सूरमा अपनी अन्तिम शक्ति का प्रदर्शन करेंगे....।

उल्लू का भाषण समाप्त हुआ।

तुरही और नगाड़ों ने मैदान को कँपा दिया।

अब हमीद की समझ में पूरी बात आ चुकी थी।

एक जन्म बाद यह प्रतिशोध की आग ठंडी हो रही है।

अजीबो-गरीब हकीकत थी, पूर्व जन्म में विनोद इस टापू के खतरनाक लोगों से टकराया होगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

सचमुच यह देश असभ्य राष्ट्रों से भी कहीं अधिक भयानक था। हमीद उस समय चौंका जब उसने एक हाथी को मैदान में प्रविष्ट होते देखा। हाथी पर एक मानवाकृति बैठी थी। जिसकी देह में भी हाथियों जैसा बल झलकता था।

घुड़सवार अलग हट गये।

हाथी बीच मैदान में आकर रुक गया।

उस पहलवान सरीखे व्यक्ति ने जम्प लिया और धरती पर खड़ा हो गया। वह मस्त चाल से चलता हुआ सिंहासन तक पहुँचा और वहाँ उसने झुककर कोर्निश की।

उसके बाद वह वापिस हाथीके सामने रुक गया। उसने हाथी के मस्तक पर अपने हाथ में फँसा लोहे का घूँसा मार दिया। हाथी बिलबिला कर चिंघाड़ उठा।

उसने अपनी सूँड़ उसे पकड़ने के लिये आगे बढ़ाई।

सबके दिलों की धड़कने जैसे रुकने को थीं।

हाथी और इंसान की जंग शुरू हो गयीं थी। न जाने वह कैसा जश्न था।

हाथी ने अपनी सूँड़ से उस व्यक्ति लपेटे में ले लिया और वह शक्तिशाली इंसान भी हाथी की गर्दन से लिपट गया। एक बार उसने दोनों पैर जमीन पर जमाये और पूरी शक्ति लगाकर बैठ गया।

अजीब जंग थी।

यह इंसान नहीं दानव था। हाथी उसके हाथ के झटकों से बैठ गया और फिर उसने अपने दोनों पैर उसकी गर्दन में बाँध दिये। हाथों से उसने सूँड़ दबोच ली।

हाथी चिंघाड़ कर पैर पटक रहा था।

उसके कंठ से भयानक डकारें निकलने लगीं। एक बार उसने जबरदस्त करवट ली और उस व्यक्ति को झटके के साथ अलग गिरा दिया। हाथी ने खूँखार चिंघाड़ मारकर उठना चाहा। मगर उस व्यक्ति ने दोबारा उसकी गर्दन दबोचकर झटका दिया। उसके बाद उसने सूँड़ पकड़कर करवट ली।

भीड़ उल्लास से चीख उठी जब उसने हाथी को अपनी शक्ति से चित्त गिरा दिया। दो-तीन दांव और दिखाने के बाद वह अलग जा खड़ा हुआ और हाथी की तरफ देखते हुये चीते के समान गुर्राने लगा।

हाथी उठा।

उसने सूँड़ उठानी चाही।

मगर दूसरी बार जब वह व्यक्ति गुर्राया तो उसकी सूँड़ झुक गयी और वह बुझे नेत्रों से सामने बड़े व्यक्ति को निहारता हुआ वापिस मुड़कर भाग खड़ा हुआ।

उस देवकाय शरीर के व्यक्ति ने पुनः सिंहासन के निकट जाकर कोर्निश की।

दर्शक तालियाँ बजाने लगे।

उसके बाद वह उच्चनाद में चीखता हुआ मैदान में आ गया।

वह उसी प्रकार उछलता कूदता विनोद के स्तंभ तक आया। दो घुड़सवार तेजी के साथ उस स्तंभ तक पहुँचे। वह दोनों उतरकर विनोद की जंजीर खोलने लगे।

अपना कार्य समाप्त करने के बाद वह वापिस चले गये।

विनोद आज़ाद स्थिति में खड़ा था। उस पहलवान सरीखे देव ने विनोद को ललकारा। विनोद उसे विचित्र निगाहों से घूरने लगा। स्थिति सबकी समझ में आ गयी। वह पहलवान विनोद लो लड़ने के लिये ललकार रहा था।

उधर उल्लू को आवाज़ भोंपुओं पर गूँज उठी।

“सम्राट मानिक, तुम इससे लड़ सकते हो। यदि इसे तुमने परास्त कर दिया तो उसके बाद तुम्हारा दूसरे ढंग से स्वागत होगा। तुम चाहो तो तुम किसी शस्त्र के जरिये भी लड़ सकते हो।”

विनोद अपने शरीर को हिलाता हुआ मैदान में चलने लगा। पहलवान अपने स्थान पर स्थिर भाव से खड़ा था। उसी समय तुरही बजी और पहलवान ने तेजी के साथ विनोद को पकड़कर उछाल दिया। विनोद चीखता हुआ एक स्तंभ से टकरा गया। वह संयोग ही था कि वह स्तंभ कासिम का था। विनोद उसके पैरों के पास जमीन पर गिरा था।

पहलवान कहकहा मारता हुआ उस तरफ धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

बंदी सहमे खड़े थे। सबकी समझ जवाब दे चुकी थी।

उधर कासिम ने जो यह दृश्य देखा तो उसका खून खोल उठा। क्रोध के कारण नथुने फूलने पिचकने लगे। उसने अपने शरीर को फुलाना चाहा मगर जंजीर तोड़ना आसान नहीं था।

“अबे ओ सालों... उल्लू के पट्ठों...जरा मेरी जंजीर खोल दो। इस पहलवान की टाँगे चीर कर रख दूँगा।”

उसकी आवाज़ किसी ने नहीं सुनी।

पहलवान निकट आ चुका था। विनोद ने लेटे-लेटे कासिम को देखा। वह सहम कर खड़ा हो गया। इस वक्त वह ठीक कासिम के सामने खड़ा था। उसका मुँह पहलवान की तरफ था। पहलवान की शक्ति का आभास उसे पहले ही झटके से हो चुका था। उससे भिड़ना सरासर मूर्खता थी।

“र... राजा साहब! हम आपके अंगरक्षण...न... न नहीं रक्षक हैं... म... मेरी जंजीर खोल दो... बस इस साले को... अरे बाप रे... ।”

कासिम की दहाड़ निकल गयी। इस समय उसके ऊपर वही पहलवान गिरा था। यह सब कुछ बड़ी जल्दी हुआ। उधर पहलवान ने विनोद को दबोचने के लिये छलाँग लगाई और विनोद बड़ी फुर्ती से अलग हट गया,लिहाजा पहलवान सीधा कासिम की देह से टकरा गया।

उसने क्रोध में कासिम को एक घूँसा रसीद किया और कासिम ने उसे भद्दी-सी गाली दे डाली।

पहलवान ने विनोद को फिर पकड़ना चाहा। विनोद उससे बचने के लिये चौड़े स्तंभ के चक्कर काटने लगा। वे दोनों आगे पीछे कासिम वाले स्तंभ के चारों तरफ दौड़ रहे थे।

अचानक कासिम को आभास हुआ कि उसकी जंजीरे ढीली हो गयीं हैं। विनोद प्रत्येक चक्कर में उसकी एक जंजीर खोलता जा रहा था। दर्शकों व घुड़सवार रक्षकों को इसका ज़रा भी एहसास नहीं हुआ।

कासिम ने पूरी शक्ति से शरीर को झटका दिया और जंजीरे खड़कड़ाकर जमीन पर गिरी। उधर पहलवान उसी क्षण सामने आया। कासिम ने आव देखा न ताव और दोनों भुजाएँ फैला कर उसकी गर्दन में डाल दी। क्रोध उसे पहले से ही चढ़ रहा था। उसने जबरदस्त झटका दिया और पहलवान एकदम लड़खड़ाकर गिर पड़ा, कासिम की लम्बी-

चौड़ी देह उसके ऊपर गिरी।

कासिम ने उसकी गर्दन नहीं छोड़ी।

उधर विनोद ने उसकी दोनों टाँगे पकड़कर घुमाना शुरू कर दिया।

पहलवान दो महान शक्तियों के बीच फंस गया। इस दृश्य को पलटते देख चार घुड़सवार भाला तानते हुए उसी तरफ भागे... मैदान में शोर मच गया। विनोद इस विपत्ति को भाँप चुका था।

उसने फ़ौरन पहलवान की टाँगे छोड़ दीं।

भाला उसकी तरफ लपलपाया।

वह फुर्ती से एक तरफ हट गया। भाला जमीन में धंस गया। विनोद ने उसे खींचना चाहा मगर तब तक आठ घुड़सवार और दौड़ पड़े। चारों तरफ तीर तन गये। विनोद समझ चुका था कि उसका विरोध करना मूर्खता है। वह दोनों हाथ उठाकर खड़ा हो गया।

घुड़सवारों ने उसे घेरे में ले लिया।

कासिम पर पागलपन सवार था। वह दोनों अब ऊपर नीचे लुढ़कने लगे। उसने सबसे बड़ी अकलमन्दी यह की कि पहलवान की गर्दन नहीं छोड़ी। गर्दन उसकी सख्त बाजुओं में घिरी थी। वह गर्दन को कई झटके दे चुका था।

पहलवान अपनी गर्दन छुड़ा पाने में असमर्थ था।

“साले नहीं छोड़ूँगा...हम भी किसी हाथी से कम कहाँ हैं।” कासिम ने ठहाका मारकर कहा।

दोनों धूल में भर गये थे।

यह लड़ाई जबरदस्त थी। विनोद को पुनः रस्सियों में जकड़ दिया गया था। सैनिकों ने कासिम और दूसरे पहलवान को लड़ता छोड़ दिया। शायद उन्हें विश्वास था कि अब वह पहलवान आसानी से कासिम को समाप्त कर देगा।

लेकिन यह उसकी भूल थी।

कासिम ने उसके कंधे पर दाँत गड़ा दिये।

वह भैंसे के समान डकार गया। कासिम ने दोबारा दाँतों को गड़ा दिया। वह इसी प्रकार उसे ढीला कर देना चाहता था। बिना ढीला किये वह उसकी गर्दन छोड़ना नहीं चाहता था।

174)

कंधे से रक्त बहने लगा था । धूल दोनोंके मुँह को चाट रही थी। कासिम के नथुनों में कुछ धूल के कण प्रविष्ट हुए और अचानक उसे एक तरकीब सुझाई दी।

उसने सावधानी से एक हाथ हटा लिया।

मुट्ठी में उसने धूल समेटी और पहलवान की आँखों में रगड़ दी। तत्काल ही वह करवट ले गया। पहलवान चीख उठा। धूल के कण उसकी आँखों में समा गये थे। उसने दोनों हाथ पैर फैला दिये।

अवसर अच्छा था।

कासिम ने उसे दोनों भुजाओं में भरकर उठा लिया। उसे पूरी शक्ति से उछाल दिया।

पहलवान का सिर धरती से टकरा गया। उसने क्रोध से करवट बदली और झूमता हुआ उठ खड़ा हुआ।

उसकी स्थिति अन्धों के समान थी।

दोनों हाथ फैलाकर वह कासिम की तरफ लपका। आँखों में धूल भर जाने के कारण उसे कासिम केवल परछाई के रूप में दिखाई दिया। कासिम एकदम झुककर बैठ गया और पहलवान की दोनों टाँग पकड़कर उलट दी।

“मरो साले।”

पहलवान इस बार चित्त गिरा। कासिम ने ठहाका मार कर थोड़ी धूल पुनः उसकी आँखों में झोंक दी। अचानक उसने चौंक करइधर-उधर देखा। विनोद को आठ सैनिक रस्सियों से जकड़ कर सिंहासन के करीब ले जा रहे थे। कासिम ने इस खेल को समाप्त कर देना उचित समझा।

पहलवान उठ रहा था।

न जाने उसने अपने खाल के जाँघिये से कब छुरी निकाल ली थी। स्थिति को कासिम भाँप गया। उसने तुरन्त एक लात उसके पेट पर जड़ दी और झुककर उसकी रान पर अपना दूसरा पैर जमा दिया।

दूसरी टांग उसने हाथों में कस ली।

दृश्य बड़ा भयंकर था।

कासिम उसकी टाँगों को मध्य से चीरने का प्रयास कर रहा था।

अपने इसी प्रयास में उसने पूरी शक्ति लगा दी। अचानक पहलवान द्वारा फेंकी हुई छुरी उसके कन्धे में गड़ गयी। लेकिन उसका परिणाम और भी भयंकर निकला। कासिम ने झटके से उसकी टांग छोड़ दी और कंधे में धँसी छुरी को खींच लिया।

फिर वह हिंसक भेड़िये के समान छुरी से उस पर प्रहार करने लगा।

डकारों से मैदान काँप-काँप गया।

खून की धारें उसे भिगोने लगीं। मगर वह जैसे पागल हो गया था। उसका छुरी वाला हाथ उठता और पूरी ताकत के साथ पहलवान के जिस्म से टकरा जाता। हर बार खून का फ़व्वारा लेकर लौटता। दोनों रक्त से लाल हो चुके थे।

तभी पहलवान का दम उखड़ गया।

किंतु कासिम की यह क्रिया बराबर जारी रही और जब उसने थक कर अपने चारों तरफ देखा तो उसे अपने हर ओर भाला तना नजर आया। दो भालों की नोक उसकी गर्दन से भी सटी थी।

कासिम ने माथे पर छाये रक्त की परत को हाँफते हुए साफ़ किया। उसका चेहरा लाल रंग से रंगा था। छुरी जैसे उसके हाथों में जम गयी। कासिम उन भालों को थकी निगाहों से घूरने लगा।

शायद इन दाँव पेंचों से उसकी शक्ति भी ढीली पड़ गयीं थी। उन रक्षकों से निहत्थे भिड़ पाने की क्षमता उसमें नहीं थी। उसने अपने हाथों में फँसी छुरी को पहलवान के निर्जीव

खूनी लोथड़ों पर छोड़ दिया और उठ खड़ा हुआ।

भालों की नोक उसकी कमर से सट गईं।

वह थका हारा उनके इशारे पर चलने लगा। और जब वह खंबे से बाँधा जा रहा था तो उसने थके नेत्रों से देखा सम्राट मानिक को रथ के पिछले भाग से लम्बी रस्सी द्वारा बाँध दिया गया था।

उसकी चेतना घूमने लगी।

एक बार उसने पुनः जोर लगाकर दौड़ लगा दी....दो सैनिकों को उसने उछाल दिया था।

वह भागता हुआ मैदान के उस कोने में पहुँचना चाहता था मगर वहाँ पहुँचने के पहले ही एक तीर उसकी दूसरी भुजा में समा गया। वह लड़खड़ाया। तभी एक घुड़सवार का घोड़ा उसके जिस्म से टकरा गया और फिर वह चीखता हुआ धरती पर उलट गया।

वह चेतना शून्य हो गया।

मैदान में ज़िन्दगी और मौत का रोमांचकारी खेल जारी था। कासिम की बेहोश देह को एक तरफ रख दिया गया।

उधर रथ में सेनापति स्वयं बैठ गया। उसके साथ छोटा पिकोटा चालक के रूप में बैठा और रथ तेजी के साथ अपना स्थान छोड़ गया। धूल उड़ने लगी। रथ के पीछे विनोद का शरीर घिसटता जा रहा था। वह धूल से घिर गया था।

वायु वेग से उड़ने वाला चार घोड़ों का रथ मैदान का पूरा चक्कर लेने लगा। शायद उसको अब दूसरे ढंग से समाप्त किया जा रहा था। बंदियों के चेहरों पर पीली परतें चढ़ी थीं।

ज़िन्दगी में पहली बार राजेश भी अपने को विवश पा रहा था। उसकी जंजीरें बार-बार बज उठती।

□□□

इस संसार में यदि ईश्वरीय शक्ति का महत्व न होता तो इंसान हैवान बन जाता। मौत और ज़िन्दगी का शासन मानव के हाथ में आ जाता जिसे जब चाहा मार दिया जाता और जिसे जब चाहा ज़िन्दगी दे दी जाती।

मगर ऐसा नहीं है।

यह दोनों वस्तुएँ किसी अदृशय शक्ति के हाथ में हैं और इंसान इसीलिए उसकी पूजा करता है। हर धर्म अलग-अलग रूप में उसे मानता चला आया है।

कहते हैं यदि ईश्वरीय नियमों के अनुसार किसी की मौत न हो तो लाख कोशिश करने पर भी उसे नहीं मारा जा सकता। संसार के इतिहास में इसके हजारों प्रमाण मौजूद हैं। इस कथन पर सैकड़ों ग्रन्थ और पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।

शायद अभी उसे मरना नहीं था।

तब भला सिंघराज का भयानक तूफ़ान उसे कैसे मार पाता। उसके बचाव के लिये दो दिमाग निरन्तर कार्य कर रहे थे।

रंजीत जो आजकल सेनापति का छोटा पिकोटा बना था, वह काफी देर से इस दृश्य को

देख रहा था। कुछ देर पहले उसे नारियों के बीच फ्रेंटाशिया भी नज़र आई थी किंतु अचानक उसके गायब हो जाने से वह चौंक पड़ा था। उसका खून अन्दर से उबल रहा था।

हर हालत में वह अपने भाई को बचाना चाहता था।

और उसे इसका अवसर भी मिल गया।

आदेश मिला कि सम्राट मानिक को रथ से बाँधकर मैदान में घुमाया जाये और उसके बाद उसे एक स्तंभ से बाँधकर समाप्त कर दिया जाये। यह...कार्य स्वयं सेनापति को अपने हाथों से करना था। उसने बराबर से खामोश बैठे छोटे पिकटो को रथ हाँकने का आदेश दिया।

रंजीत को रथ का संचालन करना था।

उसे आज सिंघराज में नौवां दिन था। इस बीच वह छः दिन बीमार रहा। फ्रेंटाशिया ने काफी कुछ भाषा का ज्ञान कराया। वह पूरी रात जाग कर उसे शिक्षा देती रही। सातवें दिन उसने अपना कार्य सँभाल लिया।

सिंघराज की थोड़ी बहुत भाषा का ज्ञान उसे था। उसने सेनापति से कह दिया था कि बीमारी से उठने के कारण न तो वह ज्यादा काम कर पाएगा और न ज्यादा बोल पाएगा।

किसी को उस पर संदेह नहीं था।

उसी रात सेना की छोड़ी टुकड़ी ने झील पर कुछ अनजाने लोगों का स्वागत किया था। वह सभी बेहोश हालत में लाये गये थे। सिंघराज के सैनिकों ने उन्हें बंदीगृह में डाल दिया। और आज उन बंदियों को स्तंभों में बाँधने के बाद होश में लाया गया था। रंजीत उनमें से अधिकाँश चेहरों को पहचान गया था। इन चेहरों को वह प्रेतमहल में देख चुका था।

हमीद और राजेश को वह अच्छी तरह पहचानता था।

इस समय उसके हाथ में घोड़ों की रासें थीं। बराबर में ही सिंघराज का सेनापति विराजमान था। रंजीत का दिमाग उस समय तेजी के साथ कार्य कर रहा था। धूल का एक गुब्बारा उड़ता हुआ रथ के ऊपर से गुजरा और उसी क्षण रंजीत की म्यान में फँसी तलवार लहराई।

सेनापति की दर्दनाक चीख गूँज उठी।

उसका सिर कट कर जमीन पर गिर गया।

और रंजीत का रथ उस सड़क पर मुड़ गया, जो मैदान को मिलाये थी। उसने रथ को तेजी के साथ दौड़ाना शुरू कर दिया, घूल के बीच घिरा रथ मैदान से बाहर निकल चुका था।

सिंघराज के दर्शक और सैनिक चौंके।

फिर कोई जोर से चीख उठा।

सैकड़ों तीर उस दिशा में सनसनाते हुए निकल गये जहाँ रथ निरन्तर मैदान से दूर होता जा रहा था। स्थिति को समझते-समझते रंजीत काफी दूर निकल गया था। उसने मुख्य सड़क छोड़ दी और कच्चे मार्ग पर रथ को मोड़ दिया।

लगभग बीस घुड़सवार उसी ओर दौड़ने लगे।

मैदान में सनसनी फ़ैल गयीं थी।

अभी वह दृश्य जारी ही थी कि आसमान में एक हैलीकॉप्टर तीर के समान मैदान की तरफ बढ़ता नजर आया।

वह मैदान के ऊपर से गुजरा।

एकदम गहरे घुएँ की पर्ते उठने लगीं। स्वयं हैलीकॉप्टर भी अपने चारों तरफ धुँआ फैलाता उड़ रहा था। मैदान में कर्णभेदी शोर पैदा हो गया। धुआँ हर तरफ फ़ैल चुका था। उसकी पर्त इतनी गहरीजा रही थी कि किसी को कुछ सुझाई नहीं दे रहा था।

मैदान में भगदड़ मच गयीं थी।

उसी धुएँ में बंदियों की जंजीरों खुलने लगी। निकट खड़े रक्षक चीखते हुए उलट गये, जंजीरों को खोलने वाली फ्रेंटाशिया थी, जिसके चेहरे पर इस समय गैस मास्क चढ़ा था।

राजेश की जंजीर खुल चुकी थी।

वह तेजी के साथ फ्रेंटाशिया के कार्य में मदद करने लगा।

“आप कासिम को बचाईये, वह सिंहासन की ओर बेहोश पड़ा है।” फ्रेंटाशिया ने कहा-”मैं इन लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले जा रही हूँ। शायद अब इस मैदान में खून की नदियाँ बहेंगी। ध्यान रहे, गैस बेहोशी की है। अपनी साँस रोककर बढ़ो।”

उसी क्षण चार सैनिक धुएँ में भागते नज़र आये उनके हाथों में भाले तने थे।

“बचो राजेश।”

राजेश ने फुर्ती से एक ओर छलाँग लगा दी। उधर फ्रेंटाशिया के हाथ में दबी गन ने आग उगल दी। चारों सैनिक ढेर हो गये।

राजेश धुएँ में लोप हो चुका था। वह तेजी के साथ भागता जा रहा था। इस समय उसके दोनों हाथों में तलवारें थीं। भाग्यवश उसे एक घोड़ा भी मिल गया। वह अपनी साँस रोक चुका था।

धुएँ में हिंसक उत्पात मच गया। वहाँ बिल्कुल गौरिल्ला जंग छिड़ गयी। वह लोग आपस में ही मार काट मचाने लगे। इंसान लाशों में बदलते जा रहे थे। धुएँ में खून की लाल लकीरें उभर रही थीं।

उधर वायुमण्डल में इस बार दो हैलीकॉप्टर चकराये। वह मैदान के चारों तरफ घेरे में पैराशूट छोड़ रहे थे। पैराशूट से कूदने वालों में तीन नीचे पहुँचने से पहले ही समाप्त हो गये।

मामला समझ में आ गया था।

अब मैदान में गोलियाँ सनसना रही थीं। मगर वह फायरिंग एक तरफा नहीं थी उधर घेरे में लेने वाले सभी टॉमीगन लिये थे।

धमाकों में रह-रह कर चीखें दब जातीं।

यह नहीं जाना जा सकता था कि कौन मरा.. कौन जीवित है?

राजेश घोड़े की पीठ से चिपक गया था। इस दो तरफ़ा फायरिंग के कारण वह भी चकरा गया था। उसे भय था कहीं एक आध गोली उसकी खोपड़ी में भी न समा जाये। यूँ अब तक

तीन जख्म शरीर पर हो चुके थे।
वह तलवार के जख्म थे।
उसने अपने बचाव के लिये घोड़े से छलाँग लगा दी। मैदानी धूल में वह तेजी के साथ रेंगने लगा। उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे सिंहासन की ओर से भी कुछ इंसान फायरिंग कर रहे थे।
उस तरफ से सनसनाने वाली गोलियाँ चारों तरफ घूम रही थी।
राजेश इस समय उसी तरफ सरक रहा था।
इस समय कासिम को बचा पाना उसे दूभर लग रहा था। धुएँ की पर्ते इतनी गहन थी कि आस-पास कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
वह सीढ़ियों से टकरा गया।
सहसा एक गोली उसकी जाँघ में धँस गयी। राजेश एक पल के लिये जमीन से चिपक गया। उस गोली से जख्म तो हो गया किंतु साथ ही राजेश को यह एहसास हो गया कि गोली किस तरफ से छोड़ी जा रही है।
उसने पुनः सीढ़ियों पर लम्बा चक्कर लेकर सरकना शुरू किया।
वह गोलियाँ निश्चित रूप से मशीनगन द्वारा छोड़ी जा रही थीं। मशीनगन की घड़घड़ाहट उसे सिंहासन की आड़ में होती महसूस हुई।
राजेश सिंहासन के पीछे पहुँच जाना चाहता था। इसी प्रयास में वह अपने आपको गोलियों से बचाता रेंगता रहा। कुछ मिनट बाद ही वह ऊँची कुर्सियों को पार कर चुका था। उसे धुएँ के बीच लिपटी एक आकृति नज़र आई। वह आकृति सिंहासन की आड़ लिये मशीनगन सँभाले लेटी थी।
पीछे ऊँची सी दिवार होने के कारण आकृति सुरक्षित थी। राजेश ने छलाँग लगा दी। उसके दोनों हाथ उस व्यक्ति की गर्दन में फँस गये। राजेश का विपक्षी मांडूक था जो पीछे से होने वाले हमले के कारण बौखला गया था। राजेश चाहता तो बड़ी आसानी से हाथ में दबी तलवार द्वारा उसका धड़ अलग कर देता। मगर ऐसा उसने जानबूझ कर नहीं किया। वह मशीनगन चलाने वाले व्यक्ति को बेहोश कर देना उचित समझता था।
मांडूक पर वह छिपकली के समान चिपक गया। उस के हाथ मांडूक की गर्दन पर कसते जा रहे थे। वह पूरी तरह सावधान था, इतना वह जेवराक से सुन चुका था कि मांडूक अत्यन्त शक्तिशाली है।
सिंघराज के सभी लड़ाके उसका लोहा मानते थे।
मगर वह भी राजेश था, जिसका बड़े-बड़े अपराधी लोहा मानते थे।
मांडूक ने उसे पूरी शक्ति के साथ उछाल कर फैंकना चाहा। उसका वह प्रयास असफल रहा। राजेश का शरीर ढीला होने के बजाय कसता चला गया। मांडूक ने करवट बदली और राजेश ने अवसर अच्छा देखकर उसे पंजों के बल उछाल दिया।
मांडूक का शरीर दीवार से टकराया।
प्रथम इसके कि वह कुछ कर पाता, राजेश ने फुर्ती के साथ मशीनगन तान दी। मांडूक

परिस्थिति को परख चुका था।

उसने राजेश पर हमला करने का विचार त्याग दिया और तुरन्त दीवार पर चढ़कर दूसरी तरफ छलाँग लगा गया।

राजेश ने मशीनगन के फायर खोल दिये।

मगर गोलियाँ केवल वायुमण्डल को चीरती रहीं।

मांडूक अब उसे कहीं नजर नहीं आ रहा था। राजेश मशीनगन सँभाल कर उठ खड़ा हुआ। उसने दीवार से नीचे झाँका। ठीक उसी समय गोलियों की बाढ़ उस तरफ आई और उसे लेट जाना पड़ा।

मैदान में अब भी रह-रहकर चिंगारियाँ उठ रहीं थीं।

लेकिन सिंघराज के लड़ाके अब इसका कोई जवाब नहीं दे रहे थे। शायद गैस ने उन्हें अपने प्रभाव में ले लिया था। या तो वह बेहोश हो गये थे अथवा मर गये थे।

राजेश ने पुनः दीवार से नीचे झाँकने की कोशिश की।

नीचे जमीन कहाँ है धुएँ के कारण नहीं दिखाई दिया। अब वह इस भयानक जंग की समाप्ति की प्रतीक्षा कर रहा था।

अब चीखें पैदा नहीं हो रही थीं।

मैदान में केवल धमाके और चिंगारियों का नृत्य जारी था।

राजेश अब भी साँस रोके लेटा रहा। वह इस भयानक जंग की कल्पना मात्र से सिहर उठता। जीवन का यह एडवेंचर बर्फ के समान ठंडक लिये था। यह अनुभव उसके शरीर को रोमांचित कर रहा था।

शरीर पर केवल जाँघिया था, जो अब तक तार-तार हो चुका था।

ऊपरी जिस्म में रक्त की लहरें सरसरा रही थीं। तीन तलवारों के जख्म और जाँघ में लगी गोली ने उसे पीड़ा के भयानक सागर में ढकेलना चाहा।

लेकिन वह राजेश था।

उसके जबड़े सख्ती के साथ भिंचे थे।

जैसे वह इन भयानक पीड़ाओं को पी जाने का प्रयास कर रहा हो।

कुछ खरोचें चेहरे पर भी थीं।

बाल घूल से चिपक गये थे।

अभी भी उसे आशा नही थी कि सिंघराज से जीवित निकलकर अपने वतन जा सकेगा। न जाने अभी इस जमीन पर कितने खतरे जन्म लेंगे। हो सकता है यह जंग आखिरी न हो।

यूँ जहरीली गैस सिंघराज को गहरी नींद में सुलाती जा रही थी।

ऊपरी हैलीकॉप्टरों का गर्जन अब भी जारी था। राजेश कभी ऊपर देखता और कभी सामने। मगर दोनों ओर उसे केवल मात्र धुआँ नजर आया।

जैसे सिंघराज जल उठा हो।

और धू-धू करता हुआ धुआँ हर तरफ फैलता जा रहा था।

□□□

पिछले घुड़सवार निरन्तर निकट होते गये। रंजीत रह-रहकर उन्हें अपनी तरफ बढ़ता देख रहा था। न जाने उनके घोड़े भड़ककर किस दिशा में दौड़ रहे थे। पहाड़ी टीले सरसरा कर पीछे छूटते जा रहे थे।

वह रस्से को लगातार अपनी तरफ खींचता जा रहा था। घोड़ों की उसे चिंता नहीं थी। वहाँ बहुत दूर तक कच्चा रास्ता फैला पड़ा था। घोड़े उसी पर भाग रहे थे।

बस्ती बहुत दूर छूट चुकी थी।

अंत में वह अपनी कोशिश में कामयाब हुआ। उसने विनोद के बेहोश हो चले शरीर को रथ के अन्दर खींच लिया था। विनोद की स्थिति देखकर उसकी आत्मा काँप गयी।

जिस्म लगभग जख्मों से छलनी हो गया था।

पत्थरों की चोटों ने शरीर पर लाल निशान बना दिये थे।

इस वक्त उसका चेहरा पहचानने में नहीं आ रहा था। रंजीत कुछ देर तक उसे देखता रहा। उसकी पलकों की कोर कुछ गीली हो चली।

इस अनजाने देश में हम मिले हैं जहाँ हर तरफ खून है मगर फिर भी एक भाई का खून दूसरे के लिये काम न आया। तो वह भाई किस काम का। मैं तुम्हें अपने से पहले नहीं मरने दूँगा।

आँखों से एक बूँद निकलकर विनोद के चेहरे पर गिर गयी।

रंजीत ने अपनी भावना को पी जाने का प्रयास किया और उस तरफ देखने लगा जहाँ धूल उठ रही थी। वह निश्चित रूप से घुड़सवार थे जो निरन्तर निकट आते जा रहे थे। रंजीत उनसे बचने के लिये जल्द ही कुछ करना चाहता था।

उसने दोनों तरफ निगाह डाली।

कुछ आगे चलने पर खतरनाक खाइयों का शुभारम्भ होने जा रहा था। रंजीत ने उस तरफ देखा। सहसा कुछ दूरी पर उसे दाहिने भाग में गहरा खड्डा नजर आया। चारों घोड़े उसी ओर अग्रसर हो रहे थे।

रंजीत ने घोड़ों की रास नहीं सँभाली।

वह दोनों बाजुओं में विनोद को थामकर रथ से लुढ़क गया। वह दाँईं तरफ नजर आने वाले खड्ड की तरफ लुढ़का था। एक स्थान पर उसने अपने पैर जमाये। घिसटने से चोटें उसे भी आ गयीं थीं किंतु इस समय उसने इसकी परवाह नहीं की।

उसने विनोद को कंधा पर लादा।

खड्ड के आढ़े तिरछे पत्थरों पर पैर जमाता हुआ वह नीचे उतरने लगा। वह धीरे-धीरे नीचे सरक रहा था। हालाँकि कार्य बहुत रिस्की था किंतु इस समय वह विनोद के बेहोश शरीर को कहीं छिपा देना चाहता था।

अचानक उसका पैर फिसल गया।

वह ढलुवा खड्ड में लुढकता चला गया। अब उसके चारों तरफ अँधेरा छा चुका था। एक बार के लिये वह हवा में तैर गया। उसने फिर भी विनोद का शरीर नहीं छोड़ा। अँधेरे खड्ड

में वह न जाने कितने नीचे गिरा किंतु गनीमत थी कि नीचे दलदली भाग था। अतः वह किसी ठोस भाग से नहीं टकराया। दलदल में पानी का अंश अधिक था। उसके पैर इस समय नीचे जमीन पर टिके थे। दलदल का पानी गले तक भर आया था।

वहाँ इतना अँधेरा था कि हाथ को हाथ भी नहीं सुझाई दे रहा था।

रंजीत ने ऊपर देखा।

हल्का उजियारा काफी ऊपर था। शायद उस समय सूरज भी पश्चिमी पहाड़ियों को छूने लगा था। रात के आगमन से पूर्व ही उसने कुछ करने का निश्चय किया।

वह हाथ से दलदल की कीचड़ हटाता हुआ बढ़ने लगा। सैनिक शायद खाली रथ के पीछे भाग चुके थे। क्योंकि ऊपर जहाँ प्रकाश था, उस कोने में अनहोनी घटना नहींदिखाई दी थी। फिलहाल वह सैनिकों के चंगुल से बच चुका था।

उसी प्रकार कीचड़ को हटाता हुआ वह चलता रहा।

कहीं जल था और कहीं कीचड़।

विनोद का पूरा जिस्म उसमें छिपा दिया था। केवल चेहरे का भाग ऊपर था। वह भी कभी-खभी जल से छू जाता। रंजीत की साँस वातावरण में सरसरा रही थीं। कुछ दूर चलने केबाद उसे पथरीला भाग मिल गया। वह टटोलता हुआ उसी हिस्से में बढ़ने लगा।

वह भाग चौकोर महसूस होता था।

इतना स्थान था कि वह विनोद को लिटा सके।

उसने विनोद को उसी भाग में लिटा दिया।

स्वयं भी उसके समीप बैठ गया। काफी देर तक वह अँधेरे में आँखें फाड़-फाड़कर देखता रहा। धीरे-धीरे उसके नेत्र देख पाने के अभ्यस्त हो गये।

उसे ऐसा लगता जैसे वह कोई उजड़ा हुआ कमरा है, जो धरती के गर्भ में समा गया है। कमरे की दीवारें प्राचीन ढंग की बनी थी। उसके अन्दर इस समय कीचड़ और जल भरा था। उन टूटी दीवारों का क्रम पथरीले भागों में जुड़ गया था।

कहीं-कहीं दरारें पड़ी थीं।

दो एक अबाबील और चमगादड़ों के घोंसले भी बने थे। वह पंख फड़फड़ाकर ऊपर चकराने लगे। दीवारों पर जगह-जगह काई जम गयीं थीं। कुछ पानी में अक्सर उग आने वाले पौधे भी दीवार पर जड़ फैलाये थे।

वह कमरा काफी लम्बा चौड़ा था। अचानक रंजीत को एक अजीब सी वस्तु दीवार में धँसी नजर आई। वह कोई नरकंकाल की खोपड़ी थी जिसका पूरा भाग तो दीवार में गर्दन के कारण नजर नहीं आ रहा था। किंतु उसका जबड़ा और कुछ उभरी हड्डियों का ढाँचा दीवार से ऊपर था। वह खोपड़ी दीवार में अपना निशान बनाये थी। रंजीत के शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गईं। शायद पहले कभी वहाँ कोई इंसान मरा होगा जिसका नरकंकाल दीवारों में फ्रेम की तरह जड़ गया था। उसी के बराबर में दो लोहे की जंजीरें लटकी नजर आ रही थीं।

रंजीत काफी देर तक उस अजीबो-गरीब कमरे को घूरता रहा।

अचानक विनोद के कराहने से उसका ध्यान टूट गया। उसने तुरन्त विनोद के चेहरे को निहारा। वह धीरे-धीरे कराह रहा था। उसके ललाट की रगें फूलती जा रही थीं।

रंजीत ने दोनों हाथ नीचे जल में डाले और विनोद के चेहरे पर जल के छीटें देने लगा।

□□□

चेतना लौट रही है।

पलकें धीरे-धीरें उठ रही हैं। पलकों के नीचे दर्द में डूबी आँखें केवल अंधकार देखती हैं। हर तरफ अँधेरा है.... वह लेटा हुआ उसी प्रकार अँधेरे को घूर रहा है।

दिमाग में तेजी के साथ कोई चक्र घूम रहा है।

और....और...और।

वह कहाँ है... किन परिस्थितियों में है...सम्राट मानिक..कर्नल विनोद..लगातार दोनों चेहरे उसके मस्तिष्क में घूमने लगते हैं, दिल कहा रहा है।

तुम मानिक हो।

“नहीं...?” उसकी आत्मा के चेहरे के कोनेसे आवाज़ उठती है-”तुम कर्नल विनोद हो.. तुम विनोद हो...मानिक तुम्हारा पिछला जन्म था... तुम विनोद हो.. जागो इस भयंकर स्वप्न से जागो.. तुम्हारे दिमाग में परिवर्तन लाया गया था।”

“यह झूठ है, तुम मानिक हो।” इस सत्य का खंडन पुनः उठता है।

उसकी आँखें बार-बार इधर उधर घूमती है।

उसे सब कुछ याद आता जा रहा है। उसकी याददाश्त वापिस लौट रही है। पुरानी बातें चलचित्र के समान दिमाग में घूम रही है। सभी चेहरे बड़ी तेजी के साथ नाचते हुए उसकी आँखों में गुजर रहे हैं।

“डॉक्टर लियो...?”

संग्राम...जनपद...।

प्रेतमहल में कासिम को बचाने के प्रयास में भागना.. और.. और...किरणों के दायरे का शिकार होना, उस समय मीनाक्षी के साथ वह मर रहा था। खातून की आत्मा का प्रयोग जारी होता है।

तब क्या वह मरा नहीं...।

नहीं... वह जीवित था....केवल चेतना गँवा बैठा था... उसके बाद वह सब कुछ भूलकर अचानक सम्राट मानिक बन गया... शायद उसे यह भुला दिया गया कि वह विनोद है।

अपराधियों का काल है।

फिर.. वह तो अब भी जीवित है।

“यदि आज वह रातें..एक नहीं अनेकों खतरनाक रातें?” प्रेतमहल में अपने हमशक्ल से मुठभेड़ फिर बेहोशी और होश में आने के बाद दिग्राज का दर्रा....दिग्राज..उफ़..?

उसने दोनों हाथ में सिर थाम लिया।

मीनाक्षी के साथ वह एक रात उस स्थान पर पहुँचता है। जहाँ पूर्व जन्म में उसकी मौत हुई थी। उसे पूर्व जन्म की वह जंग याद आ रही है। मरते समय उसने अपने रक्षकों से कहा

था। उसकी लाश को जलाया नहीं जायेगा बस किसी सुरक्षित स्थान पर गाड़ दिया जायेगा। उसकी आँखों के सामने चार रक्षकों ने गड्ढा खोद दिया और वह मरते समय सिंघराज के खजाने का नक्शा बनाता रहा साथ ही अपनी वसीयत....।

वह क्रूर इंसान था।

उसने बहुत से पाप किये थे। और एक अनजान टापू में जब उसकी मौत हुई तो उसने अपनी वसीयत में कुछ लिखा था, क्या लिखा था याद नहीं।

बहुत लम्बा अरसा गुजर चुका है।

और एक रात मीनाक्षी अपने आदमियों सहित उसी स्थान पर पहुँचती है। उसके साथ डॉक्टर लियो, संग्राम, जनपद और अनेक खूँखार लोग हैं।

जमीन खोदने पर एक बक्से से कागजात मिल जाते हैं और उसे जीवित बताया जाता है जबकि वह कहानी वर्षो पहले समाप्त हो चुकी है।

उसके बाद सिंघराज की ओर सुरंगों से निकल कर बढ़ते हैं। पनडुब्बी में पुनः बेहोशी छा जाती है। होश आने पर सिंघराज के इंसानों का अत्याचार शुरू होता है।

कितनी बड़ी भूल थी वह।

उसके दिमाग को बदल दिया गया था।

ऐसे वातावरण में गुजारा गया कि वह सचमुच सम्राट मानिक बन बैठा और पुनः सिंघराज के खजाने को हथियाने के लिये बीड़ा उठा बैठा।

मगर वह शायद किसी की भयंकर योजना थी।

खातून की आत्मा, खातून जिसकी दिग्राज में पूजा की जाती थी। आखिर यह सब क्या गोरखधन्धा था।

उसका दिमाग तपने लगा।

मगर तभी जैसे विवेक को झटका लगा। किसी एक ने उस के माथे पर हाथ रख दिया था। सारी पीड़ा भूलकर वह फुर्ती से बैठ गया। उसकी आँखों में अब भयंकरता आ गयी।

“विनोद...।” किसी ने धीमे स्वर में कहा - “तुम होश में आ गये। याद करो भइया, तुम मानिक नहीं विनोद हो। तुम्हारा दिमाग पलट गया था।”

“कौन हो तुम..?” विनोद ने अपने नेत्रों जो सजग करते हुए पूछा।

उसे अँधेरे में अपने निकट ही एक आकृति बैठी दिखाई दे रही थी। उसके नेत्र धीरे-धीरे अंधकार में देख पाने के अभ्यस्त होते जा रहे थे।

“क्या तुम्हारी याददाश्त वापिस आ गयी।” वही आवाज़ पुनः सुनाई दी,”मुझे पहचानों विनोद..हम दोनों एक ही खून के दो टुकड़े हैं। इन राजमहलों के पाप कर्मों ने अब तक हम दोनों को जुदा रखा था।”

“यह आवाज़ कुछ जानी पहचानी लगती है। कौन हो तुम?”

“मैं रंजीत हूँ वीरानगढ़ एस्टेट का वह प्रिंस, जो बचपन से दुश्मनों की साजिश का शिकार हो गया था...जब मुझे असलियत मालूम हुई, तब मैं तुमसे काफी दूर निकल चुका था। तुम्हें याद होगा... प्रेतमहल में मैं स्वयं मानिक बनकर तुमसे टकराने पहुँचा था। न

जाने मैं किन-किन लोगों के हाथों खिलौना बना घूमता रहा।

मुझे कठपुतली की तरह नचाया गया। मगर अब कुछ नहीं होगा, हम दोनों को अब कोई नहीं मार सकता?”

“रंजीत...?” विनोद बड़बड़ाया। वह कुछ सोचने लगा था।

“तुम्हारा हमशक्ल?”

“समझ रहा हूँ, मुझे सब कुछ याद आ रहा है। तुम्हारी बाँईं जाँघ पर भी राजवंशी खानदान का निशान है और मैं जानता हूँ वीरानगढ़ में एक साथ दो जुड़वाँ प्रिंस पैदा हुए थे। तुम चिंता न करो रंजीत! ईश्वर ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा...सब कुछ बदलेगा। अब मुझे मानिक नहीं बनाया जा सकता, अब तुम्हारे सामने मानिक नहीं बल्कि विनोद है। तुम्हारा अपना भाई विनोद...।”

“मेरे भाई..।” रंजीत ने दोनों बाहें फैला दी।

विनोद ने उसे भुजाओं में समेट लिया।

रंजीत की आँखें गीली हो गयीं थी। शायद वह आँसू हर्ष के थे।

और विनोद?

भयानक तौर से जख्मी होने पर भी मुस्करा रहा था। उसने रंजीत के कंधा को थपथपाया। वह रंजीत की भावनाओं को समझ रहा था।

मस्तक पर लगातार आघातों ने उसकी याददाश्त पूरी तरह लौटा दी।

उस अन्धकूप में जहाँ चारों तरफ खतरे के बादल मँडरा रहे थे, वह बिछुड़े हुए दो भाई एक दूसरे से इस प्रकार लिपटे बैठे थे, जैसे संसार का सबसे बड़ा खजाना उन्हें मिल गया हो।

“मुझे माफ़ कर देना भइया, मैं उस रात तुमसे तलवारबाज़ी कर बैठा था।”

विनोद हंस पड़ा।

अचानक उसे ख्याल आया कि वह तो एक रथ के पीछे बाँध दिया गया था, फिर रथ भागने लगा! न जाने वह कब बेहोश हो गया था।

“यह सब छोड़ो, यह बताओ हम लोग कौन से कुएँ में बंद हैं। क्या फिर से बंदी बना लिये गये।”

रंजीत अब सामने बैठ गया।

“उस रथ को हाँकने वाला मैं ही था, जिसमें तुम्हें बाँधा गया था।”

रंजीत ने गुजरी हुई घटनाओं को सुनाना शुरू कर दिया। पूरी गाथा सुनाने के बाद वह खामोश हो गया। विनोद ने अब चारों तरफ का निरीक्षण करना प्रारम्भ किया। अभी ऊपर भी प्रकाश था, लेकिन प्रकाश में कुछ धुएँ की लहरें उठती नजर आ रही थीं।

“यह धुआँ कैसा है?”

“पता नहीं, कुछ देर पहले तो नहीं था।”

विनोद की निगाहें, एक स्थान पर जम गईं। सहसा वह चौंक पड़ा। उसके कान धोखा नहीं खा सकते थे। दीवार के दूसरी तरफ हल्की खड़खड़ाहट उत्पन्न हो रही थी। उसकी

निगाह अब भी उस खोपड़ी पर जमी थी।

बराबर में लटकने वाली जंजीरों ने उसे और चौंका दिया।

“खजाना।” वह बड़बड़ाया।

“क्या...?”

“अजीब है यह संयोग। यह जगह वही है... बिल्कुल उसी प्रकार की जंजीरें मेरी याददाश्त इस समय बहुत दूर दौड़ रही है।”

“मगर..।”

“ठहरो...पहले मैं इन जंजीरों को परख लूँ...।”

विनोद पानी में उतर गया। उसने उन जंजीरों को टटोला, जिनके सिरे पानी में डूबते चले गये थे। फिर उसका हाथ कंकाली खोपड़ी पर चकराने लगा।

उसकी आँखों में चमक आती जा रही थी।

उसने दोनों जंजीरों को हिलाना चाहा। तभी उसकी निगाह दीवार में बनी दरार पर जम गईं। दरार में हल्की प्रकाश रेखा बन गयीं थीं। वह तुरन्त जंजीरों को छोड़कर वापस उसी चौकोर पत्थर पर आ गया।

“यह वही स्थान है।” वह धीमे स्वर में फुसफुसाया - “खज़ाना यहीं कहीं होना चाहिये। मकान दब गया है और अगर मेरी याददाश्त धोखा नहीं खा रही है तो नरकंकाल खातून का है..यह खातून इस देश का सबसे बड़ा पुजारी था। मेरे हाथों से इसी मकान में मारा गया था। उसे मैंने दो जंजीरों के बीच एक लोहे की चादर पर बाँध दिया था। उस समय वह मर चुका था। खजाना इसी मकान के दूसरे कमरे में होना चाहिये..मगर यह रौशनी...।”

“मुझे लगता है, दूसरी तरफ कोई मौजूद है।”

“हाँ, इसमें प्रविष्ट होने का मार्ग दूसरी तरफ से था। बीच में लोहे का दरवाजा...मगर ठहरो..मेरे साथ आओ। जरूर दूसरी ओर कोई है।”

विनोद उसी दरार के पास पहुँच गया जहाँ से रौशनी की रेखा सी बन गयीं थी। रंजीत इस समय दोनों जंजीरों को टटोल रहा था।

रंजीत की आँख दरार में जम गयी।

दूसरी तरफ का दृश्य देखते ही उसके नेत्र फ़ैल गये। वह दृश्य बड़ा डरावना था। यदि साधारण मनुष्य देख लेता तो निश्चित रूप से उसकी चीख निकल जाती।

इनसानी ढाँचे बिखरे पड़े थे।

वह इस प्रकार लग रहे थे, जैसे मुर्दा जीवित होकर वातावरण को फूँक देना चाहते हों। साँसों की तेज सरसराहट उत्पन्न हो रही थी।

मध्य भाग में नर कंकालों का जाल फैला था। उनसे भी शोले उठ रह थे।

और उस दृश्य को घूर रही थीं स्याह लबादे में लिपटी एक मनुष्याकृति.. वह स्थिर भाव से खड़ी सभी कंकालों को इस प्रकार निहार रही थी जैसे, वह नरकंकाल न होकर इंसान ही खड़े हों। उसे जरा भी खौफ नहीं था।

उसके पीछे ही एक आदमकद द्वार सा नजर आ रहा था।

अचानक वह मनुष्याकृति कमरे के मध्य सुलग रहे ढाँचों पर आकर रुक गयी। उसने ढाँचों को हटाना शुरू कर दिया। वह तेजी के साथ हड्डियों को हटाती जा रही थी। फिर वहाँ एक गड्ढा सा बन गया था।

उसी समय रंजीत के कंठ से चीख निकल पड़ी।

विनोद ने चौंककर पीछे देखा। विनोद तेजी के साथ उस तरफ लपका जहाँ वह जंजीर अब भी हिल रही थी। उन जंजीरों में वह तलवार लटकती नज़र आई, जो शुरू में रंजीत की म्यान में फँसी थी।

तलवार हिल रही थी।

ठीक उसी समय एक धमाका हुआ और एक दूसरी चीख गूँज उठी। वह चीख भी निश्चित रूप से रंजीत की थी। विनोद का दिमाग तेजी के साथ कार्य करने लगा।

उसने तलवार दाँतों के बीच दबायी और दोनों जंजीरों पर झूल गया । जंजीरों पर झटका लगते ही वह बीच का भाग एक दम तिलिस्म के समान घूमने लगा। वह सचमुच लोहे का आदमकद दरवाजा था।

विनोद उसके घूमते ही दूसरे तरफ कूद गया।

तलवार उसके हाथों में आ गयी।

रंजीत दो कंकालों के बीच फँसा पड़ा था। कंकालों से उठने वाले शोले उसके इर्द-गिर्द लिपट रहे थे। वह उनके बीच पड़ा-पड़ा काँप रहा था।

विनोद ने तुरन्त उसे खींचकर बाहर निकाल लिया। उस समय उसकी निगाह से यह भी छिपा नहीं रहा कि रंजीत के दायें कंधे पर गोली लगी है। उसने बिजली की फुर्ती से उस तरफ घूमकर देखा, वहाँ कुछ देर पहले उसे काले लबादे में लिपटा इंसान दिखाई दिया था।

वह इंसान अपने स्थान से गायब था।

“तुम घबराओ नहीं रंजीत। वह केवल हड्डियों का फॉस्फोरस है,इससे तुम्हें कोई हानि नहीं होगी...तुम्हारे कंधे पर जख्म हो गया है- यही लेटे रहो मैं देखता हूँ- अब वह कैसे बच पाता है।”

विनोद ने रंजीत को लिटा दिया।

रंजीत सहमी निगाहों से एक तरफ देख रहा था। विनोद को देखते ही उसका भय कुछ दूर हो गया था और वह अपना कंधा दबाता हुआ उठ खड़ा हुआ।

“मुझे गोली मारी गयीं है। वह इस गड्ढे में कूद गया है।”

“और यहाँ से निकलने का एक रास्ता है, वह भी यही गड्ढा है। नीचे वह खजाना दफ़न है..।”इतना कहकर विनोद ने कर्ण भेदी अट्टहास लगाया।

“अब तुम घिर चुकी हो खातून की आत्मा...मैं तुम्हारे द्वार पर जमा हूँ...अब तुम्हारा कोई प्रयोग मुझे पर कामयाब नहीं होगा...हा..हा...वह सब डॉक्टर लियो के साथ समाप्त हो गया।”

नीचे से कोई जवाब नहीं मिला।

विनोद इस समय उस चौकोर गड्ढे के निकट खड़ा था। उसके हाथों में फँसी तलवार जैसे

प्यासी हो रही थी। गड्ढे के चारों तरफ फॉस्फोरस अब भी रह-रह कर लपटें फेंक रही थी। जो विनोद के पाँवों को घेरे थी।

"यही वह आखिरी जंग थी जहाँ से मैं भाग निकला था। और इसी मकान के तहखाने में वह खजाना है। मगर मैं अच्छी तरह जानता हूँ उससे बाहर निकलने का एक ही मार्ग है और उस मार्ग पर इस समय तुम्हारी मौत खड़ी है।"

"बचो विनोद।" रंजीत चीखा।

फुर्ती से विनोद लेट गया अन्यथा गोली उसकी कनपटी में धँस जाती। दरवाजे पर भयानक कहकहा गूँजा। रंजीत ने तुरन्त एक कंकाल की आड़ में पोजीशन ले ली। दूसरा फायर भी हुआ किंतु अब विनोद को गोली मार देना आसान कार्य नहीं था।

उस आदमकद दरवाजे में रिवॉल्वर लिये मांडूक खड़ा था। वह पागलों के समान कहकहे लगाये जा रहा था।

"तुम में से कोई नहीं बच सकता...।" उसने तीसरा फायर कर दिया। विनोद उछल कर अलग हट गया।

"रिवॉल्वर फेंक दो मांडूक की औलाद..?" विनोद गरजा - "अब मेरे पास यह खिलौना है। तुममें से कोई भी नहीं बच सकता।"

मांडूक लड़खड़ाती चाल से आगे बढ़ा।

उसने चौथा फायर भी झोंक डाला। और जब विनोद को खरोंच भी नहीं लगी तो उसने लगातार पागलपन में दो फायर और कर दिये। रिवॉल्वर खाली हो चुका था।

"बाजी पलट चुकी है। शायद सिंघराज में तुम्हारे अलावा कोई भी जीवित नहीं बचा।"

मांडूक ने क्रोध में आकर रिवॉल्वर भी फेंक मारा। विनोद ठहाका मारकर हंस पड़ा, मांडूक ने तुरन्त म्यान में फँसी तलवार खींच ली और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। वह खूनी नेत्रों से विनोद को निहार रहा था।

उसका हूलिया भी विचित्र जानवर जैसा हो रहा था।

रंजीत कंकाल की आड़ से उठ खड़ा हुआ।

उधर मांडूक ने तलवार का वार कर दिया। विनोद ने उस वार को तलवार पर ही रोक लिया। हाथ में पैदा होने वाली झंझनाहट से वह मांडूक के शक्ति का अन्दाजा लगा चुका था। तलवारें फिर टकरायीं।

और वह दोनों शेर एकदम आमने-सामने आ गये।

तलवारों से जोर हुआ।

न जाने मांडूक में कितनी शक्ति थी, उसने विनोद को पीछे धकेल दिया। विनोद एक कंकाल से टकरा गया, मांडूक ने उछल कर दोबारा प्रहार किया। तलवार निश्चित रूप से विनोद के माथे से टकराती, मगर उसने भी अपनी तलवार तिरछी करके सामने कर दी।

मांडूक उसके ऊपर था।

उन दोनों के शरीरों के इर्द-गिर्द शोले उठ रहे थे।

हूँ..हूँ...हूँ...हा...हा..हा।

मांडूक ने भयानक कहकहा लगाया।

ऐसा जान पड़ता जैसे दानव हँस रहा हो।

विनोद ने दोनों पंजे उसके पेट पर जमाकर उसे उछाल दिया। वह उछला तो नहीं किंतु विनोद उसे अपने ऊपर से हटाने में सफल हो गया।

विनोद ने तलवार का प्रहार किया। मांडूक ने उसे रोककर करवट बदली, फिर वह उछल कर खड़ा हो गया। इस बार तलवार एक कंकाल से टकराकर दो भागों में विभाजित हो गयी। विनोद आधी तलवार लेकर दो कदम पीछे हट गया।

मांडूक ने एक सुलगता कंकाल उठाकर उसके ऊपर फेंक दिया।

विनोद ने फुर्ती से तलवार फेंककर उस कंकाल को हाथों पर रोक लिया। अब वहउसे अपनी आड़ बनायेगा। उसने दोनों हाथों पर कंकाल उठाया और पूरी शक्ति के साथ मांडूक के सिर का निशाना साधकर मार दिया।

बड़ी भयंकर लड़ाई थी।

मांडूक के शरीर में कंकाल टकरा गया। वह केवल कुछ कदम लड़खड़ा कर पीछे हटा, अब विनोद लगातार उस पर कंकाल उछालकर फेंकता जा रहा था। एक बार एक कंकाल उसकी भुजा पर बैठा और तलवार उसके हाथों से छूट गयी।

विनोद ने उस पर छलाँग लगा दी।

वह दोनों अब आपस में गुथे थे।

दोनों लुढ़कते हुए शोलों के बीच गुजरने लगे। वातावरण में हड्डियों की खड़खड़ाहट जोरो पर थी। वह शक्ति में किसी प्रकार भी एक-दूसरे से कम नहीं थे। विनोद काफी जख्मी और कमजोर हो गया था, अन्यथा अब तक मांडूक की लीला समाप्त हो जाती।

वह दोनों लुढ़कते हुए उसी चौकोर खड्ढे में जा गिरे।

रंजीत ने सँभलकर मांडूक की तलवार उठाई। अब तक वह अलग खड़ा इस खूनी जंग को देख रहा था। तलवार सँभाल कर उसने गड्ढे में छलाँग लगा दी।

वह ठीक मांडूक के ऊपर गिरा।

नीचे विनोद उसे जकड़े था।

रंजीत का हाथ उठा और तलवार सहित गिर गया। एक भयानक डकार मांडूक के कंठ से निकल गयी। मांडूक रक्त से सना हुआ पलटा। विनोद ने उसे छोड़ दिया था।

उधर रंजीत लगातार तलवार से उसके अंगों को काटने लगा था।

अंधों के समान भयानक मांडूक ने हाथ फैलाये।

हाथ कटकर गिर गये। वह डकारता हुआ औंधे मुँह गिर गया, आखिरी वार गर्दन पर हुआ। खून का फव्वारा रंजीत के हाँफते शरीर पर गिरा। मांडूक की गर्दन आधी कट चुकी थी। उसका खून से भीगा शरीर दो-तीन बार उछला और फिर शांत हो गया।

रंजीत ने गहरी साँस खींचकर तलवार एक तरफ फेंक दी।

उसने माथे पर आस्तीन घुमाई। रक्त के धब्बों के अलावा पसीना भी पोंछ दिया। सहसा वह बुरी तरह चौंधिया गया। वह जिसे भाग में खड़ा था, वहाँ हर तरफ चमचमाहट थी...

हीरे जवाहरात और सोने की गिन्नियाँ चमक रही थीं। दो-तीन लम्बी सोने की सिल भी पड़ी थीं।

उनके नेत्र विस्मय से फैल गये।

"खजाना...सिंघराज का खजाना...।" वह बड़बड़ाया।

उसने चौंककर विनोद की तरफ देखा। वह एक स्थान पर घुटनों के बल बैठ गया था। वह कुछ लम्बी मालायें हटा रहा था।

रंजीत लड़खड़ाते क़दमों से उसी तरफ अग्रसर हुआ।

विनोद के हाथों में एक सोने का गोल मर्तबान था। उसने मर्तबान से कोई तरल पदार्थ नीचे फेंक दिया और वह उठ खड़ा हुआ। अब दृश्य बिल्कुल साफ़ हो गया था।

हीरे जवाहरातों की मालाओं से लिटी एक देह उस स्थान पर पड़ी थी। उसी के निकट एक उल्लू मरा पड़ा था। वह देह अब भी स्याह लबादे में लिपटी थी। उस देह में अब जरा भी हरकत नहीं थी।

विनोद सूनी निगाहों से उस शरीर को निहार रहा था।

"यह.. क....क्या....?" रंजीत हकलाया।

"खत्म हो चुका...यह जो नीला तरल पदार्थ देख रहे हो न रंजीत..।" अजीब स्वर में विनोद बोला-"इस जड़ी बूटी को इस देश के महान पुजारी खातून ने बनाया था। उसका कथन था कि इसे पीने के बाद इंसान अजर-अमर हो जायेगा। खजाने के बारे में भी केवल वही जानता था। मैंने उसे समाप्त कर दिया था।उसके कुछ आदमी भी यहीं मारे गये। और मैं खजाने को यहीं गुप्त रूप से तहखाने में डालकर भाग निकला। इस मकान में कुछ गुप्त दरवाजे भी थे। उस जंग में सिंघराज के बड़े-बड़े सूरमा काम आये और कोई नहीं जान पाया कि सिंघराज का खजाना कहाँ गायब हो गया, अब इस लाश को तुम देख रहे हो।"

"यही वह इंसान है, जो इस खजाने के साथ अमृत को पाना चाहता था। सिंघराज के इतिहास में इसका जिक्र था।"

"आज इसने समय से पूर्व अमृत पी लिया है और इसके साथ उस उल्लू ने भी इसको पिया, जो एक ट्रेंड उल्लू था। यह उल्लू आठ भाषाओं का ज्ञानी था। यह इंसानों के स्वर में बोलना जानता था, यह दोनों अमर हो गये हैं। रंजीत.. अब इन्हें कोई नहीं मार सकता...।"

"यह क्या कह रहे हो?"

"इन्हें नहीं मालूम था कि इतने अरसे बाद वह अमृत जहर भी बन सकता है। जो इन्हें हमेशा के लिये मीठी नींद सुला देगा। यह अब नहीं है मगर इनकी गाथा मेरे जीवन के लिये अजर-अमर है। यह देखो..।"

विनोद ने हाथों में लिपटे कुछ कागज निकाले। उनमें से एक पर आड़ी-तिरछी लाइनें खिंची थी।

"यह खजाने का नक्शा है एक छोटे बक्स में मेरी देह के साथ इन्हें रखा गया था। और यह है मेरी वसीयत इसे आज तुम स्वयं पढ़ो।"

वह पीले रंग का मोटा-सा कागज था। बिल्कुल इस ढंग का कागज जैसे पुराने जमाने में

राजा महाराजाओं के पास फरमान लिखने के लिये रहते थे। अधिक पुराना हो जाने कारण कागज पीला पड़ गया था।

रंजीत ने धूल साफ की और उस इबारत को पढ़ने लगा जो उसमें लिखी थी।

मैं सम्राट मानिक आज जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा हूँ। मैंने इस जन्म में इतने पाप किये कि इसका प्रायश्चित करना असम्भव है। अपने शरीर के साथ इस वसीयत को इसलिए रखवाने का आदेश दे रहा हूँ, ताकि मेरी आत्मा हमेशा भटकती रहे और कुछ ऐसे कर्म करे जो इन पापों को धो सके। मेरी इच्छा है कि मैं इन पापों का प्रायश्चित कर सकूँ और पाप करने वालों का अंत कर सकूँ...मेरे जीवन को इस अय्याशी की सजा यह मिल सके कि अगले जन्म में हर नारी मेरी निगाहों में पवित्र बने। मैं चाहता हूँ कि अपना पूरा जीवन बिना विवाह किये व्यतीत कर सकूँ। ईश्वर मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार करो।

खजाने के इस नक्शे को इस वसीयत के साथ रखा जायए, ताकि कोई भी इंसान उसे न पा सके, जिसके लिये आज मेरे प्राण जा रहे हैं। सम्राट मानिक।

रंजीत ने गहरी साँस खींची।

अजीबों गरीब आश्चर्यों के बीच खड़ा था वह...।

□□□

सिंघराज की सभी बस्तियाँ धुएँ के कारण गहरी नींद सो गयीं थी। दोनों हैलीकॉप्टर फ्रेंटाशिया एवं फाइव टू की टीम के थे। थोड़ी कोशिश के बाद विनोद और रंजीत को खोज लिया गया।

केस के सभी भयानक अपराधी समाप्त हो चुके थे। संग्राम और जनपद भी काम आ गये।

उसी रात खजाने सहित दोनों हैलीकॉप्टर फ्रेंटाशिया के विशेष आग्रह पर भूतियालैंड के लिये रवाना हो गये। खजाने के अलावा खातून की आत्मा को भी एक ताबूत में रख दिया गया था।

विनोद उस खतरनाक इंसान को भारत ले जाना चाहता था। सभी लोग उस इंसान की शक्ल देखने के इच्छुक थे। मगर विनोद का कथन था कि उसका चुस्त काला लबादा वीरानगढ़ पहुँचने के बाद ही उतारा जायेगा।

भूतियालैंड फ्रेंटाशिया का सुन्दर देश था।

वहाँ दूसरे दिन एक विशाल सभा आयोजित हुई।

कासिम की दिमागी हालत भी ठीक हो गयीं थी। और हमीद एवं जेम्सन को भी होश आ गया था।

कमलकांत,मेकफ,जेम्सन, कासिम और हमीद को राजेश ने लम्बा चौड़ा भाषण अलग कमरे में सुनाया।

उसने मूर्खता की बहुत सी विशेषताएँ और लक्षण बताये। कमलकांत को सख्त हिदायत थी कि वह अब कपूर न लगाए अन्यथा इस बार तो बच गया। भारत लौटकर किसी दूसरे झमेले में फँस जायेगा।

मेकफ को शराब के अवगुण समझाये। बेचारे मेकफ को काफी समय से शराब नहीं

मिली थी, अतः उसकी खोपड़ी घूमने लगी थी।

उधर रीना रंजीत और रमेश को भूतियालैंड की सैर कराने ले गयीं थी और विनोद फ्रेंटाशिया से अलग कमरे में काफी देर तक केस की गुत्थियाँ सुलझाने में व्यस्त रहा।

राजेश वाले कमरे में ठहाकों का शोर शराबा था।

वह इस वक्त मेज के मध्य खड़ा कह रहा था।

तो भाइयों...यूँ हुआ सम्राट मानिक का अन्त..मगर मरते समय बवंडर अपने साथ गड़वा दिया। विनोद कुमार जो मानिक का दूसरा जन्म है। समझ में नहीं आता ऊपर वाले ने यह कैसा घपला किया। हाँ, तो मैं बता रहा था चक्कर सिंघराज का खजाना था। अतः सिंघराज के अलावा वीरानगढ़ के इतिहास में भी उसका जिक्र था। अतः बहुत से हरामी के पिल्ले उसे पाने की उत्सुक थे। जब कहीं सफलता नहीं मिली तब खातून की आत्मा ने फैसला किया कि विनोद को इन्हीं घटनाओं के बीच से गुजारा जाये ताकि उसे पूर्व जन्म की याद आने लगे।

उसका दिमाग पलट दिया गया। साथ में कासिम भाई भी पलटे गये।

"ही...ही...ही...।" कासिम हँसा-"अल्ला कसम! किया शानदार घपला था।"

"शटअप?" राजेश चीखा।

"क्यूँ..।"

"ज्यादा बोलोगे तो दिमाग फिर पलट दिया जायेगा। इस बार मुर्गी का अंडा बन जाओगे।"

"अरे बाप रे...।" कासिम बौखला गया। कमरे में पुनः ठहाके गूँज पड़े।

"यह खातून की आत्मा कौन है?" कमल ने पूछा।

"चिंता न करो उसे देखते ही तुम्हारा सबसे पहले हार्ट अटैक होगा। बाकी बातें फिर होंगी।"

शाम हुई भूतियालैंड में अपार जन समूह के बीच उस सभा की शुरुआत हुईं। वहाँ सभी लोग उपस्थित थे। हर तरफ रंगीनियाँ नजर आ रही थी। भूतियालैंड में लड़कियों की संख्या अधिक थी।

कासिम, जेम्सन और कमल के मुँह से कई बार लार निकल चुकी थी।

सर्व प्रथम फ्रेंटाशिया मंच पर प्रकट हुई। तालियों के गड़गड़ाहट ने उसका स्वागत किया। वह इस समय आकर्षक लिबास में थी।

"भूतियालैंड के निवासियों एवं मेरे अजीज मेहमानों यह मेरे लिये हर्ष की बात है कि इस देश की धरती पर बड़ी-बड़ी विभूतियों के चरण पड़े हैं और सभा में सबसे पहले मैं चाहती हूँ कि कर्नल विनोद सब लोगों की उस उत्सुकता हो दूर करे, जिसे जानने के लिये बेताबी बढ़ती जा रही है।"

विनोद मंच पर आया। तालियों की गड़गड़ाहट पुनः उत्पन्न हुई।

"मुझे फ्रेंटाशिया के इस परिवर्तन पर सचमुच गर्व अनुभव हो रहा है। दरअसल उसने इस केस में अपनी जान की परवाह किये बिना हमारी सहायता की। सर्वप्रथम इसके

उपलक्ष्य में मैं उसे एक शानदार उपहार देना नहीं भूलूँगा..।" विनोद ने सामने बैठे लोगों पर निगाह डाली।

"कैप्टन हमीद...कम ऑन....।"

कुछ न समझ कर हमीद उठ खड़ा हुआ। विनोद ने मंच के पास खड़े एक आदमी को संकेत किया, उस समय तक हमीद मंच पर पहुँच चुका था।

वह आदमी एक बड़े स्वर्ण जड़ित थाल में दो सजीले हार लेकर स्टेज पर पहुँचा।

विनोद ने दोनों हार उठाकर बारी-बारी फ्रेंटाशिया और हमीद को पकड़ा दिये। उस समय फ्रेंटाशिया की गर्दन झुकी हुई थी।

"आज की तारीख में आपके देश के नूर का हाथ मेरे वफादार साथी के हाथ में दिया जा रहा है। यह शादी बाद में सभी रस्मों सहित सम्पन्न होगी।"

तालियों का शोर इस बार बेहद ऊँचा था। कुछ ने तो सीटों से उछल-उछलकर नारे लगा दिये थे। वातावरण में हर्षित शोर उठता चला गया।

दोनों में एक दूसरे के गले में हार डाल दिये।

कुछ देर बाद शोर समाप्त हुआ हमीद और फ्रेंटाशिया एक ही सोफे पर बैठ गये थे।

"अब मैं आपको एक राजकुमारी का स्वप्न सुना रहा हूँ।" विनोद ने कहना शुरू किया, "सिंघराज में एक लड़की का जन्म हुआ, जो अक्सर अपने पूर्व जन्म की घटनाएँ बचपन से ही देखने लगीं। और तब उसे किसी ने बहुत छोटी उम्र में भारत पहुँचा दिया। वह सिंघराज की राजकुमारी थी। भारत में उसकी रक्षा गुप्त तौर से होती रही। वह अक्सर स्वप्न में अपनी डायरी में कुछ लिख जाया करती थी, एक बार उसने एक चित्र बनाया।

वह चित्र मेरा था। यह संयोग ही था कि मेरी शक्ल उस जन्म में भी कुछ ऐसी ही थी। डॉक्टर लियो एक अमेरिकन डॉक्टर था और वह भारत में पर्यटक के रूप में आया। वह इस रहस्य से परिचित हो गया। तब उसने राजकुमारी को,जो एक गरीब घराने में पल रही थी, अपनी पुत्री के समान अपना लिया और उसे विशिष्ट ज्ञान से शिक्षित कराने लगा।"

जब वह बड़ी हुई तो उसे पूर्व जन्म की वह घटनाएं याद आने लगीं और न जाने क्यों वह सम्राट मानिक से प्रतिशोध लेने के लिये उतावली हो उठी। डॉक्टर भी चाहता था किसी तरह सिंघराज का खजाना उसके हाथ लग जाये। इस बात से वह अनभिज्ञ था कि उस राजकुमारी की रक्षा एक ट्रेंड उल्लू कर रहा है और सिंघराज के कुछ इंसान भी गुप्त तौर से राजकुमारी की रक्षा कर रहे हैं। कहानी बढ़ती है तब दिग्राज ऑपरेशन का पहला कांड होता है। खजाने के नक्शे की तलाश बहुत से इंसान करते हैं, किंतु वह नहीं मिलता।

उससे पूर्व राजकुमारी द्वारा बनाये गये चित्र के अनुसार रंजीत उन लोगों की पकड़ में आ जाता है, क्योंकि हम दोनों की शक्ल एक थी। रंजीत की याददाश्त भुला दी जाती है और जब मैं उन लोगों के सामने आता हूँ, तब उसका विचार पलटता है। वह मुझे रहस्यमय ढंग से प्रेत महल ऑफ़ वीरानगढ़ पहुँचाते हैं। वहाँ रंजीत से मेरी हल्की मुठभेड़ होती है। उसके बाद वह लोग इसलिए भाग निकलते हैं, क्योंकि उन्होंने सुरक्षित अड्डा नहीं बनाया था।

कुछ क्षण के लिये विनोद मौन हो गया।

"संग्राम, जनपद एवं अन्य बहुत से इंसानों को वह रहस्यमय ताकत ब्लैकमेल कर रही थी। डॉक्टर लियो प्रत्यक्ष रूप में कार्य करता रहा। जब दिग्राज की तबाही मेरे हाथों हो जाती है। तब इसकी योजना का रुख पुनः बदल गया। मुझे केवल इसलिए समाप्त नहीं किया गया, क्योंकि वह जान चुके थे कि सम्राट मानिक का दूसरा जन्म रंजीत नहीं बल्कि मैं हूँ।

राजकुमारी अक्सर स्वप्न में मुझे देखती थी। प्रेतमहल ने पहुँचने के बाद मुझे भी कुछ पूर्व जन्म की घटनाएं याद आने लगी थी। फिलहाल राजकुमारी को खजाना हासिल करने के बाद मुझसे प्रतिशोध लेना था और सिंघराज के इंसान उसकी कदम-कदम पर सहायता करते रहे। प्रेतजाल और प्रेतमहल की रहस्यमय कार्यवाहियों के पीछे डॉक्टर लियो की वैज्ञानिक शक्ति थी। जिसका ज्ञान बहुत कुछ राजकुमारी को भी हो गया था। मेरी याददाश्त भुला दी गयी और तब वह कागजात दिग्राज पहुँच कर प्राप्त किये गये। उनका काम यहीं समाप्त हो गया था। अब उन्हें किसी की आवश्यकता नहीं थी। मेरे साथ जो लोग पनडुब्बियों द्वारा ले जाएं गये थे। वह सब मार्ग में ही बेहोश कर दिये गये और मैदान में सबको एक साथ मौत के घाट उतारने की योजना बनाई गयी। सिंघराज की राजकुमारी ने पिछले जन्म का हिसाब लेना था। वह स्वयं के अलावा सिंघराज के सभी इंसानों को खातून के अमृत द्वारा अजर-अमर करना चाहती थी। वह अमृत भी खजाने के साथ था। मगर इतने लम्बे अरसे बाद वह भयानक जहर बन चुका था। राजकुमारी "खातून की आत्मा" थी। जिसे इन टापुओं में बहुत से लोग देवता समझकर पूजते हैं। मैं इस खजाने को भारत सरकार के हवाले करूँगा और इसका श्रेय वैसे तो बहुत इंसानों पर हैं। मगर मैं जानता हूँ वह इंसान मेरी ही तरह से जीना पसन्द करते हैं। उसके माथे पर हजारों केसों के सेहरे चढ़े हैं। सबकी सहमति है कि इसका श्रेय एक गरीब युवक, जो कि मेरा भाई है, कुमार रंजीत को दिया जाये। मैं समझता हूँ भारत पहुँचकर उसे कोई बहुत बड़ी उपाधि अवश्य मिलेगी। वह अपनी रियासत में पहुँचकर मेरे पिता चन्द्रसिंह की आँख का तारा बनेगा।"

तालियाँ बज उठीं।

विनोद मंच पर खड़ा मुस्करा रहा था।

लगभग सभी के पास फ़्लैश लाइट कैमरे थे, अतः काफी देर से खड़ा-खड़ा वह चौंधिया गया था। किसी ने माँग की कि हम उस राजकुमारी का चेहरा देखना चाहते हैं। विनोद ने पीछे कुछ आदमियों को संकेत किया। दो आदमी स्ट्रेचर उठाकर मंच पर ले आये। स्ट्रेचेर में श्वेत चादर से ढका वह शव पड़ा था।

विनोद ने उसकी चादर हटा दी।

भीड़ उतावली होकर मंच की तरफ बढ़ने लगी।

"आप लोग कृपया एक पंक्ति में स्टेज से गुजरते जाएं।" विनोद ने माईक पर कहा-"वैसे में बता दूँ, यह राजकुमारी मीनाक्षी के अलावा कोई नहीं है। कुछ लोग इसे शीरी की शक्ल से भी जानते थे। सोना के रूप में इसने डाकू जनपद को ब्लैकमेल किया था। डॉक्टर लियो की वास्तविक लड़की डिक्की थी, जो संग्राम जैसे भयानक आदमी को काबू में रखती थी। आपको आश्चर्य होगा कि मैं इसे काफी दिन तक पत्नी के रूप में देखता रहा हूँ और अब

इसकी कहानी समाप्त हो गयी है।"

मीनाक्षी की देह अकड़ चुकी थी। उसके शरीर का अधिकाँश भाग ढीला पड़ चुका था। कई लोगों ने उस शक्ल को अपने कैमरे में कैद कर लिया।

समाप्त

किताबों की दुनिया में एक नये सूरज का उदय हो चुका है